शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 11 1 जून, 2017

(ज्येष्ठ-आषाढ़, विक्रम संवत् 2074)

संस्थापक
स्व. मुकुन्द राव कुलकर्णी

❖

संरक्षक
के.नरहरि

❖

परामर्श
डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
जगदीश प्रसाद सिंघल

❖

सम्पादक
सन्तोष पाण्डेय

❖

सह सम्पादक
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी ❑ भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल
प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय
डॉ. नाथू लाल सुमन
डॉ. एस.पी. सिंह
डॉ. ओमप्रकाश पारीक

❖

प्रबन्ध सम्पादक
महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक
बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी
बसन्त जिन्दल ❑ नौरंग सहाय भारतीय
कार्यालय प्रभारी
आलोक चतुर्वेदी : 9782873467

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राज.) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053
दूरभाष : 011-22914799

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/- वार्षिक शुल्क 200/-
आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में
प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का
सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शाकाहार - स्वस्थ जीवन का आधार ❑ विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

6

अनुसंधान बताते हैं कि पोषण में परिवर्तन कर बिना दवा डायबीटीज, हृदय रोग को ठीक कर जीर्णता की गति को धीमा कर लम्बी उम्र तक स्वस्थ रहा जा सकता है। महिलाओं के स्तन कैंसर का कारण हारमोन की मात्रा के बदलाव के कारण होता है जो पोषण से संबंधित माना गया है। दुग्ध पदार्थों के अधिक उपयोग से प्रोस्टेट का कैंसर होने की संभावना बढ़ती है। फलों व सब्जियों में रंग के रूप में पाए जाने वाले एन्टीऑक्सीडेन्टस् उम्र बढ़ने के साथ भी मस्तिष्क की क्षमता को बनाए रखते हैं। स्वस्थ भोजन की आदतों से पथरी नहीं होती। टाइप वन डाइबीटीज का सम्बंध शिशु अवस्था में ठीक से पोषण नहीं होना पाया गया है।

अनुक्रम

4. स्वस्थ जीवन-सुखी जीवन – सन्तोष पाण्डेय
8. व्यस्त रहें, मस्त रहें – बजरंग प्रसाद मजेजी
10. जीवन जीने की कला है : योग – बजरंगी सिंह
12. विद्यालयी शिक्षा में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा... – प्रकाश चन्द्र अग्रवाल
14. आरोग्य का मूल मंत्र-भारतीय चिकित्सा पद्धति – डॉ. रेखा भट्ट
16. स्वस्थ व्यक्ति - स्वस्थ समाज – डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल
21. Healthy existence : Healthy minds – Dr. TS Girishkumar
24. इंजीनीयरिंग की शिक्षा में क्रांति के संकेत – डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल
26. शिक्षा में सुधार का एजेंडा – जगमोहन सिंह राजपूत
28. बालमन : सीखने की प्रक्रिया – स्वतंत्र रिछारिया
30. शिक्षा अधिकार की उलटी चाल – अरविंद कुमार सिंह
32. महिला शिक्षा में रोड़े – ऋतु सारस्वत
34. शिक्षा और सिमटती नौकरियाँ – कौशलेंद्र प्रपन्न
36. साक्षात्कार – प्रकाश जावडेकर
39. The Economy at Three – Arvind Panagariya
41. ABRSM Demand Charter
44. शैक्षिक समाचार
45. गतिविधि

आनुवंशिकी रुपान्तरित बीज : खतरे का संकेत

❑ प्रो. मधुर मोहन रंगा

पर्यावरणीय खतरों से संबंधित रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में आनुवंशिकी रूपान्तरित भोजन से 5 प्रतिशत बच्चों में व 2 प्रतिशत वयस्कों में 'एलर्जी' बढ़ी है। (Exposure to Environmental Hazard, 2003) उपरोक्त विवरण यह सामान्य जन के स्वास्थ्य के लिए भविष्य के खतरे को इंगित करता है। खाद्य पदार्थों में विषैले तत्वों की मात्रा भी बढ़ती है, जिससे परिवर्धित होते जीव-जंतुओं व मानव की जैविक क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। रसायनिक खाद भूमि की उर्वरा शक्ति को समाप्त कर रही है, वातावरण को दूषित कर रहा है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भारतीय वैज्ञानिक कृषक परम्परा के अनुसार कृषि की जावे, प्राकृतिक खाद व बीजों का प्रयोग करें।

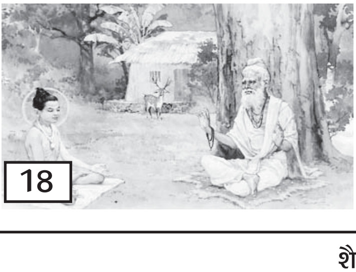

18

स्वस्थ जीवन-सुखी जीवन

❑ **सन्तोष पाण्डेय**

संपादकीय

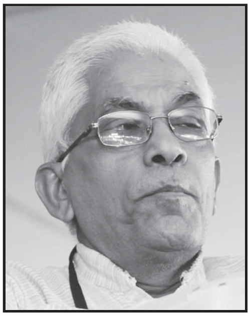

योग, शारीरिक व मानसिक क्रियाओं को अनुशासित व नियमित बनाने की विद्या है। नीरोगी काया के लिये नियमित व अनुशासित दिनचर्या आवश्यक है? शिक्षा जीवन को दिशा देने का मार्ग है। प्राथमिक शिक्षा काल से जीवन का निर्माण होने लगता है। संपूर्ण शिक्षा काल में मनुष्य को संस्कृति, आचार-विचार, नैतिक व शाश्वत जीवन मूल्यों व संस्कारों के निर्माण के साथ शारीरिक विकास का भी अवसर मिलता है। पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम शिक्षा में जितने आवश्यक हैं, शारीरिक क्षमता से युक्त होना भी उतना ही आवश्यक है। तब ही बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक विकास हो सकेगा। आज की किताबी शिक्षा के साथ शारीरिक शिक्षा को भी शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं व्यावहारिक रूप में भी बनाना होगा। शिक्षा में बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ शारीरिक क्षमता व कुशलता का मापन होना आवश्यक है, तब ही शिक्षा प्रक्रिया पूर्ण हो पायेगी।

आज संपूर्ण विश्व में सुखी व खुशहाल जीवन की चाहत बढ़ रही है। सुखी व खुशहाल जिन्दगी किसे कहा जाय इस पर पूर्वी व पश्चिमी संस्कृति में भिन्नता रही है। समय परिवर्तन के साथ ही सुखी व खुशहाल जीवन की अवधारणा भी बदलती रही है। सुखी जीवन के यद्यपि अनेक अवयव हैं, परन्तु इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वस्थ्य व नीरोगी शरीर को माना जाता है। पूर्वी संस्कृति की सर्वाधिक प्रतिनिधित्व वाली संस्कृति भारतीय संस्कृति है। भारत में अतिप्राचीन काल से ही अध्यात्म का प्रभाव रहा है। स्वस्थ, नीरोगी शरीर के साथ-साथ मानसिक, भावनात्मक व आत्मिक स्वास्थ्य पर भी बल दिया गया। पहला सुख नीरोगी काया माना गया तो स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मानस का वास हो सकता है। स्वस्थ तन स्वस्थ मन से ही सुखी जीवन का मार्ग निकलता है। स्वस्थ मन के लिये जीवन के मूल्यों का निर्माण, संस्कार, नियम-उपनियम, आदर्श व कठोर अनुशासन का पालन आवश्यक रहा, तो इन पर आचरण करते हुये आहार-विहार हुआ। जिसमें प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल व प्रकृति से सामंजस्य वाला भोजन स्वस्थ तन के लिये उचित माना गया। शारीरिक व्याधियों का उपचार भी प्राकृतिक औषधि गुणों से भरपूर जड़ी-बूटियों से किया गया। भोजन तंत्र को स्वस्थ रखने के लिये शारीरिक श्रम व व्यायाम,खेलकूद जैसी गतिविधियों पर बल दिया गया। मानसिक व आध्यात्मिक शक्ति को सुदृढ़ करने की दृष्टि से ऋषि-मुनियों ने कठोर तपस्या, मनन-चिन्तन व आत्मनियंत्रण का मार्ग अपनाया। जनसाधारण को शारीरिक श्रम से परिपूर्ण गतिविधियों एवं ऋषि-मुनियों द्वारा अपनाये गये कठोर तपस्या के सम्मिलित प्रयासों के रूप में योग विद्या का उदय हुआ। शरीर को स्वस्थ्य रखने में योग की भूमिका आज सर्वस्वीकार्य है। योग केवल शारीरिक व मानसिक क्रिया ही नहीं है वरन् इसमें अध्यात्म व शारीरिक रचना तन्त्र मजबूत आधार का कार्य करते हैं। योग क्रिया से बना स्वस्थ शरीर सुखी जीवन का आधार बन जाता है। भारत में स्वस्थ तन व मन के लिये प्रकृति के साथ सहयोग, सहअस्तित्व व सहजीवन को आवश्यक माना गया है।

पश्चिमी संस्कृति का आधार प्रकृति पर विजय, दोहन व नियंत्रण पर आधारित है। मनुष्य के जीवन को अधिक से अधिक आरामदायक व न्यूनतम श्रम के उपयोग वाला बनाने की दृष्टि से नये-नये उपाय खोजे गये व वैज्ञानिक आविष्कार हुये। यह क्रम आज भी जारी है। पश्चिमी संस्कृति में प्रकृति प्रदत्त पदार्थों का अधिकतम उपयोग पर बल दिया गया। अधिकतम सन्तुष्टि को सुखी जीवन का पर्याय माना गया। परिणाम सबके सामने है। संपूर्ण पश्चिमी संस्कृति आज अनेक शारीरिक व मानसिक व्याधियों से ग्रस्त है। अनुभव किया जा रहा है कि अधिकतम संतुष्टि व आरामदेह जीवन, जिन्दगी को सुखी नहीं बना सकता है। शारीरिक व्याधियों के साथ-साथ मानसिक व्याधियों में वृद्धि सामाजिक संरचना के लिये चुनौती बन रही है। आज मानसिक शांति व शारीरिक व्याधियों से मुक्ति के लिये पूर्वी संस्कृति की ओर देख रही है। दृष्टिकोण में बदलाव आया है। स्वस्थ शरीर के साथ-साथ मन को भी स्वस्थ बनाने के प्रयास हो रहे हैं। 'सुखी जीवन' की अवधारणा बदली है। सुखी जीवन के नये मानक 'हैप्पीनेस इंडेक्स' के रूप में अपनाये गये हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक मत से 'योग' की महत्ता को स्वीकारा है, विश्व में योग को व्यापक स्तर पर अपनाने का बल दिया है। यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि योग का धर्म से संबंध नहीं है। यह महत्त्वपूर्ण शारीरिक क्रियाओं का पुंज है, जो मानव शरीर को नीरोगी व स्वस्थ बनाने में सहायक होता है। अध्यात्म की ओर रुझान बढ़ता है।

भारत में सदियों की पराधीनता का सबसे बड़ा दुष्परिणाम घोर गरीबी के रूप में प्रकट हुआ है। गरीबी के कारण भूख व कुपोषण की भारी

समस्या विद्यमान है। भारत जैसी ही स्थिति लगभग सभी विकासशील देशों में विद्यमान है। शिक्षा भी अपर्याप्त सुविधाओं, मात्र पाठ्यक्रम व परीक्षा तक सीमित हो गयी। शिक्षा के कारण स्कूलों व कॉलेजों में खेलकूद अन्य शारीरिक गतिविधियाँ नाम मात्र को ही सम्पन्न हो पाती हैं। ग्रामीण परिवेश में बड़ा परिवर्तन है अनौपचारिक शिक्षा व ग्रामीण खेल-कूद, व्यायाम, अखाड़ों, परंपरागत कुश्ती प्रतियोगितायें, कबड्डी, बालीबॉल जैसे शारीरिक गतिविधि वाले खलों का पराभव हो चुका है। इनका सम्मिलित दुष्प्रभाव है शारीरिक दुर्बलता, अनियमित दिनचर्या तथा अनेकों अन्य दुष्प्रवृत्तियों के कारण स्वस्थ शरीर का अभाव व श्रम की कम उत्पादकता। विकासशील देशों में यदि भूख और कुपोषण के कारण नीरोगी काया का अभाव है, तो दूसरी ओर विकसित व संपन्न राष्ट्रों में नीरोगी काया का अभाव अधिक खाने व अतिपौष्टिक पदार्थों व माँसाहार के कारण मोटापे की भारी समस्या है। खानपान में असावधानी के कारण मोटापे के अतिरिक्त मधुमेह, हृदयरोग, किडनी व लिवर संबंधी रोगों ने अधिसंख्यक जनसंख्या को घेर रखा है। पश्चिमी जीवनशैली व बाजार आधारित आहार तंत्र इनकी जड़ में है। वास्तव में व्यक्ति जिन बीमारियों से बड़ी उम्र में ग्रसित होता था, दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि अब बच्चों से लेकर किसी भी आयु का व्यक्ति भी इनका शिकार होने लगा है। आहार व्यवस्था के साथ सामाजिक व्यवस्था भी इस प्रकार की बन रही है जहाँ मनुष्य स्वयं को अकेला व असुरक्षित अनुभव करता है। शारीरिक व्याधियों के साथ मानसिक व्याधियाँ भी जीवन का अभिन्न अंग बन रही है। तनाव व अवसाद का व्यापक प्रसार इसके साक्षी हैं। यह नीरोगी काया के अभाव के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के अभाव का द्योतक है। चिन्ता की बात तो यह है कि विकासशील देशों जिन में भारत भी सम्मिलित है में आर्थिक विकास के साथ-साथ पश्चिमी आधुनिक जीवनशैली भी तेजी से पनप रही है। फलतः इन देशों का निर्धन वर्ग भूख व कुपोषण से ग्रस्त है, तो दूसरी ओर सम्पन्न वर्ग विकसित देशों में व्याप्त शारीरिक व मानसिक, व्याधियों से ग्रस्त है। फलतः 'सुखी व खुशहाल' जीवन के लक्ष्य से समाज भटक रहा है।

भारतीय जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में चार पुरुषार्थों के आधार पर जीवन संचालित करने पर मनुष्य सुखी जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है। धर्मसंगत आचरण द्वारा अर्थ एवं काम की क्रियाओं संपन्न के ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मोक्ष का अभिप्राय: आत्मा के परमात्मा में विलीन होने से न होकर धर्मानुकूल अर्थात् सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक रूप से उचित आचरण कर जीवन व्यतीत करने से ही चिन्ताओं से मुक्ति प्राप्त कर सुखी व खुशहाल जीवन बिताया जा सकता है। धर्मानुकूल आचरण के लिये स्वस्थ्य शरीर संयमित व्यवहार, आत्मनियंत्रण, नियमित दिनचर्या व अनुशासन आवश्यक है। योग क्रियायें इन सभी के लिये उपयुक्त हैं। योग आज सभी सांस्कृतिक, भौगोलिक व अन्य बाधाओं को तोड़कर विश्व व्यापी बन रहा है। योग के माध्यम से शरीर के साथ-साथ मन को भी स्वस्थ व स्थिर बनाया जा सकता है।

योग, शारीरिक व मानसिक क्रियाओं को अनुशासित व नियमित बनाने की विद्या है। नीरोगी काया के लिये नियमित व अनुशासित दिनचर्या आवश्यक है? शिक्षा जीवन को दिशा देने का मार्ग है। प्राथमिक शिक्षा काल से जीवन का निर्माण होने लगता है। संपूर्ण शिक्षा काल में मनुष्य को संस्कृति, आचार-विचार, नैतिक व शाश्वत जीवन मूल्यों व संस्कारों के निर्माण के साथ शारीरिक विकास का भी अवसर मिलता है। पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम शिक्षा में जितने आवश्यक हैं, शारीरिक क्षमता से युक्त होना भी उतना ही आवश्यक है, तब ही बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक विकास हो सकेगा। आज की किताबी शिक्षा के साथ शारीरिक शिक्षा को भी शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं व्यावहारिक रूप में भी बनाना होगा। शिक्षा में बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ शारीरिक क्षमता व कुशलता का मापन होना आवश्यक है। तब ही शिक्षा प्रक्रिया पूर्ण हो पायेगी। शारीरिक क्षमता के विकास में आहार का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। खान-पान की आदतों को सांस्कृतिक व सामाजिक परंपरायें नियंत्रित व नियमित करती है। भारतीय कहावत है कि जैसा खाये अन्न वैसा रहे तन व मन। शाकाहार व माँसाहार मनुष्य में सात्विक, या तामसिक प्रवृत्तियों को बल देती है। आज विश्व भर में शाकाहारी भोजन को मनुष्य शरीर रचना व विकास के अनुकूल माना जाने लगा है। खान-पान की स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानने के बाद भी शाकाहार के पालन से ही स्वस्थ शरीर व मन को प्राप्त किया जा सकता है। शरीर केवल सुदृढ़ व क्षमतावान ही नहीं होना चाहिये वरन व रोगमुक्त भी होना चाहिये। रोगयुक्त शरीर घुन लगे हुये अनाज की भाँति होता है, जिसकी क्षमतायें तीव्रगति से ह्रास होता है। सुखी व खुशहाल जीवन के लिये चिन्ता व तनावों से मुक्त होना आवश्यक है, यह तब ही संभव है जब मनुष्य अनुशासित व संयमित जीवन जिये। जो भारतीय जीवन के चार पुरुषार्थों के अपनाने से संभव हो सकता है। योग अनुशासित व संयमित जीवन का माध्यम है। योग मनुष्य को शारीरिक क्षमता में अभिवृद्धि के साथ मानसिक स्वास्थ्य को पोषित करता है। योग हमारे जीवनचर्या का अभिन्न अंग होना चाहिये। योग के लिये भी नीरोगी काया अपेक्षित है। इसीलिये कहा गया है कि 'प्रथम सुख नीरोगी काया'। ❑

शाकाहार - स्वस्थ जीवन का आधार

❑ विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

अनुसंधान बताते हैं कि पोषण में परिवर्तन कर बिना दवा डायबीटीज, हृदय रोग को ठीक कर जीर्णता की गति को धीमा कर लम्बी उम्र तक स्वस्थ रहा जा सकता है। महिलाओं के स्तन कैंसर का कारण हारमोन की मात्रा के बदलाव के कारण होता है जो पोषण से संबंधित माना गया है। दुग्ध पदार्थों के अधिक उपयोग से प्रोस्टेट का कैंसर होने की संभावना बढ़ती है। फलों व सब्जियों में रंग के रूप में पाए जाने वाले एन्टीऑक्सीडेन्टस् उम्र बढ़ने के साथ भी मस्तिष्क की क्षमता को बनाए रखते हैं। स्वस्थ भोजन की आदतों से पथरी नहीं होती। टाइप वन डाइबीटीज का सम्बंध शिशु अवस्था में ठीक से पोषण नहीं होना पाया गया है। स्पष्ट है कि नीरोगी काया को सुख माना जावे तो शाकाहार (वानस्पतिक भोजन) सुख का आधार है।

भारत में प्राचीनकाल से ही शाकाहार पर जोर दिया गया है। लम्बे समय तक स्वस्थ रहने वाले ऋषि-मुनियों के भोजन के रूप में कंद-मूल-फल का उल्लेख बार-बार मिलता है। पश्चिम के भोजन में माँस, मछली, अण्डे के साथ दूध, मक्खन व तैयार भोजन का बोलबाला रहा है। पश्चिम के लोगों को अधिक विकसित मान कर उनका अंधानुकरण करते हुए भारतीयों के भोजन में जन्तुओं से प्राप्त सामग्री व तैयार भोजन की मात्रा बढ़ती गई है। आज पूरे विश्व में स्थिति बदलने लगी है। नए अनुसंधान यह सिद्ध करने में सफल रहे हैं कि शाकाहारी भोजन से ही स्वस्थ व लंबा जीवन जीया जा सकता है। स्वस्थ रहना अधिगम का प्रमुख घटक होना चाहिए। इतिहास इस बात का गवाह कि स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाता है।

फास्ट फूड का युग

आज के युग को फास्ट फूड का युग कहें तो अनुचित नहीं होगा। बड़ी-बड़ी विश्वस्तरीय कंपनियाँ फास्ट फूड के व्यापार में लगी हुई हैं। इनका प्रचार तन्त्र युवा पीढ़ी को कुछ भी खिलाने व पिलाने में समर्थ है। विकसित देशों के बच्चे तो वनस्पति उत्पाद के रूप में बर्गर पर लगाए जाने वाले केचअप को ही जानते हैं। बच्चों के लिए छापी जाने वाली 'नेशनल ज्योग्राफिक किड्स' जैसी पत्रिकाएँ मेकडोनाल्ड जैसी कंपनियों के आकर्षक विज्ञापनों से भरी होती हैं। टेलीविजन कार्यक्रमों के बीच भी ऐसे ही विज्ञापनों का बाहुल्य होता है। वैज्ञानिकों व पोषण विशेषज्ञों के अनुसार हम आज विषाक्त भोजन के युग में जी रहे हैं। हम नहीं जानते कि जिस वस्तु को हम खाद्य पदार्थ के रूप में काम ले रहें उसमें कितने विषैले पदार्थ उपस्थित हैं। भोजन के विषय में लोगों की रुचि को देखते हुए पोषण पर बहुत अधिक साहित्य रचा जा रहा है। साप्ताहिक व मासिक पत्र पत्रिकाएँ पोषण पर निरन्तर सामग्री प्रकाशित करती रहती है फिर भी पोषण-अज्ञानता का शिकार होने वालों की कमी नहीं है।

दी चायना स्टडी

कोलिन कैम्पबेल व थोमस कैम्पबेल द्वारा अमेरिका के लोगों को संबोधित कर लिखी गई 'दी चायना स्टडी' को पोषण व स्वास्थ्य पर लिखी गई विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक स्वीकार किया गया है। पुस्तक में चीन के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह, व जीर्णता के रोगों से बहुत कम ग्रसित होने, बड़ी आयु तक एकदम स्वस्थ रहने के राज को अनुसंधान द्वारा उजागर किया गया है। कैम्पबेल के अनुसंधान के परिणाम बताते हैं कि वनस्पतियों से प्राप्त भोजन ही मानव का सही भोजन है। वनस्पतियों से प्राप्त भोजन से स्वस्थ रहा जा सकता है तथा बीमार का उपचार

भी किया जा सकता है। जो आपके भोजन में होगा वही आपके रक्त में आएगा। जो रक्त में आएगा वही तो शरीर बनाएगा।

कैम्पबेल की पुस्तक के नए संस्करण निकलना यह सिद्ध करता है कि बीसवीं सदी में 40 वर्ष तक किए गए अनुसंधान 21 वीं सदी में भी महत्त्वपूर्ण हैं। इस पुस्तक के लेखन का उदेश्य अमेरिका के लोगों को स्वस्थ रहने को प्रेरित करने साथ-साथ विश्व की भावी पीढ़ी को स्वस्थता का संदेश देना है। आज जब बचपन मुटाने के साथ ही मधुमेह-हृदय रोग आदि का शिकार होने लगा है, इस संदेश का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। बाजार में तैयार मिलने वाले भोजन में संश्लेषित रसायनों का प्रयोग किया जाता है जो कैंसर का कारण बनते हैं। कैम्पबेल का मानना है कि अधिकाँश भाग जटिल कार्बोहाइड्रेट के रूप में लेने का अर्थ भोजन में प्राकृतिक फल, सब्जी व अनाजों की बहुलता होना है। इससे शरीर को कई लाभ होते हैं, पाचन क्रिया ठीक चलने के साथ ही विटामिन व खनिज भी पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं।

आनुवंशिकता बहुत महत्त्वपूर्ण

भोजन के विषय में अपने आपको आधुनिक समझने से पूर्व यह जानना उचित होगा कि भोजन को पचाने व उसका शरीर में उपयोग करने में हमारी आनुवंशिकता बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः हमारे भोजन की आदतें हमारे पूर्वजों से अधिक भिन्न नहीं होनी चाहिए। दवा की तरह खाए जाने वाले पोषक तत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामिन या खनिज स्वस्थ रहने में कोई मदद नहीं करते। लम्बी अवधि तक इनका उपयोग हानि ही करता हैं। दवाएँ व शल्यक्रिया रोगों से बचाने के बजाय स्वयं रोग सिद्ध हो रही है। चिकित्सा में होने वाली भूलें बड़ी संख्या में लोगों की समय पूर्व मौत का कारण बनती है। डॉक्टर ठीक से नहीं जानते कि आपको स्वस्थ करने के लिए क्या किया जाना है? अनेक डॉक्टर आपको ठीक करने में रुचि नहीं रख कर अपना नियमित ग्राहक बना कर रखने का प्रयास करने लगे हैं। वे रोगी के पोषण व आदतों में बदलाव कर ठीक होने की प्रेरणा देने की बजाय जीवन भर दवा खिलाने में विश्वास करने लगे हैं। अमेरिकन मेडीकल ऐसोसिएशन के सदस्य, रिवर्सिंग हार्ट डीजीज, दी हार्ट सर्जरी ट्रेप आदि पुस्तकों के लेखक जुलियन व्हीटाकर ने आँकड़ों के आधार पर बताया है कि बाई पास सर्जरी कराने वालों व नहीं कराने वालों, दोनों में, मृत्युदर 4 प्रतिशत के लगभाग पाई गई है। स्पष्ट है कि अनावश्यक सर्जरी का कोई अतिरिक्त लाभ नहीं मिलता। आगे जाकर हानि होने की संभावना अधिक रहती है।

पोषण वैकल्पिक चिकित्सा

स्वस्थ रहने में पोषण के महत्त्व कोलिन कैम्पबेल का निजी विचार नहीं होकर लगभग 750 अनुसंधान पत्रों से पर आधारित निष्कर्ष है। अनुसंधान बतलाते हैं कि पोषण में परिवर्तन कर बिना दवा डायबीटीज, हृदय रोग को ठीक कर जीर्णता की गति को धीमा कर लम्बी उम्र तक स्वस्थ रहा जा सकता है। महिलाओं के स्तन कैंसर का कारण हारमोन की मात्रा के बदलाव के कारण होता है जो पोषण से संबंधित माना गया है। दुग्ध पदार्थों के अधिक उपयोग से प्रोस्टेट का कैंसर होने की संभावना बढ़ती है। फलों व सब्जियों में रंग के रूप में पाए जाने वाले एन्टीऑक्सीडेन्टस् उम्र बढ़ने के साथ भी मस्तिष्क की क्षमता को बनाए रखते हैं। स्वस्थ भोजन की आदतों से पथरी नहीं होती। टाइप वन डाइबीटीज का सम्बंध शिशु अवस्था में ठीक से पोषण नहीं होना पाया गया है। स्पष्ट है कि नीरोगी काया को सुख माना जावे तो शाकाहार (वानस्पतिक भोजन) सुख का आधार है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि कोई किसी को कुछ नहीं पढ़ा सकता। इस आलेख का ध्येय भी किसी को कोई उपदेश देना नहीं है। आलेख में मात्र तथ्यों को उजागर किया गया है। आपको ये तथ्य उपयोगी व विश्वसनीय लगे तो अवश्य अपनाएँ। अण्डे, माँस, मक्खन युक्त नाश्ता करके कोलेस्ट्रोल कम करने की दवा खाना बुद्धिमानी तो नहीं है। गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि

आयु: ,सत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धना:।
रस्या:स्निग्धा:स्थिरा हृद्याआहारा:सात्त्विकप्रिया:।।

सात्विक लोग आयु, बल, आरोग्य, सुख व प्रीति बढ़ाने वाला भोजन करते हैं। भोजन के विषय में गीता में कही बात वैज्ञानिक दृष्टि से आज भी सटीक है। भोजन को लेकर किसी का अंधानुकरण करने की आवश्यकता नहीं है। अपने स्वास्थ्य की अनुकूलता व मन की प्रसन्नता का भी ध्यान रखना चाहिए। ❑

(विज्ञान एवं बाल विषयक लेखक)

व्यस्त रहें, मस्त रहें

❑ **बजरंग प्रसाद मजेजी**

राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी मानवीय शक्ति है, जो अपनी बुद्धिमता से सब प्रकार की समस्याओं का निराकरण कर लेती हैं। मनुष्य की बुद्धि को मन प्रभावित करता है। उसके सारे कार्यकलाप मन ही करता है। मन विचार-चिन्तन कर किसी निर्णय पर पहुँचता है, वह उसकी बुद्धि कहलाती है। इसीलिए स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन की कल्पना की गई है। मन प्रसन्न हो तो तन स्वस्थ सुखी रहता है। इसके लिए उचित आहार-विहार और श्रेष्ठ आचार-विचार जरूरी है जो स्वस्थ व्यक्ति की धरोहर है। यदि वह स्वस्थ नहीं है तो फिर स्वस्थ समाज की कल्पना ही बेकार हो जाएगी। वर्तमान में मानव का रहन सहन का तरीका दिन प्रतिदिन बदलता-बिगड़ता जा रहा है। जो जीवन शैली वर्षों पूर्व तक थी, वह अब नहीं रही। भागदौड़, प्रतियोगिता, अधिक पैसे कमाने की चाह, स्पर्द्धा, सुख-साधनों को एकत्र करने की इच्छा ने जीने के तौर-तरीकों में परिवर्तन ला दिया है। आजकल खान-पान, रहन-सहन और कार्यशैली ने अधिकांश लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर दिया है। जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अस्त-व्यस्त जीवन शैली ने पाचन शक्ति के तरीके, तले हुए, फास्ट फूड, पिज्जा खाने में आनन्द लेना माना जाने लगा है। कई प्रकार के बोतल बन्द पेय पदार्थ बाजार में आ गए हैं जो मानव शरीर के लिए हानिकारक हैं। बाजार में जगह-जगह दुकानों में तले हुए लुभावने पैकेट के सामान बालकों को आकर्षित कर रहे हैं। इन्हें खरीदने और खाने का शौक बढ़ता जा रहा है। ये बालक की स्वाभाविक भूख मिटा देते हैं, पाचन शक्ति पर असर डालते हैं। 'पहला सुख निरोगी काया' वाक्य को विस्मृत कर क्षणिक आनन्द के लिए स्वास्थ्य को खराब कर रहे हैं। भागमभाग के युग में मनुष्य बावला सा हो गया है। वह पद, प्रतिष्ठा और धन की चाहत में पूरे दिन जूझता रहता है, इस कारण उसकी दिनचर्या बदलती जा रही है। Health is Welth का अर्थ जानते हुए भी प्राय: मनुष्य स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतता है, जिसके कारण अनेकानेक रोग से ग्रसित होकर, चिकित्सकों के भरोसे जीवन की गाड़ी चला रहा है।

तच्चं नित्यं प्रमुच्चीत स्वास्थ्यमेनानुवर्तते
अजातानां विकाराणामनुत्पत्तिकरं च यत्।।

(चरक संहिता)

अर्थात् ऐसे आहार-द्रव्यों का ही नित्य सेवन करना चाहिए, जिससे स्वास्थ्य का अनुवर्तन (रख रखाव-मेन्टीनेन्स) होता रहे, स्वास्थ्य उत्तम बना रहे और जो रोग उत्पन्न नहीं हुए उनकी उत्पत्ति न हो सके। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और सामान्य बने रहने के लिए आवश्यक है कि हम सम्यक विचार, सम्यक चेष्टा, सम्यक आचरण, सम्यक आहार, सम्यक श्रम करें तभी हमारा शरीर स्वस्थ रह सकेगा।

मैं हुआ बरबाद खुद अपने शौक से,
आप पर तो मुफ्त का इल्जाम है,
बागबां ने खुद जलाया है चमन,
बिजलियों का नाम क्यों बदनाम है।

अनियमित दिनचर्या, खान-पान की कमी, शराब तम्बाकू नशे की लत, अपौष्टिक आहार के कारण मनुष्यों का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। गैर जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति, शरीर के प्रति लापरवाही, मानसिक तनाव रात में देर तक

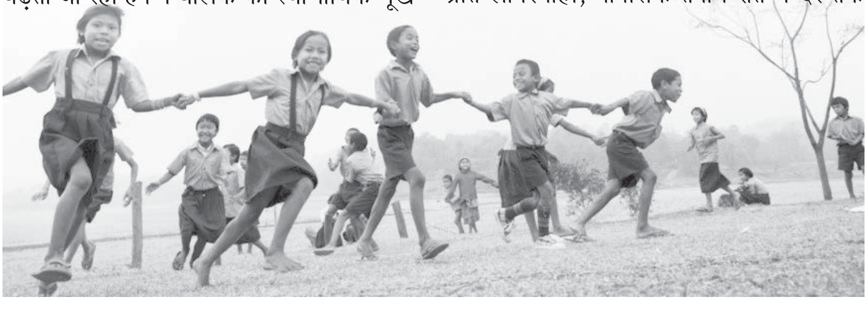

मनुष्य की बुद्धि को मन प्रभावित करता है। उसके सारे कार्यकलाप मन ही करता है। मन विचार-चिन्तन कर किसी निर्णय पर पहुँचता है, वह उसकी बुद्धि कहलाती है। इसीलिए स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन की कल्पना की गई है। मन प्रसन्न हो तो तन स्वस्थ सुखी रहता है। इसके लिए उचित आहार-विहार और श्रेष्ठ आचार-विचार जरूरी है जो स्वस्थ व्यक्ति की धरोहर है। यदि वह स्वस्थ नहीं है तो फिर स्वस्थ समाज की कल्पना ही बेकार हो जाएगी। वर्तमान में मानव का रहन सहन का तरीका दिन प्रतिदिन बदलता-बिगड़ता जा रहा है। जो जीवन शैली वर्षों पूर्व तक थी, वह अब नहीं रही। भागदौड़, प्रतियोगिता, अधिक पैसे कमाने की चाह, स्पर्द्धा, सुख-साधनों को एकत्र करने की इच्छा ने जीने के तौर-तरीकों में परिवर्तन ला दिया है।

जागना, सुबह देर से उठना जैसे कई कारण हैं, जिनसे कई प्रकार के रोग हो रहे हैं।

सर्वमन्यत् परित्यज्य शरीर मनु पालयेत्
तद्भावाद् हि भावानां सर्वाभाव: शरीरिणाम्

स्वास्थ्य ठीक रखने की आवश्यकता के लिए सभी सांसारिक कार्यों को छोड़कर पहले शरीर को स्वस्थ रखने के नियमों का पालन करना चाहिए क्योंकि शरीर का अभाव (समाप्त) हो जाने पर सभी वस्तुओं का अभाव हो जाता है।

स्वास्थ्य की कोई परिभाषा नहीं होती, बीमारी की परिभाषा हो सकती है।

सब रोग छूट जाए तो शेष रह जाता है, उसी का नाम स्वास्थ्य है।

व्यस्त रहें, मस्त रहें- तन्दुरुस्त रहें

शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए हमारे शरीर में एक प्रतिरोधी तंत्र सतत् सक्रिय रहता है, जो सदैव बाहरी संक्रमण से शरीर की रक्षा करता है। रोग प्रतिरोधक तंत्र (Immune System) हमारे शरीर में जितना अच्छा कार्य करेगा हमारी रोग रोकने की क्षमता उतनी ही बलवान रहेगी। जब विभिन्न प्रकार के रोगाणु या विजातीय तत्त्व शरीर में प्रवेश करते हैं तो उनके विरुद्ध रोग क्षमता तन्त्र विशेष प्रकार का प्रोटीन तैयार करता है जिसे एन्टीबॉडीज कहते हैं, जो सम्बन्धित रोगाणु को शरीर में पुन: प्रवेश करने पर उन्हें तुरन्त नष्ट कर देते हैं और रोगोत्पत्ति नहीं होती है। मनुष्य में रोग क्षमता कम होने के कई कारण हैं जैसे- वंशानुगत प्रभाव, अवसाद व तनाव, आहार, शारीरिक श्रम, बिना चिकित्सकीय परामर्श के ली गई औषधियाँ, व्यसन, शारीरिक अवस्था आदि। रोग की जानकारी होने पर तुरन्त उपाय किये जाने चाहिए। रोग छोटा हो या बड़ा उसकी चिकित्सा करनी चाहिए क्योंकि रोग- अग्नि, शास्त्र और विष के समान होता है। इसीलिए कहा गया है कि- रोग, शत्रु और कर्ज जितनी जल्दी हो समाप्त कर दिए जाने चाहिए। जितनी देर होगी, रोग उतना ही बलवान होता जाएगा।

प्राज्ञो रोगे समुत्पन्ने वाध्ये नाभ्यन्तरेण वा।
कर्मणा लभ्तेशर्म शस्त्रोप क्रमणेन वा।।

(चरकसंहिता सूत्र) अर्थात् बुद्धिमान को चाहिए कि रोग उत्पन्न होने पर तुरन्त बाहरी, भीतरी अथवा चिकित्सा जो भी उपयुक्त हो, उसके द्वारा जीव रोग मुक्त होने का प्रयास करे। जो ऐसा नहीं करते वे मूर्ख हैं। वे तब तक रोगमुक्त होने की चेष्टा नहीं करते जब तक वे असाध्य नहीं हो जाते। मनुष्य को चाहिए कि रोग मुक्त होने पर भी उचित आहार, स्वास्थ्य नियम का पालन करें ताकि रोग की पुनरावृत्ति न हो। पीलिया, टाइफाइड, चिकनगुनिया ऐसे ही रोग हैं, असावधानी रखने पर पुनरावृत्ति हो सकती है।

शतं वोऽम्य धामानि सहस्त्रयुत वो रूह:
अधाशत क्रत्वो युयमिमं मेऽअगदंकृत।।
(यजुर्वेद)

मनुष्यों को चाहिए कि वे उचित पथ्य आहार नियमों का विधिवत पालन कर शरीर को रोग रहित रखे अर्थात् स्वास्थ्य की रक्षा करे क्योंकि स्वस्थ रहे बिना धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थ को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

तस्या शितायादाहाराद्बलं वर्णश्च वर्धते।
यस्यर्तुसात्मयं विदितं चेष्टाहार व्यपाश्रयम्।।
(चरक सूत्र 6-3)

अर्थात् जो व्यक्ति यह जानता है कि किस ऋतु में किस प्रकार का आहार-विहार अनुकूल पड़ता है तथा तदनुसार ही उपभोग करता है उसके संतुलित आहार करने से बल और वर्ण की वृद्धि होती है। व्यक्ति आलस छोड़कर, कार्य करने में व्यस्त रहे, तनावमुक्त होकर, परिवार के साथ उपलब्ध साधन का उपभोग कर स्वस्थ रहने का प्रयत्न करना चाहिए। पर्याप्त व्यायाम, संतुलित आहार, शारीरिक क्षमतानुसार श्रम, पर्याप्त निद्रा लेना अनेक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

निद्रायतं सुखं दु:खे पुष्टि कार्श्यं बलाबलम्।
वृषता क्लीवता ज्ञानम्, ज्ञानं जीवित न च।।
(चरक सूत्र 21-36)

अर्थात् सुखपूर्वक पर्याप्त नींद लेने से शरीर आरोग्य, शरीर को पोषण, बल की वृद्धि, शुक्र की वृद्धि, ज्ञानेन्द्रियों को उचित रूप में प्रवृत्ति और आयु नियत रूप से यथाकाल बने रहती है। यदि पर्याप्त नींद न मिले तो शरीर में रोग, दुर्बलता, बल की हानि, नपुसंकता आदि अनेक प्रकार के भयंकर रोग हो सकते हैं।

आज के समय में विद्यार्थियों के लिए कुछ विशेष बातें जिनको व्यवहार में लाकर वो स्वस्थ रह सकें -

- जल सेवन प्रचुर मात्रा में करें। प्रात: उठते ही गुनगुने पानी में नीबू निचोड़कर पीएं।
- कब्ज न रहे इसके लिए रात्रि में दूध या जल के साथ त्रिफला या गुलकंद का सेवन करें।
- मौसमी फल, हरी सब्जियाँ, कच्चा एवं अंकुरित आहार भोजन में समावेश करें।
- प्रात:काल खुली हवा में टहलने का नियम बना लें।
- कम खाना, गम खाना और ठीक समय पर सोना, प्रात: जल्दी उठना चाहिए।
- हमेशा प्रसन्नचित्त रहें, तनाव से बचना चाहिए, संतुलित आहार लें। नियमित दिनचर्या एवं योगाभ्यास करना चाहिए।
- जब तक ठीक प्रकार से भूख न लगे, भोजन न करें, भूख लगे तो उपेक्षा न करें।
- बुरे कर्मों का सर्वथा त्याग करना व परोपकार की धारणा रखना।
- बुद्धिमान व्यक्ति को 13 वेगों के आने पर रोकना नहीं चाहिए, वे हैं- मूत्र, मल, शुक्र, अपानवायु, वमन, छींक, डकार, जम्हाई, भूख, प्यास, आँसू, निद्रा, श्रम से उत्पन्न श्वास वेग को नहीं रोकना चाहिए। ❑

(स्वतन्त्र लेखक, विचारक एवं शिक्षा शास्त्री)

जीवन जीने की कला है : योग

❑ **बजरंगी सिंह**

योग एक विज्ञान है, योग-धर्म, आस्था और अंधविश्वास से परे है। योग प्रायोगिक विज्ञान है। योग, जीवन जीने की कला है। योग पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। आचार्य रजनीश ने कहा था- दरअसल धर्म लोगों को एक खूँटे में बाँधता है और योग सभी तरह से मुक्ति का मार्ग बनाता है।

भीतरी विज्ञान की दुनिया के आइंस्टीन है पतंजलि। जैसे शिखरों में हिमालय श्रेष्ठ है वैसे ही समस्त दर्शनों, विधियों, नीतियों, नियमों, धर्मों और व्यवस्थाओं में योग श्रेष्ठ है। प्राचीन काल से ही योग विद्या का स्रोत रहा है। यहाँ परम तपस्वी महात्मा मनीषियों ने इस विद्या का प्रकाश मानव कल्याण के लिए ही किया।

वेदों एवं उपनिषदों में योग का वर्णन मिलता है। पतंजलि योग दर्शन में औपनिषद योग का वर्णन मिलता है। स्मृतियों में भी योग की महत्ता स्वीकार की गई है।

रामायण और महाभारत में योग के अंग-यम-नियम-प्रणायाम आदि का उल्लेख है। श्रीमद् भागवत् गीता में तो योग की सुन्दर प्रतिष्ठा ही की गई है। श्रीमद्भागवत पुराण में भक्ति योग, सांख्य योग एवं अष्टांग योग साधना का विस्तृत उल्लेख है। माता देवद्धति से कपिल मुनि कहते हैं- शास्त्रानुसार स्वधर्माचरण, शास्त्र विरुद्ध आचरण का त्याग, प्रारब्धानुसार जो प्राप्त है उसी से संतुष्ट रहना, विषयों से विरक्ति, सत्य, अस्तेय, असंग्रह, ब्रह्मचर्य का पालन, वाणी का संयम, आसनों का अभ्यास और प्रणायाम के द्वारा श्वास को जीतना, इन्द्रियों को मन के द्वारा विषयों से हटाकर अपने हृदय में ले जाना योग का मुख्य सोपान है।

ध्यान की अंतिम परिणति समाधि में होती है और समाधि की अवस्था तत्व का पूर्ण और सूक्ष्म ज्ञान होता है। जीवन के महानतम लक्ष्यों की सिद्धि में केवल मानव शरीर ही सक्षम है। मोक्ष प्राप्ति की कामना भी मनुष्य ही कर सकता है। योग के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। ऐसा कहा जाता है कि जिन तत्वों से ब्रह्मांड का निर्माण हुआ है, उन्हीं से हमारा शरीर भी बना है। अर्थात् जो हमारे भीतर है, वही विराट रूप संसार में है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है। कि आत्मतत्व को जान लेने पर समस्त सृष्टि एवं परमात्म तत्व का सूक्ष्म और पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

भारत ने दुनिया को धर्म, आध्यात्मिक और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हमेशा महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है। यह सही है कि आर्थिक प्रगति के दौर में प्रगतिशील समाज ने भौतिक रूप से काफी तरक्की कर ली है, लेकिन उसके मन-मस्तिष्क में अनेक विकृतियाँ पैदा हो रही है। ऐसे में विदेशों में योग के प्रति आकर्षण इतना बढ़ गया है कि आज के दौर में जहाँ स्वामी रामदेव ने योग को विस्तार दिया, वहीं हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी योग को उड़ान देने में सफल साबित हो रहे हैं। उसी का परिणाम है आज योग विश्व में स्थापित हो चुका है। दुर्भाग्य है कि आज

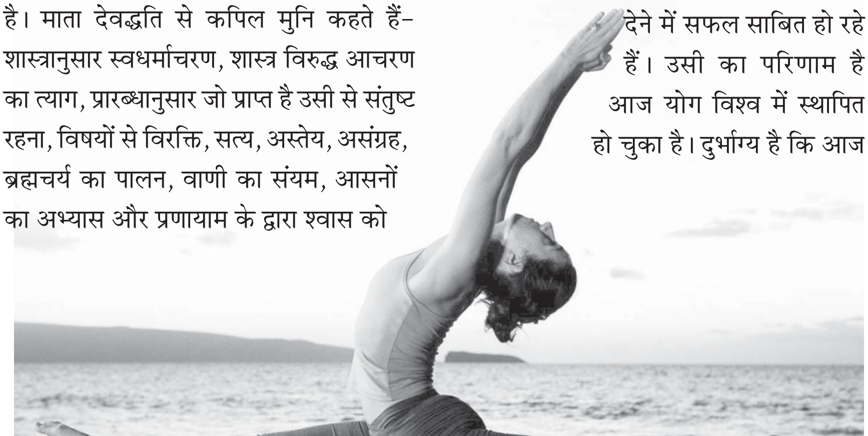

आज के आधुनिक युग में योग का महत्त्व और भी बढ़ गया है। क्योंकि हमारी व्यस्तता और भाग दौड़ भरी जिन्दगी ने हमें रोगी बना दिया है। आज हम देख रहे हैं कि मधुमेह, उच्च रक्तचाप, सिर दर्द आदि जैसे रोगों ने हमारे शरीर में घर बना लिये हैं। आज युवाओं में कम मेहनत से अधिक पाने की होड़ ने उन्हें अविवेकी बना दिया है। उसी के चलते उम्र से पहले बुढ़ापा घेर रहा है। हर व्यक्ति को आगे बढ़ना है। ऊँचाइयों को छूना है। वैभवी बनना है। ये सब पाने के लिए उसे अतिरिक्त उर्जा चाहिए और इसका एक ही सशक्त मार्ग है योग/प्रणायाम। योग एक बहुत महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसको अपना कर हम बिना पैसे खर्च किए अपने आप को नीरोग रख सकते हैं।

भी ऐसे लोग हैं, जो योग को हिन्दू धर्म का हिस्सा बता कर विरोध कर रहे हैं।

आज अमेरिका के वाशिंगटन, न्यूयार्क जैसे बड़े शहरों में योग की कक्षाएँ लगती हैं। वहाँ के प्राथमिक स्कूलों में योग सिखाए जाने का विरोध करते हुए छात्रों के अभिभावकों की ओर से दायर एक मुकदमें पर सेनडियागो की तीन सदस्यीय अपीलीय अदालत ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाया कि विद्यालय में योग सिखाए जाने से हिन्दुत्व का समर्थन नहीं हो रहा है और न ही छात्रों की धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन होता है। अदालत ने उनके किसी तर्क को नहीं माना। अष्टांग योग तो पतंजलि ने ईश्वर तक, सत्य तक, मोक्ष तक तथा पूर्ण स्वास्थ्य तक पहुँचाने की आठ सीढ़ियाँ निर्मित की।

योग तो परमशक्ति तक बढ़ने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। योग बहुत वृहत्तर विषय है- ज्ञान योग, धर्मयोग, कर्मयोग, हठयोग। इस सब को छोड़कर राजयोग है। यदि पतंजलि का योग है। शरीर बदलेगा तो मन बदलेगा, मन बदलेगा को बुद्धि बदलेगी, बुद्धि बदलेगी तो आत्मा स्वत: ही स्वस्थ हो जाएगी। आत्मा तो स्वस्थ है ही। दुनिया के सारे धर्म चित्त पर ही कब्जा करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने तरह-तरह के नियम, क्रिया कांड, ईश्वर के प्रति भय को उत्पन्न कर लोगों को अपने धर्म से जकड़े रखा है।

योग से अनेक बीमारियों का उपचार किया जा सकता है। योग कहता है कि शरीर और मन का दमन नहीं करो बल्कि इसका रूपांतर करो क्योंकि रूपांतर से जीवन में बदलाव आयेंगे। यौगिक क्रियाओं से सब कुछ बदला जा सकता है। अभी भी भारत ने पूरे विश्व को यह समझाने की जरूरत है कि योग, व्यायाम नहीं है। योग, विज्ञान का एक आयाम है। मानव अपने जीवन की श्रेष्ठता के चरम पर योग के माध्यम से ही पहुँच सकता है।

योग कला से हमें कई प्रकार के लाभ है। योग स्वस्थ्य जीवन के लिए संजीवनी है। यह मन और मस्तिष्क दोनों को स्थिर रखता है। योग से केवल शारीरिक फायदे नहीं बल्कि यह हमें तनाव रहित जीवन जीना भी सिखाता है। योग जब इतना लाभप्रद है तो हम अपने को इसकी शिक्षा आज तक क्यों नहीं देते। शायद हम यह समझते रहे कि योग केवल संत-महात्माओं के लिए ही है जबकि योग पूरी मानव जाति के लिए आवश्यक है। खासतौर पर छात्र जीवन के लिए तो बहुत आवश्यक है। प्रसन्नता की बात है कि केन्द्र सरकार ने इसके महत्त्व को समझा और इसीलिए स्कूली पाठ्यक्रम में योग को शामिल करने की दिशा में सरकार काफी सक्रिय है। आज कल यह देखा जा रहा हैं कि छात्रों में अध्ययन के प्रति रुझान कम होता जा रहा है। इसके पीछे वजह हो सकती है। उनका शरीर स्वस्थ न हो। हम जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही ज्ञान का निवास है इसलिए और भी जरूरी हो जाता है कि हम स्कूलों में बच्चों को योग की प्रारम्भिक शिक्षा शुरू करे ताकि स्वस्थ और ज्ञानवान छात्र स्कूलों से निकल सकें। यहाँ यह गौर करने की जरूरत है कि स्कूली पाठ्यक्रम में योग शामिल तो किया जाय किन्तु उसे छात्रों के लिए उबाऊ और पीड़ादायक न बनने दें, बल्कि उनमें योग के प्रति ललक और आकर्षण पैदा करें। तभी हम सही उद्देश्य को हासिल कर सकेंगे।

आज के आधुनिक युग में योग का महत्त्व और भी बढ़ गया है। क्योंकि हमारी व्यस्तता और भाग दौड़ भरी जिन्दगी ने हमें रोगी बना दिया है। आज हम देख रहे हैं कि मधुमेह, उच्च रक्तचाप, सिर दर्द आदि जैसे रोगों ने हमारे शरीर में घर बना लिये हैं। आज युवाओं में कम मेहनत से अधिक पाने की होड़ ने उन्हें अविवेकी बना दिया है। उसी के चलते उम्र से पहले बुढ़ापा घेर रहा है। हर व्यक्ति को आगे बढ़ना है। ऊँचाइयों को छूना है। वैभवी बनना है। ये सब पाने के लिए उसे अतिरिक्त उर्जा चाहिए और इसका एक ही सशक्त मार्ग है योग/प्राणायाम। योग एक बहुत महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसको अपना कर हम बिना पैसा खर्च किए अपने आप को नीरोग रख सकते हैं। ❑

(स्वतंत्र लेखक)

विद्यालयी शिक्षा में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का समावेशन

❑ **प्रकाश चन्द्र अग्रवाल**

शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य 'स्वस्थ' व्यक्तियों का निर्माण करना है, जो तन व मन से स्वस्थ बनकर अपनी ऊर्जा का उपयोग, बौद्धिक व भावनात्मक स्तर को उच्च बनाने में कर सकें। शारीरिक क्रियाएँ व व्यायाम मनुष्य के शरीर को नीरोगी रखने में सहायक हैं। प्राणायाम व योग के अन्य साधन व्यक्ति को मानसिक रूप से एकाग्र व मजबूत बनाते है। साथ ही व्यक्ति को कर्त्तव्यनिष्ठ व क्रियाशील भी बनाते हैं। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ योग को भी पाठ्यचर्चा में उचित स्थान देने की अनुशंसा की गई है। उपरोक्त शारीरिक व मानसिक क्रियाओं से व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास होगा और वह सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक उपयोगी नागरिक बनेगा।

मानव जीवन अमूल्य है और अत्यन्त उद्‌देश्यपूर्ण है। व्यक्ति अपने जीवनकाल में इन उद्‌देश्यों को पूरा करना चाहता है और इसके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-अच्छा स्वास्थ्य। अस्वस्थ व्यक्ति का सारा ध्यान व्याधियों को दूर करने में लगा रहता है और उसके इन प्रयासों में उसकी ऊर्जा का एक बड़ा भाग इस अनुत्पादक कार्य में खप जाता है। बिना स्वस्थ शरीर के व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक किसी भी क्षेत्र में आशानुरूप प्रगति नहीं कर सकता है। स्वस्थ व्यक्ति मानव समाज की थाती है। स्वास्थ्य के इसी महत्व के कारण कहा भी गया है-''पहला सुख नीरोगी काया'', अर्थात् सभी सांसारिक सुखों में स्वस्थ शरीर होना सर्वोपरि माना गया है।

सर्वप्रथम यह जानना जरूरी है कि स्वस्थ कहते किसे हैं। 'स्वस्थ' की सबसे अच्छी परिभाषा शायद सुश्रुत संहिता की है, जिसके अनुसार-

''**समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियाः।**
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इति अभिधीयते।''

अर्थात् जिस व्यक्ति के तीनों वात, पित्त व कफ दोष, उपापचयी क्रिया, शरीर के उतक, उत्सर्जन तंत्र व जैव-रासायनिक क्रियाएँ साम्यावस्था में हों; शरीर, मन व आत्मा तीनों प्रसन्न हों, उसी को स्वस्थ कहा जाता है। ''स्वस्थ'' की लगभग यही परिभाषा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्य है- ''स्वस्थ एक सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक सम्यकपन की अवस्था है और बीमारी या दुर्बलता की अनुपस्थिति मात्र नहीं है।'' उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में 'स्वस्थ' की संकल्पना बहु-आयामी है। वास्तव में किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके आनुवंशिकीय कारकों व परिवेश से निर्धारित होता है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, जो पर्यावरण के जैविक व अजैविक घटकों से निरन्तर अन्तःक्रिया करता है। आनुवंशिकीय कारक व्यक्ति के नियंत्रण में नहीं हैं, लेकिन परिवेश पर निर्भरता को वह काफी हद तक नियंत्रित कर सकता है। जन्म के तुरन्त बाद ही व्यक्ति का अधिगम शुरू हो जाता है, जो उसकी औपचारिक शिक्षा से और निखरता है। ''स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा'' इसी अधिगम का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 में इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को पाठ्यचर्चा के सहशैक्षिक क्षेत्र में न मानकर शैक्षिक क्षेत्र में मानने की अनुशंषा की गई एवं इसे राष्ट्रीय चिन्ता में शुमार किया गया है। इस प्रपत्र में यह सुझाव दिया गया कि माध्यमिक स्तर पर इसको एक मुख्य विषय के रूप में माना जाये। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा को एक विषय के रूप में अंगीकार किया है। इसको सैद्धान्तिक रूप के साथ-साथ व्यावहारिक रूप में भी जब समग्रता से लागू किया जाएगा, तो इसके बहुत लाभदायक परिणााम होंगे। इससे न केवल स्वस्थ भारत के निर्माण में सहायता मिलेगी, अपितु मानव संसाधनों का समुचित उपयोग विकसित भारत के सपने को भी साकार कर सकेगा।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को पाठ्यचर्चा में शामिल कर हम विद्यार्थियों का समग्र विकास कर सकते हैं। कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। यह अनुभव सिद्ध बात है कि रुग्ण शरीर में आशा, उत्साह व कर्मठता कम ही होती है, जिससे मन भी प्रसन्न नहीं रह पाता है और कार्यकुशलता में बहुत कमी आती है। तन व मन दोनों एक दूसरे से प्रभावित भी होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। तन व मन व्यक्ति के बौद्धिक व भावनात्मक स्तर को प्रभावित करते हैं। सुदृढ़ तन व मन, सुदृढ़ बौद्धिक व भावनात्मक अवस्था की आधारशिला है। वेदान्त दर्शन के अनुसार, आत्मानुभूति शिक्षा का लक्ष्य है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए और आनन्द प्राप्ति के लिए तैत्तिरीय उपनिषद् के अनुसार पाँच कोशों को अनावृत्त करना होता है, जो निम्नानुसार हैं-

1. अन्नमय कोश
2. प्राणमय कोश
3. मनोमय कोश
4. विज्ञानमय कोश
5. आनन्दमय कोश

अन्नमय कोश, भौतिक शरीर से सम्बन्धित है। यह कोश तीन प्रकार का होता है–सात्विक, राजसिक व तामसिक। सत्व से तात्पर्य एकरूपता, संतुलन व शांति से है। रजस का अर्थ गतिशील व सक्रिय है। तमस का मतलब मूढ़ व निष्क्रिय है। उचित अन्न से सात्विक अन्नमय कोश विकसित होता है। अन्नमय कोश को अन्य सभी कोशों का पात्र मान सकते हैं। दूसरा कोश, प्राणमय कोश है, जो जीवन शक्ति या प्राण से बनता है। प्राण का तात्पर्य गति व हलचल से है। प्राण ऊर्जा के कारण हमारा जीवन चलता है और हम कर्म में प्रवृत्त होते हैं। प्राण और इन्द्रियों के मध्य समन्वय जरूरी है। प्राणमय कोश को प्राणायाम के माध्यम से जाग्रत किया जा सकता है मनोमय कोश तीसरा कोश है, जो मन से सम्बन्धित है। मन चंचल व निरन्तर गतिशील है। हम मन से ही संसार के बारे में जानते, अनुभव करते और समझते हैं। अपनी इच्छानुसार मन को एक विषय पर केन्द्रित करना ध्यान है, जिससे मनोमय कोश को उन्नत बनाया जा सकता है। चौथा कोश विज्ञानमय कोश है, जो बौद्धिक अवस्था को निरूपित करता है। विज्ञान से तात्पर्य विशुद्ध ज्ञान से है। जिस व्यक्ति के प्रथम तीनों कोश उन्नत अवस्था में हैं, उसका विज्ञानमय कोश भी उन्नत होने की बहुत सम्भावना है। अन्तिम कोश, आनन्दमय कोश है, जो भावनात्मक स्तर से सम्बन्धित है। 'आनन्द' एक एकीकृत अनुभव है, जिसमें दु:खों से विचलित न होना एक मुख्य घटक है। इस स्थिति में व्यक्ति जीवन मुक्त अवस्था में आ जाता है। स्वस्थ व्यक्ति की समग्र परिभाषा के अनुसार, उसके सभी पाँच कोश उन्नत दशा में होने चाहिए।

शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य 'स्वस्थ' व्यक्तियों का निर्माण करना है, जो तन व मन से स्वस्थ बनकर अपनी ऊर्जा का उपयोग, बौद्धिक व भावनात्मक स्तर को उच्च बनाने में कर सकें। शारीरिक क्रियाएँ व व्यायाम मनुष्य के शरीर को नीरोगी रखने में सहायक हैं। प्राणायाम व योग के अन्य साधन व्यक्ति को मानसिक रूप से एकाग्र व मजबूत बनाते है। साथ ही व्यक्ति को कर्त्तव्यनिष्ठ व क्रियाशील भी बनाते हैं। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शारीरिक शिक्षा के साथ–साथ योग को भी पाठ्यचर्चा में उचित स्थान देने की अनुशंसा की गई है। उपरोक्त शारीरिक व मानसिक क्रियाओं से व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास होगा और वह सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक उपयोगी नागरिक बनेगा। ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन के झंझावातों से निपटने में तो सक्षम होगा ही, साथ में संसार के अन्य व्यक्तियों से भी एकात्मता बना सकेगा। उसकी दृष्टि व्यापक बनेगी और समाज में समरसता की स्थापना में वह सहायक बनेगा।

अधिगम को एकांगी रूप में नहीं लिया जा सकता। प्रत्येक विषय दूसरे विषयों से किसी न किसी रूप में जुड़ा होता है। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के मामले में भी यह सत्य हैं। जहाँ इस विषय का सैद्धान्तिक पहलू विज्ञान के विषयों से अधिक सम्बन्धित है, वहीं इसका व्यावहारिक पहलू मानविकी व कला विषयों से अधिक सम्बन्धित है। अत: जहाँ भी संभव हो, अन्त: पाठ्यचर्चा योजना बनाना उपयोगी हो सकता है। इस विषय की सामाजिक सम्बद्धता को देखते हुए इसे राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत स्काइट और गाइड जैसे प्रकल्पों से जोड़ा जा सकता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गई है, स्वास्थ्य केवल जैविक कारकों पर ही निर्भर नहीं करता अत: स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत मुद्दा नहीं है। यह एक सामाजिक मुद्दा है। भोजन, स्वच्छ पानी, आवास, सफाई प्रबन्धन और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता स्वास्थ्य के स्तर को प्रभावित करते हैं। इन सब घटकों के कारण स्वस्थ नागरिकों के निर्माण में परिवार, समाज, विद्यालय, स्वयंसेवी संगठन व सरकार सभी भागीदार हैं और यह जरूरी हो जाता है कि इनके मध्य उचित सामंजस्य हो। कुपोषण और संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए बहुस्तरीय व्यापक प्रयासों की जरूरत है–विशेष रूप से बालिकाओं व समाज के कमजोर वर्गों के लिए। स्वास्थ्य शिक्षा में आयु विशेष की विशिष्ट जरूरतों को समझना भी जरूरी है। विद्यालयों में इसके लिए आधारभूत ढ़ाँचा, क्रियान्वयन प्रणाली, शारीरिक व योग शिक्षकों की नियुक्ति व प्रशिक्षण जैसे कारकों को सुचारू करना पड़ेगा। स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा व योग को एकीकृत करने की आवश्यकता है। इनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पक्षों के लिए सतत एवं समग्र मूल्यांकन भी जरूरी है। आधुनिक तीव्र तकनीकी प्रगति व फलस्वरूप जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों को भी इस शिक्षा में स्थान देना होगा जो कि समयानुकूल हो। विभिन्न पर्यावरणीय पहलुओं व नई–नई खतरनाक बीमारियों के बारे में जागरुकता भी इस पाठ्यचर्या का भाग होना चाहिए। केन्द्र व राज्य सरकारों में स्वास्थ्य व शिक्षा सेवाओं के क्षेत्र में अधिक समन्वय की जरूरत है।

अन्तत: मानव को मानव संसाधन तभी बनाया जा सकता है, जब वह स्वस्थ हो। स्वस्थ समाज किसी भी देश की खुशहाली व प्रगति का इंजन है। इसको सुचारू रूप से चलाने के लिए, समुदाय की आवश्यकताओं व सरकार के प्रयासों में समन्वय की आवश्यकता है। स्वस्थ समाज का लक्ष्य निरन्तर चलने वाला लक्ष्य है, जिसके लिए निरन्तर प्रयासों की जरूरत है। शिक्षा की इसमें विशेष भूमिका है। वर्तमान सरकार द्वारा स्वास्थ्य व स्वच्छता आदि क्षेत्रों में की गई पहल स्वागत योग्य है। धीमी गति से ही सही, खेल संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसे कार्यक्रमों में व्यापक सहभागिता व उत्साह, भविष्य के प्रति आशा बँधाता है। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा विषय में बढ़ती विद्यार्थियों की संख्या एक शुभ संकेत हैं। आशा की जानी चाहिए कि हम एक 'स्वस्थ' समाज की संकल्पना को शीघ्र साकार करने हेतु अपने प्रयास और तीव्र करेंगे। ❑

(प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर)

आरोग्य का मूल मंत्र-भारतीय चिकित्सा पद्धति

भारतीय चिकित्सा पद्धति में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य को विभिन्न आवरण स्तरों द्वारा समग्र रूप से व्यक्ति को इस प्रकार स्वस्थ बनाया जाता है कि व्यक्ति का मन प्रसन्न रहे तथा व्यक्ति बुद्धि द्वारा भय चिन्ता व शोक का उचित समायोजन कर अपने आत्मस्वरूपी आवरण को जान सके। भारतीय चिकित्सा पद्धति में प्रकृति स्वयं उपचार करती है। रोग के प्रति शोधक क्षमता एवं शक्ति का विकास कर आरोग्य प्रदान करती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का अनुकूलन ही स्वस्थ जीवनयापन का आधार है स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन में वृद्धि और विकास कर सकता है तथा स्वयं के लिए यश, विद्या एवं धन प्राप्त कर मानव सेवा द्वारा कल्याण कार्य कर समाज के प्रति कर्त्तव्यपूर्ण करता है।

❑ **डॉ. रेखा भट्ट**

भारत में प्राचीन काल से ऋषि-मुनियों ने मानव स्वास्थ्य के सन्दर्भ में विचार करते समय शरीर के साथ-साथ वातारण, मन, विचार, भावना, जलवायु, मानव-परिवेश आदि अनेक परिस्थितियों का भी अत्यन्त गहराई से विश्लेषण किया है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति में मानवीय अस्तित्व के 5 आवरण माने गये हैं। प्रथम शरीर (भौतिक), द्वितीय प्राण जो जीवनी शक्ति के रूप में नाड़ियों में प्रवाहित होती है। तीसरा-मन, जो भावनाओं और विचारों का केन्द्र माना जाता है। चौथा आवरण बुद्धि का है- जो ज्ञान व प्रज्ञा केन्द्र हैं। अन्तिम आवरण आत्मा जिसमें चेतना समाहित रहती है। इस संचेतना के अभाव में आन्तरिक तीन आवरण शरीर प्राण और मन की समरसता बाधित हो जाती है। मानव शरीर में स्वाभाविक रूप से भीतर की ओर हो रही चेतना के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप मानव शरीर की विभिन्न शारीरिक व मानसिक प्रणालियाँ असन्तुलित हो जाती है। इसी असन्तुलन से मानव के स्नायु तंत्र, अंत:स्त्रावी तंत्र, माँसपेशिय तंत्र, अध्यावरणीय तंत्र, प्रतिरक्षा प्रणाली तंत्र आदि के बीच समन्वय समाप्त हो जाता है। इस प्रकार किसी भी मानव के सामान्य जैविक, जैव रासायनिक व संरचनात्मक गतिविधियों में रुकावट हो होती है, जो शारीरिक व मानसिक विकृति (रोग) के रूप में दृष्टिगत होती है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति में दो प्रकार के रोग माने जाते हैं- शारीरिक रोग व्याधि कहलाते हैं तथा मन के रोग आधि कहलाते हैं। मन के क्षुब्ध होने से हुए तनाव के कारण उत्पन्न रोग में प्राण नाड़ी तंत्र में असंयमित रूप से प्रवाहित होते हैं। इससे सम्पूर्ण स्नायुमण्डल अव्यवस्थित हो जाता है तथा यह व्याधि आधिक्य रोग कहलाता है। इस व्याधि का उपचार तकनीकी रूप से अत्यन्त विकसित आधुनिक मनोविज्ञान चिकित्सा पद्धति में भी उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार के रोग का निराकरण करने में सक्षम भी नहीं है। किन्तु ऋषि मुनियों द्वारा दिये योग विज्ञान, प्राचीन मनोविश्लेषण विज्ञान द्वारा मनोदैहिक चिकित्सा द्वारा मनुष्य की भावना तथा विचार शुद्धि द्वारा मनोरोगों का भी उपचार संभव है। महर्षि पंतजली द्वारा प्रतिपादित योग विज्ञान सम्पूर्ण मानवता को प्रदत्त वरदान है। योग द्वारा भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान संभव है। योग द्वारा व्यक्ति की चेतना ब्रह्माण्ड की चेतना से जुड़ जाती है। यह प्रकृति से सम्पूर्ण सामंजस्य कर मानव शरीर को रोगों से मुक्त कराता है।

आधुनिक विकसित चिकित्सा विज्ञान में मूलत: अनाधिक रोगों का निदान संभव है, जो संक्रमण द्वारा उत्पन्न होते हैं तथा इनके लक्षण भी स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं। इनका औषधीय उपचार होता है। जबकि भारत में प्राचीन काल से ही प्राकृतिक साधनों सूर्य प्रकाश, जल, वायु, अग्नि, मिट्टी, खनिज एवं वनस्पतियों द्वारा चिकित्सा प्रदान की जाती थी। धीरे-धीरे इन पदार्थों की मूलकता सिद्ध हो गई है। प्रत्येक पदार्थ से चिकित्सा विज्ञान की अनेक शाखाएँ बनती गई है जैसे प्राकृतिक जल, वायु, मिट्टी, अग्नि जैसे पंच तत्वों का उपचार प्राकृतिक चिकित्सा कहलाया। वहीं खनिज,

वनस्पतियों, धातुओं से विकसित औषधियाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के रूप में विकसित हुई है। महर्षि चरक द्वारा रोगी के कायिक व मानसिक परिवर्तनों को देखकर व रोग के कारणों को समझकर अनुभवों एवं ज्ञात प्रभाव द्वारा विभिन्न औषधियों का उपयोग चरक संहिता में दिया है। वैद्यकीय चिकित्सा में विभिन्न औषधियों का उचित मात्रा एवं रीति से सेवन भेषज सेवन से दुनिया को अवगत करवाया। आयुर्वेद से शरीर में औषधियों की आन्तरिक कार्य प्रणाली का ज्ञान नहीं हो पाता था। अत: महर्षि सुश्रुत ने शल्य कर्म द्वारा ज्ञान प्राप्त कर कई औषधियों के चिकित्सकीय महत्त्व को सिद्ध किया। महर्षि सुश्रुत ने प्रथम बार शल्य चिकित्सा विज्ञान को विकसित कर मानवता को रोग मुक्ति की देन दी। शल्य चिकित्सा की आवश्यकता होने पर रोग की अवस्था का पता लगाने के लिए प्रयोगशालाएँ व जाँच पद्धति द्वारा आरोग्यन आधुनिक चिकित्सा का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा रोग की अवस्था का पता लगाकर उचित उपचार द्वारा रोग का तुरन्त निदान किया जा सकता है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य को विभिन्न आवरण स्तरों द्वारा समग्र रूप से व्यक्ति को इस प्रकार स्वस्थ बनाया जाता है कि व्यक्ति का मन प्रसन्न रहे तथा व्यक्ति बुद्धि द्वारा भय चिन्ता व शोक का उचित समायोजन कर अपने आत्मस्वरूपी आवरण को जान सके। भारतीय चिकित्सा पद्धति में प्रकृति स्वयं उपचार करती है। रोग के प्रति शोधक क्षमता एवं शक्ति का विकास कर आरोग्य प्रदान करती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रकृति का अनुकूलन ही स्वस्थ जीवनयापन का आधार है स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन में वृद्धि और विकास कर सकता है तथा स्वयं के लिए यश, विद्या एवं धन प्राप्त कर मानव सेवा द्वारा कल्याण कार्य कर समाज के प्रति कर्त्तव्यपूर्ण करता है।

भारत में चिकित्सा पद्धति रोगों के औषधि निदान के साथ-साथ आहार भी स्वयं एक चिकित्सा पद्धति है। यह आहार-विज्ञान व्यक्ति में प्राकृतिक संतुलन को स्थापित करने में सहायक होता है। किन्तु अनाधिक रोग जो संक्रमण से उत्पन्न होते हैं, उनमें प्राकृतिक समन्वय के सिद्धान्त पर दिया गया उपचार अत्यन्त दीर्घकालिक होता है। ऐसे में त्वरित स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने वाली अंग्रेजी दवाओं (ऐलोपैथी) का सामान्यजन में प्रयोग बढ़ा है।

चिकित्सालयों में चिकित्सकों द्वारा अंग्रेजी दवाओं के परामर्श से भारतीय दवा एवं चिकित्सा का प्रचलन कम होता चला गया। सत्तर के दशक तक भी भारतीय चिकित्सक द्वारा व्यक्ति के स्वास्थ्य का अनुमान रक्तचाप, रक्तशर्करा जैसे सामान्य व्यावहारिक परीक्षणों तक ही सीमित था। भारत में मृत्युदर के अध्ययन आधार पर चिकित्सा विज्ञान का विकास मापा जा सकता था।

ज्ञान के विस्तार और तकनीक में आश्चर्यजनक वृद्धि होने के कारण आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की सैंकड़ों शाखाएँ विकसित हो गई। सभी शाखाओं में विशिष्टीकरण, अन्वेषण व अनुसंधान के लिये देश में भी अनेक चिकित्सा शिक्षण संस्थान खुल गये। किन्तु भारत में स्वास्थ्य एवं जनहित के लक्ष्यों को दूर-दराज के क्षेत्रों में पहुँचाने का कार्य उपेक्षित है। इसके लिए स्वास्थ्य सेवाएँ, मेडिसिन, नर्सिंग, मनोविज्ञान जैसे स्वास्थ्य का अनुसंधान के विभिन्न संकायों को विश्वविद्यालयों से जोड़ कर शोध को व्यापक बढ़ाया जा सकता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को जानने व उनके निराकरण पर वैज्ञानिक अनुसंधान आवश्यक है। देश के चिकित्सा तंत्र को तकनीकी रूप से सशक्त करने के लिए उद्योगों, निदेशकों व चैरिटी संस्थाओं से सहायता ली जा सकती है जो लोक स्वास्थ्य अनुसंधान को बढ़ावा देंगे। क्लीनिकल चिकित्सा को मशीनों उपकरणों के निर्माण में आर्थिक सहायता प्रदान करने की जरूरत है। इससे भारत में बायो तकनीकी व्यवसाय को बढ़ावा मिलेगा। इसके लिए स्वास्थ्य सेवी संस्थाओं की सरल व प्रभावी प्रशासनिक संरचना आवश्यक है। आज लोक स्वास्थ्य के आँकड़ों का संग्रहण सरल हो गया।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भारत में आधुनिक उच्च तकनीकी प्रयोगशालाएँ जिनमें जैनेटिक, प्रोटियोनिकीय, जिनोमिकी तथा मेडिसिन को विकसित करना आवश्यक है। चिकित्सा विज्ञान एवं स्वास्थ्य सुरक्षा सम्बन्धी सैद्धान्तिक जानकारियाँ प्रदान करने के लिए संगोष्ठी, कार्यशालाएँ व सम्मेलन आयोजित किये जाने चाहिए। भारतीय चिकित्सकों, शिक्षकों व विद्यार्थियों एवं सामाजिक संस्थानों द्वारा जनता को स्वास्थ्य रक्षण एवं चिकित्सा सुविधाओं के अभावों के प्रति जागरूक बनाना होगा। भारतीय प्राचीन चिकित्सकीय शास्त्रों एवं विधियों को भारतीय परिवेश में सरलता से अनुप्रयोग द्वारा व्यापक स्तर पर जन-स्वास्थ्य की देखभाल संभव होगी। भौतिक संसाधनों के अतिरिक्त आरोग्यता सम्पूर्ण मानवता की मूलभूत आवश्यकता है। वर्षों से विदेशी अनुसंधान के आधार पर बनाई गई औषधियों व टीकों का भारतीय गरीब बच्चों एवं युवाओं पर प्रयोग रोकने के प्रयास किये जाने चाहिए। स्वास्थ्य के लिए सस्ती दवाओं का वितरण के नाम पर भारत की निर्दोष जनता के स्वास्थ्य पर करोड़ों रुपयों का कारोबार हो रहा है। भारत आज भी ऐैलोपेथी की विश्व स्तर पर सबसे सस्ती दवाइयाँ बनाने वाला देश है। विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नजर भारतीय दवा बाजार पर लगी है। चिकित्सा क्षेत्र में हम अपनी स्वदेशी प्रणालियों को आधुनिक रूप में विकसित कर विश्व मानवता की सेवा करने में सक्षम हो सकते हैं।❑

(व्याख्याता-रसायन शास्त्र, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर)

स्वस्थ व्यक्ति - स्वस्थ समाज

❑ डॉ. इन्दु बाला अग्रवाल

मानव शरीर पंचतत्त्वों से मिलकर बना है, शरीर को स्वस्थ रखने हेतु इन पंचतत्त्वों का सही अनुपात में होना आवश्यक है। एक भी तत्व की अधिकता अथवा न्यूनता शरीर को व्याधिग्रस्त कर देती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन व मस्तिष्क रहता है। स्वस्थ आत्मा व स्वस्थ मस्तिष्क द्वारा ही सुव्यवस्थित समाज का निर्माण संभव है। स्वस्थ रहने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता जीवन शैली का सही होना है। हम पाश्चात्यीकरण के अन्धानुसरण करने व प्रदर्शन प्रभाव से प्रभावित होकर पाश्चात्य जीवन शैली को प्राथमिकता देने लगे हैं। हालाँकि वे लोग भी early to bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise को जीवन शैली में उतारना उत्तम मानते थे। भारतीय जीवन शैली में आहार-विहार के कुछ नियम थे। सादा जीवन उच्च विचार, सादगी, नैतिकता आदि आदर्श थे, जिनके कारण दिन भर कार्यों में ताजगी व स्फूर्ति बनी रहती थी। लोग स्वच्छ व दीर्घायु होते थे। वहीं आज चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध होते हुए भी अधिकांश व्यक्ति उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मानसिक रोग, निराशा व हताशा तथा अनेक रोगों के शिकार हैं। चिकित्सकीय सुविधाओं ने हालांकि जीवन-प्रत्याशा अर्थात् जीने की औसत आयु को बढ़ाया है, लेकिन आज व्यक्ति के शरीर में रोग घुन की तरह लग गए हैं व शरीर को खोखला कर रहे हैं। लोगों की कार्यक्षमताओं में ह्रास देखने को मिल रहा है।

किसी भी देश की पूँजी स्वस्थ व्यक्ति होते हैं। स्वस्थ व्यक्तियों से ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होता है।

जीवन शैली में आई विषमता व बदलाव के साथ-साथ स्वास्थ्य पर मनुष्य जिस पर्यावरण व वातावरण में रहता है उसका असर पड़ता है। आस-पड़ौस वातावरण की हवा में जहर घुलता जा रहा है। शहरीकरण व नगरीय जीवन को बढ़ावा देने हेतु पेड़-पौधों की कटाई, अन्धाधुंध तरीके से की जा रही है व आलीशान और भव्य बहुमंजिली इमारतें ही इमारतें चारों तरफ दिखाई देने लगी हैं। वो हरियाली, खेत-खलिहान, वो नीम और पीपल

मनुष्य सोचता है वो अधिक समझदार है। उसके किए गए कृत्यों का दूसरों को पता नहीं लगेगा। धन कमाने की लालसा में वह शुद्ध चीजों में मिलावट करता है और मिलावट भी ऐसे पदार्थों की करता है जो बेहद हानिकारक हैं। उदाहरण के लिए दूध, मावे आदि में कास्टिक सोढ़े की मिलावट, घी में चर्बी व हानिकारक केमिकल्स की मिलावट आदि। मिलावट करते समय वह एक क्षण के लिए भी नहीं सोचता कि इसके सेवन करने वाले पर क्या रासायनिक कुप्रभाव हो सकते हैं, वह मनुष्य कितने प्रकार की गंभीर बीमारियों की चपेट में आ सकता है और क्या रोग इस मिलावट रूपी जहर से खुद व खुद के परिवार को बचा पाएगा, क्या अन्य लोग भी धन की लालसा में ये कुकृत्य नहीं कर रहे होंगे।

के छायादार व हवादार पेड़ पता नहीं कहाँ शहरीकरण की चकाचौंध में विलुप्त हो गए हैं। पड़ौसी-पड़ौसी को नहीं जानता, वो समरसता, वो अनजानी सी होठों के कोर पर फूटती हँसी, वो खिलखिलाता वातावरण, पक्षियों की चहचहाट, कोयल का कूकना, वो सब चीजें जो जाने अनजाने शरीर में जान फूँक देती थीं, अचानक कहाँ गायब हो गयी। लोग नकली हँसी हँसते हैं। हास्य क्लब बनाए जा रहे हैं, जहाँ लोग नकली ठहाके लगाकर अपने दिल का गुबार निकाल रहे हैं। आवश्यकता है पर्यावरण को संतुलित करने की, वानिकीकरण को प्रोत्साहन देने की, जनसंख्या भार में वृद्धि होने के कारण उनके निर्वाह हेतु लोप हो रहे वनों को बचाने की, भव्य इमारतों की कतारों के मध्य कुछ पेड़ों को लगाने हेतु जगह, रेल पटरियों के किनारे-किनारे, सड़कों के किनारे-किनारे हरा-भरा प्राकृतिक वातावरण तैयार करने की, आवश्यकताओं में सीमितताओं की और मूलत: भौतिकवादी जीवनशैली के स्थान पर आध्यात्मिक जीवन अपनाने की। मनुष्य अपनी बढ़ती लोलुपता के कारण प्रकृति का अन्धा व अविवेकी होकर दोहन कर रहा है। वह भूल जाता है प्रकृति की जीवन्तता को, प्रकृति कब किस करवट अपना रूप दिखा देगी।

स्वच्छ रहना अनेक रोगों से मुक्ति दिला देता है लेकिन स्वच्छता अभियान के नाम पर कुछ नासमझों द्वारा कूड़े-कचरे को जिसमें मुख्यत: प्लास्टिक व ई-कचरा सम्मिलित है जलाने पर अनेक प्रकार की रासायनिक अभिक्रियाएँ होकर जहरीला धुआँ निकलता है, वह धुआँ ना केवल ओजोन परत का क्षरण कर रहा है वरन् कैंसर, चर्म रोग, अस्थमा व अनेक असाध्य रोगों को निमन्त्रण दे रहा है। यदि रोग मुक्त राष्ट्र का निर्माण करना है तो आवश्यकता है सही प्रकार से कचरा प्रबन्धन (waste management) की। कचरे को अलग-अलग छाँटना, बायोडिग्रेडेबल कचरे को भूमि में मिलाना ताकि भूमि की उर्वराशक्ति बनाई रखी जा सके, re-cycle होने वाले कचरे को re-cycle करना व e-garbage को scientific तरीके व वैज्ञानिकों द्वारा सुझाए गए तरीकों से नष्ट करना ताकि नुकसान कम से कम हों।

मनुष्य सोचता है वो अधिक समझदार है। उसके किए गए कृत्यों का दूसरों को पता नहीं लगेगा। धन कमाने की लालसा में वह शुद्ध चीजों में मिलावट करता है और मिलावट भी ऐसे पदार्थों की करता है जो बेहद हानिकारक हैं। उदाहरण के लिए दूध, मावे आदि में कास्टिक सोढ़े की मिलावट, घी में चर्बी व हानिकारक केमिकल्स की मिलावट आदि। मिलावट करते समय वह एक क्षण के लिए भी नहीं सोचता कि इसके सेवन करने वाले पर क्या रासायनिक कुप्रभाव हो सकते हैं, वह मनुष्य कितने प्रकार की गंभीर बीमारियों की चपेट में आ सकता है और क्या रोग इस मिलावट रूपी जहर से खुद व खुद के परिवार को बचा पाएगा, क्या अन्य लोग भी धन की लालसा में ये कुकृत्य नहीं कर रहे होंगे। स्वस्थ समाज (healthy society) के लिए समाज में जागरुकता लानी नितान्त आवश्यक है, समाज को समय-समय पर mass media के द्वारा सही तथ्यों से अवगत कराते रहना चाहिए ताकि वे अपने स्वास्थ्य का संतुलित विकास व संधारण कर स्वस्थ समाज के निर्माण में भागीदार बन सकें। स्वस्थ समाज ही मिलकर एक स्वस्थ व ऊर्जावान राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे एवं तभी डेमोग्राफिक डिविडेन्ड सही मायने में डिविडेन्ड साबित हो कर राष्ट्र निर्माण में अपना अधिकतम योगदान कर पाएगा। इस दिशा में किए जा रहे सरकारी प्रयास सराहनीय हैं साथ ही व्यक्तिगत व सामाजिक प्रयास भी वांछनीय हैं। ❑

(पूर्व तदर्थ व्याख्याता,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर)

आनुवंशिकी रुपान्तरित बीज : खतरे का संकेत

❑ प्रो. मधुर मोहन रंगा

भारतीय ऋषि-मुनियों ने आदि काल से ही चिंतन-मनन कर मानव जीवन के लिए श्रेष्ठ संदेश देने का प्रयास किया है। उन्होंने जीवन शैली व जीवन के अंतर को स्पष्ट किया व सम्पूर्ण मानवता के लिए पर्यावरण संरक्षण, मानवीय संवेदनाओं, आदर्श जीवन व्यवहार व नीरोग रहने हेतु समय-समय पर उचित मार्गदर्शन व परामर्श देकर वैश्विक कल्याण के समग्र उत्थान का पाथेय प्रदान किया। भारतीय जीवन पद्धति में पहला सुख नीरोगी काया कहा गया है। इस विचार को केन्द्र बिन्दु मानकर भारतीय जीवन शैली ने मानव के आंतरिक पर्यावरण को विकार रहित बनाने हेतु सुझाव दिया, जब आंतरिक पर्यावरण व बाह्य पर्यावरण में साम्य (Homeostasis) स्थिति नहीं होगी, तब उसी अवस्था में मानव के शरीर पर रोगों का आक्रमण होगा। आंतरिक पर्यावरण को सुन्दर, सरस व परिस्थिति सापेक्ष बनाने हेतु ही हमारे चिंतकों ने जीवन शैली के लिए निर्धारित नियम बनाये। सभी नियम वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं व आज भी प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत आलेख में स्वास्थ्य विषय को लेकर आज के वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में आनुवंशिकी रूपान्तरित बीजों व भोजन की उपयोगिता का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

भारत में मानव सूचकांक-1016 के अनुसार यहाँ के लोगों के जीवन स्तर में पिछले वर्षों की तुलना में उत्साहजनक परिवर्तन आया है, यह सूचकांक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत मापा गया था। इसका आधार किसी भी देश में स्वास्थ्य, शिक्षा, ज्ञान, लैंगिक-विषमता, आय और जीवन स्तर के संकेतकों को कसौटी मानकर मानव विकास से जुड़ी प्रगति का आँकलन करता है। प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रहने का प्रयास करता है। व्यक्ति जब उपरोक्त आधारों पर स्वस्थ रहता है, उसी स्थिति में वह स्वयं समाज, देश व विश्व के समग्र कल्याण का विचार करता है। यदि व्यक्ति स्वयं स्वस्थ रहता है, उसी स्थिति में वह स्वच्छ व स्वस्थ्य समाज के निर्माण में योगदान दे सकता है। परन्तु प्रश्न उठता है कि स्वस्थ रहने के लिए क्या-क्या परम आवश्यक है व व्यक्ति क्यों बीमार पड़ता है? यदि हम हमारे चिंतन पर विचार कर यह कह सकते हैं कि बीमारी का मुख्य कारण आंतरिक पर्यावरण व बाह्य

पर्यावरणीय खतरों से संबंधित रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में आनुवंशिकी रूपान्तरित भोजन से 5 प्रतिशत बच्चों में व 2 प्रतिशत वयस्कों में 'एलर्जी' बढ़ी है।(Exposure to Environmental Hazard, 2003) उपरोक्त विवरण यह सामान्य जन के स्वास्थ्य के लिए भविष्य के खतरे को इंगित करता है। खाद्य पदार्थों में विषैले तत्वों की मात्रा भी बढ़ती है, जिससे परिवर्धित होते जीव-जंतुओं व मानव की जैविक क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। रसायनिक खाद भूमि की उर्वरा शक्ति को समाप्त कर रही है, वातावरण को दूषित कर रहा है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भारतीय वैज्ञानिक कृषक परम्परा के अनुसार कृषि की जावे, प्राकृतिक खाद व बीजों का प्रयोग करें। ऋतुओं के अनुसार खेती की जाय।

पर्यावरण के बीच असंतुलन का होना है, यदि दोनों पर्यावरणों में साम्य है, उस स्थिति में व्यक्ति बीमार नहीं होगा। आंतरिक पर्यावरण में प्रदूषण हमारे आचार, विचार, व्यवहार, रहन-सहन, जीवन शैली के कारण पड़ता है। जब आंतरिक पर्यावरण में प्रदूषण होगा तभी बाह्य पर्यावरण के साथ साम्य स्थिति नहीं रहेगी वही हमारी बीमारी का कारण बनता है। परिवर्तित होते वैश्विक परिदृश्य के कारण जीवन व जीवन शैली में परिवर्तन आया है, उसी कारण व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ने लगा है। अतः स्वस्थ रहने के लिए सम्पूर्ण परिदृश्य पर विचार कर आधुनिक आनुवंशिकी हेरफेर (Genetical Manipulations) के द्वारा उत्पादित बीज व भोजन के संदर्भ में विचार मंथन कर, भारतीय चिंतन के आधार पर विश्लेषण करना प्रासंगिक होगा।

जैसे-जैसे विश्व की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उसी के कारण खाद्य समस्या को हल करने हेतु, वैज्ञानिक अधिक उत्पादन के लिए विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक तकनीकी की खोज में जुटे हैं, इसी संदर्भ में आनुंवशिक रुपान्तरित (Genetically Modified) खेती की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ है। संभवतः संसार की जनसंख्या को भोजन की पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध हो सके व भूख, कुपोषण से संसार को मुक्ति प्राप्त हो सके यही सोच शोध कर्त्ताओं की रहती है। संसार की जनसंख्या 2050 में 9 मिलियन हो जायेगी, उस स्थिति में वैश्विक स्तर पर खाद्य समस्या उत्पन्न होने की प्रबल संभावना होगी, इसी कारण वैकल्पिक खाद्य उत्पादन पर ध्यान देना होगा। लगभग 19 वर्षों पूर्व जैव संवर्धित व आनुवंशिकी रुपान्तरित खेती की तकनीक विकसित हुई परन्तु कठोर परिश्रम के बाद भी संसार में केवल 3.4 प्रतिशत भूमि में ही आनुवंशिक रूपान्तरित बीज (Genetically Modified Seed) का उपयोग हो पाया है, उसमें भी अमेरिका व ब्राजील में 63 प्रतिशत क्षेत्र में खेती हुई है। साथ ही केवल 4 किस्म के बीजों से ही खेती हुई और उसका प्रयोग भी पशुओं के खाने के लिए अधिक हुआ है। भारत विश्व के पाँच देशों में शामिल है जहाँ 90 प्रतिशत खेती योग्य भूमि है। यहाँ परम्परागत खेती की व्यवस्था आदिकाल से जारी है। वर्तमान में कुछ देश आधुनिक प्रणालियों को अनपा रहे हैं। परन्तु कुछ देशों ने जी.एम. बीजों के प्रयोग से इन्कार कर दिया है या कई पाबन्दियों के साथ खेती को संचालित किया जाता है। क्योंकि इसके प्रतिकूल प्रभाव भी है। यूरोप में जो परीक्षण हुए हैं, जैव-सम्वर्धित खेती के संदर्भ में, बड़ी धनराशि में व्यय के बाद भी बौद्धिक सम्पदा अधिकार के संदर्भ में वहाँ खेती बंद करने पर विवश होना पड़ा है। हमारे यहाँ बिहार के छोटे गाँवों में भारतीय पद्धति से कार्बनिक खेती के द्वारा पैदावर में आलू व चावल की काफी पैदावर प्राकृतिक बीज के द्वारा प्राप्त की है, जबकि सिक्किम जैविक खेती पर ही निर्भर है। पूर्वी राज्यों में भी कार्बनिक खेती की ओर कदम बढ़ाने की घोषणा की है। उल्लेखनीय है कि जी.एम. बीजों के प्रयोग करने हेतु मोन्सेटो कम्पनी ने विश्वास दिलाया था कि इसकी खेती में रसायन, उर्वरक व कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं होगी, किन्तु यह सर्वथा गलत सिद्ध हुआ है। वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि जी.एम. सीड के उपयोग से लाभ कम व हानि अधिक है। केन्द्र सरकार द्वारा गठित समिति जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रेसल समिति (Genetically Engineering Appresal Committce) के सार्वजनिक संगठनों ने आनुवंशिकी रूपान्तरित सरसों के उपयोग का विरोध किया है उन्होंने पर्यावरण वन व मौसम परिवर्तन मंत्रालय के (MOEFCC) समक्ष ज्ञापन दिया है व उसके दुष्प्रभावों का वर्णन किया।

जैव सम्वर्धित व अनुवंशिकी रुपान्तरित खेती में दो विभिन्न प्रकृति के जीन्स का प्रयोग है, इससे कार्यिकी क्रियाएँ शिथिल होती है, पौधे विषमय हो जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने एक तकनीकी समिति का गठन किया था, जिसके अनुसार 10 वर्षों के लिये जी.एम. फूड फसल की ट्रायल पर प्रतिबंध लगाया गया है। यह भी मिथ्या प्रचार किया गया कि जी.एम. बीज की खेती से उपज में बढ़ोतरी होगी, अमेरिका में 13 वर्षों की फसल के अध्ययन के बाद पाया गया कि तीसरे वर्ष से फसल में कमी प्रारम्भ हो जाती है व इसके अलावा जी.एम. खेती में रसायनिक खाद व कीटनाशकों की अधिक आवश्यकता होती है। जल की मात्रा की भी अधिक आवश्यकता है जबकि आज सम्पूर्ण विश्व में मृदुजल स्रोत सूख रहे हैं।

© Alamy

वर्ष 1996 में सोया व मक्का के जी.एम. फूड का उपयोग प्रारम्भ हुआ था, यह पाया गया कि इससे पाचन शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, अधिक प्रयोग से कैंसर व कार्यिकी प्रक्रियाओं पर विपरित प्रभाव पड़ता है। राजस्थान में किसानों का नारा है ''राज्य को जी.एम. बीजों से मुक्त करो।'' सम्वर्धित खेती के दुष्प्रभावों पर वैश्विक वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित हुआ है, अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सेन्टर ऑफ साइन्स एनवायरमेन्ट ने बताया कि भोजन की ब्रेड में पोटेशियम ब्रामेट के प्रयोग से जिसमें 2 बी कारसिनोज (Carcinogen) तत्त्व है, यह कैंसर को जन्म देने वाला तत्व पाया जाता है। अन्य रसायन पोटेशियमलोर का भी उपयोग होता है जो थाईराइड ग्रंथि (Thyraid Gland) में विकृति उत्पन्न करता है, जिससे उपापचय (Metabolism) व अन्य क्रियाएँ प्रभावित होती हैं। इसके प्रयोग को ब्राजील, कनाडा, चीन व यूरोपियन यूनियन ने प्रतिबंधित किया है, जबकि हमारे यहाँ इसका खुलकर उपयोग हो रहा है। केलिफोर्निया विश्वविद्यालय व सेनफान्सिसकों के शोध बताते हैं कि अमेरिका जहाँ 90 प्रतिशत लोग जी.एम. भोजन का उपयोग करते हैं। मुख्यरूप से सोया व मक्का के उपयोग करने वालो के शरीर में ग्लाइफोस्फेट नामक कैंसर प्रेरक तत्व पाया जाता है। मोन्सेटो कम्पनी के ''राउण्ड अप'' में जो रसायन स्प्रे के रूप में कीटनाशक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है, उसमें न केवल फसलों में विष को जन्म दिया है अपितु उसके प्रयोग से बीजों में विष पहुँच रहा है। 'राउण्ड अप' एक जैव संवर्धित घोल है। संवर्धित भोजन के कारण 93 प्रतिशत अमेरिकन के मूत्र में ग्लाइफोस्फेट पाया गया है, विश्व स्वास्थ्य संगठन के शोध बताते हैं कि मानव शरीर में कैंसर की वृद्धि का कारण यह तत्व है। यह तत्व भोजन में सोया मिल्क, कोर्न व फ्लेकस् के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है। नीदरलैण्ड में इस तत्व के प्रयोग पर प्रतिबंध है। जी.एम. बीजों का प्रयोग हमें मोन्सेटो जैसी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी के जाल में फँसा रहा है व हमारे देश की फसलें, फल, खाना, सब्जियाँ सब विषैले होते जा रहे हैं। खाद्य शृंखला के कारण यह विषैला भोजन सम्पूर्ण पारिस्थितिक तंत्र में, बायो-एक्यूमूलेशन (bio-accumulatian) के कारण विष मय होता जा रहा है। पर्यावरणीय खतरों से संबंधित रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में आनुवंशिकी रूपान्तरित भोजन से 5 प्रतिशत बच्चों में व 2 प्रतिशत वयस्कों में 'एलर्जी' बढ़ी है। (Exposure to Environmental Hazard, 2003) उपरोक्त विवरण यह सामान्य जन के स्वास्थ्य के लिए भविष्य के खतरे को इंगित करता है। खाद्य पदार्थों में विषैले तत्वों की मात्रा भी बढ़ती है, जिससे परिवर्धित होते जीव-जंतुओं व मानव की जैविक क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। रसायनिक खाद भूमि की उर्वरा शक्ति को समाप्त कर रही है, वातावरण को दूषित कर रहा है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भारतीय वैज्ञानिक कृषक परम्परा के अनुसार कृषि की जावे, प्राकृतिक खाद व बीजों का प्रयोग करें। ऋतुओं के अनुसार खेती की जाय। सामाजिक वानिकी (Social Forestry) के द्वारा समाज के लोगों को जोडें व स्थानीय आवश्यकतानुसार खाद्य उत्पादन में सहयोग करें। तभी बाहरी व आंतरिक पर्यावरण में साम्य (Homeostasis) होगा व इस धरा पर स्वस्थ मानव विचरण करेगा। जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से सबल व सक्षम होगा। ❑

(विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग,
सरगुजा वि.वि., अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़)

Book Review

Relevance of AmbedkarToday (2017)

Editor: Dr. Sudhir Singh, Pentagon Press, pages 229.

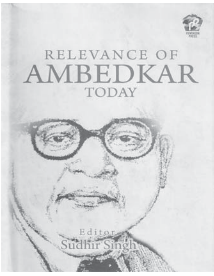

The above mentioned book analyses Dr.BhimraoAmbedkar as a passionate modern nation builder. He gave voice to the millions of people from the deprived section of society.His views on diverse national and international issues were very pragmatic and converge with the challenges even during the era of globalization. Ambedkar was aware about the incoming turbulence of the nation building therefore suggested appropriate means to achieve it. He laid the solid foundation of human rights in contemporary India through providing legal protection to the weaker sections of the society. In the era of globalization when nation states are facing severe threat to their sovereignty the ideas of Dr.Ambedkar is more relevant today than it was during his time. Ambedkar has suggested the structural mechanism to cope up with the complex problems India was facing at the dawn of independence. Today due to parochial politicsAmbedkar has become an object to score narrow political gains.The present Modi government has however tried to understand Dr Ambedkar in a holistic manner. This book has tried to liberate Dr.Ambedkar from the narrow and parochial perspective and tries to understand him as the architect of modern India.

Healthy existence : Healthy minds

❑ **Dr. TS Girishkumar**

Children play games, games of varying types, and children must play games. Before the setting in of modern existence, may be some fifty plus years ago, things used to be different. I distinctly remember that the chief attraction in schools used to be the intervals and games we played then. No one then did realise how important these games were for the overall development of a growing child, at that time the society could afford to take such things for granted. But now, thigs are drastically different. We ought to be thinking about the overall, total development of children into meaningful, fruitful and authentic human beings in all its sense.

Concept of mind in Bharat

Bharatiya knowledge is the Vedopanishadic knowledge tradition. All our knowledge begins in and with the Vedas. The discussions on mind are done exhaustively in the Upanishads, rather in a meticulous manner. Vedopanishadic anecdotes are instruments which bring out much complicated philosophical concepts in simple means. Indra, identifies mind with the self through ignorance is shown his mistake by Prajapati by asking him to analyse the state of deep sleep. And Indra had discovered that he had not known the self, for mind is almost annihilated in dreamless sleep.

Studies on mind went further ahead from the Vedas and the Upanishads, the Rishis went further experimenting. We got texts like ‘Yogavasistam’ in later days. Much re-

This makes it extremely important to have a healthy mind for an authentic person. Now the question is how to make healthy minds in our nation for future generations? At the same time, how to keep in control the unwanted influences? We all are aware that Bharatiya Sanskriti is the most effective instrument to all these, though our Sanskriti is an end in itself, not a means and is intrinsic to us. It is also true that Sanskriti can be instilled at a very early age, perhaps right from the childhood itself.

vealing studies are done in Ayurveda. The Shad Darsanas also did great work on the concept of mind, and the Sankhya-Yoga did much. The Sankhya – Yoga considers the mind as a product evolved from the insentient Prakriti, a direct product from Ahankara, and hence made up of three gunas, such as sattva, Raja and tama. It is therefore Jada, or insentient, but can reflect the consciousness of the Purusha or Atman, the soul.

The Nyaya – Vaiseshika schools consider mind as one of the Dravyas – fundamental or basic realities – out of which the world is eventually created. It acts as a link between the soul and the sense organs by which the external are known. The Naiyayikas say mind is Anu – atomic- whereas the Advaita Vedantins say that it is Vibhu – all prevailing. Vedanta says that mind is an object of knowledge. Like external object, we can observe mind and know it. Vedanta studies the mind as set of impressions, impressions or impacts created through varying thoughts and activities. The impressions last: impressions do not cease to be with the death of material body but are carried on endlessly till one attains jyana – self-realisation, which is moksha itself. Our experiences and activities are constantly leaving impressions on the mind, and they continue as impressions without getting deleted. This is the Upanishadic concept of Vasna, and the mind is a huge store house that ever keeps all impressions, not a single impression is eliminated. (the Buddhist theory of Pradityasamutpada is a repetition of Upanishadic Vasna)

When the mind is free from activity or functioning, it vanishes, and the Self is revealed. Sankaracharya calls this state as Aparokhanubhuti or the super sensuous state. On the other hand, the Tantrics maintain that mind is a limitation or modification of pure consciousness. The Charvakas do not accept mind, but they also discuss mind profusely. They say that mind is the consciousness in its knowing function, and is not separate from body. The Jain's do not accept mind as a sense organ, they call it anindriya. The Buddhists put forward a different theory, and it becomes deeper with the later Buddhist scholars.

It is interesting to make a comparison between Bharatiya and European philosophies. We see plenty of ‘breaks’ in European philosophy, they are creations of individual thinkers and in most cases there is no continuity except influences of the negative or otherwise. Often we see one cancelling the previous and providing something entirely new and different and this process goes on. Precisely this very phenomenon is seen in European empirical sciences, something is a scientific knowledge now, and some other scientific knowledge comes later and cancels it all out. This is what I meant by ‘breaks’ in knowledge tradition. Whereas in Bharat, there is continuity, there are different perspectives and varying views, but one does not cancel the other as trash. Bharatiya knowledge tradition is continuous, consistent and evolving through a series of continuity connection between the apparently different. This is what makes it Sanatana, ever prevailing, and ongoing.

The question of games

We saw that man in his totality is a mind body organism. From the philosophical discussions of both Europe and Bharat, the importance of human mind is very much brought home. European philosophy treats mind and soul as one and the same, but Bharatiya philosophy sees mind and soul as different entities. All told, in both knowledge traditions, mind assumes most importance position in human existence, and one could even say that for all practical reasons, man is his mind.

This makes it extremely important to have a healthy mind for an authentic person. Now the question is how to make healthy minds in our nation for future generations? At the same time, how to keep in control the unwanted influences? We all are aware that Bharatiya Sanskriti is the most effective instrument to all these, though our Sanskriti is an end in itself, not a means and is intrinsic to us. It is also true that Sanskriti can be instilled at a very early age, perhaps right from the childhood itself.

Games are indeed a prelude to all these. Wittgenstein is very much overwhelmed with the game concept; he goes to the extent of making language also a game, with his own logic of course. Basically, games are interactive, one gets into interaction with another. Secondly, games are rule governed activities, where one can not violate the rules without destroying the game itself. Thirdly, both mind and body are equally involved in games, and both mind and body are exercised through games, with happiness. Our schools have allotted periods for sports and games, but are they sufficient? This has to be looked into and seen as to how much of importance is being given to children playing games in the schools.

Obviously, games are the best and instant mental exercise for children to begin with. Games are also the first socialising phenomenon for any society. Just look at the pebbles in a stream, they are very polished. The same pebbles not in interaction with one another remain rough. Interaction thus shall lead to civilisation and culture. Games are the very first step to such a phenomenon of refined existence through Sanskriti.

Importance of allotment of sufficient time for games in school curriculum

The importance of games in human life had been discussed already. Now the next step shall be to think in terms of allotting sufficient time slots for games in school curriculum. Here, the whole thing could turn into impracticable phenomena given the contemporary times. It is here that certain amount of impositions may be needed from the authorities. Modern children are increasingly self-centred, as they are not allowed by the modern society to interact with one another for all kinds of reasons from modern existence. The internet and computers take away most of their time, and they keep running tight time schedules. Free time for both parents and children had long back turned into a myth.

Modern existence made families nuclear, where everyone may be running for time, akin to some kind of race. Children are instructed more in practical dos and don’ts than stories from Mahabharata, Ramayana or Panchatantra. I was shocked to find a student who qualified as a lawyer in her utter un-knowledge of Mahabharata, I was trying to give her some anecdotes to bring some cultural points home. When she did not know who the characters are I am talking about, and what story is that I am relating to, it shocked me and I found asking myself, what kind of a Hindu she had become? Obviously, children of such nature do not know that people of Bharat ignite lamps for prosperity and do not blow out lamps (candles) during birthdays. The tendency to imitate Europe is irresistible to many. At the same time I also came across some other students, who sit in gathering and collectively go for meditations of hours at end, which is also equally amazing. They meditated together from evening six to ten, a good four hours, all of them sitting under mosquito nets, and told me that they were unable to get up when the alarm sounded at ten in the night. There are such groups of children also, but the gap between these two different types is too wide and I really do not know how to bridge such cultural gaps.

Thus the fact of the matter is that, our society cannot expect any assistance from nuclear families in enculturing children. Other institutions of present society are also far flung in this matter. Who can do what still remains a question for which functional answers are to be newly sought out. To conclude, let me reiterate that the situation is grave, it is not just a matter of playing games, it indicates serious cultural and human decadence: and I really do not know how to deal with this gnawing phenomenon.❑

(Professor of Philosophy, The Maharaja Sayajirao University of Baroda)

इंजीनीयरिंग की शिक्षा में क्रांति के संकेत

❑ डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल

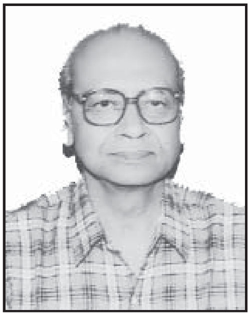

ऊपर से देखने पर लगता है कि विश्व भर में भारतीय इंजीनीयरों का बोलबाला है। अकेले अमरीका में संख्या इतनी अधिक है कि ट्रंप प्रशासन उस पर रोक लगाने की भरसक चेष्टा कर रहा है। माइक्रोसॉफ्ट में 34 प्रतिशत, इंटेल में 20 प्रतिशत और नासा में लगभग 27 प्रतिशत इंजीनीयर भारतीय हैं। परंतु वस्तुस्थिति कुछ और है। एक आकलन के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग छः लाख इंजीनीयरी स्नातक देश में तैयार होते हैं यद्यपि भारतीय उद्योग संगठन 'ऐसौचेम' के अनुसार इनमें से 25–30 प्रतिशत तक ही योग्य कहलाये जाने के अधिकारी होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट के अनुसार तो 90 प्रतिशत स्नातक अयोग्य होते हैं। ऊपर के शब्द चित्र से स्पष्ट है कि योग्य स्नातकों में से भी एक बड़ी संख्या देश के बाहर चली जाती है और देश उनकी शिक्षा पर अरबों रुपया व्यय करके भी योग्य इंजीनीयरों की सेवा से वंचित रह जाता है। आश्चर्य नहीं कि आज भारत में लाखों इंजीनीयर बेकार घूम रहे हैं।

इस निराशाजनक स्थिति के लिये निश्चित रूप से शिक्षा प्रणाली उत्तरदायी है। ऐसा नहीं है कि स्तरीय शैक्षणिक प्रतिष्ठान हैं ही नहीं। आइ.आइ.टी., एन.आइ.टी. आदि को कौन अच्छा नहीं कहेगा? एक आँकड़े के अनुसार 1990 में इनसे निकले तीस प्रतिशत कम्प्यूटर स्नातक अमेरिका में प्रथम श्रेणी की नौकरी पाने में सफल रहे थे और पिछले वर्ष तक भी यह संख्या लगभग ऐसी ही बनी रही थी। काम खराब किया है निजी इंजीनीयरिंग कॉलेजों ने जिनका एकमात्र ध्येय पैसा कमाना है। अधिकांश में फैकल्टी केवल नाममात्र की होती है। विजिटिंग फैकल्टी के नाम पर वे थोड़े से वेतन पर नामी गिरामी सेवानिवृत्त प्रोफेसरों को अपने रजिस्टर पर दिखा देते हैं ताकि उनके कॉलेज की छवि चमकदार बनी रहे भले ही ये प्रोफेसर वास्तविकता में अपनी सेवायें दें या नहीं। यही नहीं, प्रयोगशालाओं में केवल थोड़ा सा निवेश तथा सीटों को मनमाने दामों पर बेचने का धंधा तो चलता ही रहा है। राज्यीय सरकारी कॉलेजों में शैक्षणिक स्तर विश्वस्तरीय नहीं है और पाठ्यक्रम बिलकुल पुराने प्रकार का तथा आधुनिक औद्योगिक अपेक्षाओं के असंगत हैं। संभवतः इसीलिये विश्व के सौ उच्चतम स्तर के इंजीनीयरिंग प्रशिक्षण संस्थानों में एक नाम भी भारतीय नहीं है। इन्हीं सब कारणों से भारत के विद्वत समुदाय एवं सरकारी तंत्र में गंभीर छटपटाहट है।

शिक्षण का गुणात्मक स्तर सुधारने और सदैव प्रासंगिक बनाये रखने की दृष्टि से एक ओर महत्त्वपूर्ण निर्णय है। प्रत्येक वर्ष संस्थान के कम से कम पचास प्रतिशत शिक्षकों को ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स के माध्यम से अपना ज्ञान नितांत आधुनिक बनाये रखना होगा। यह भी एक अत्यंत उपयोगी निर्णय है यद्यपि इसकी रूपरेखा अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। कहना न होगा कि संस्थान के अध्यक्ष तक को नेतृत्व कुशलता में पारंगत बने रहने के लिये प्रतिवर्ष इसी प्रकार के एक कार्यक्रम में भाग लेना होगा। इस प्रकार के शिक्षण के बाद जो आकलन होगा वह लेख की भूमिका में बताये गये आकलनों से निश्चित रुप से भिन्न होगा और देश की प्रगति को पँख लग सकेंगे।

स्वागत योग्य बात है कि इन प्रवृत्तियों पर रोक लगाने एवं गैर निजी इंजीनीयरिंग कॉलेजों के स्तर को भी सुधारने के लिये केन्द्र सरकार अब कटिबद्ध हो गई है। पहली बार निर्णय लिया गया है कि अब देश के सभी प्रकार के इंजीनीयरी प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश का आधार केवल मात्र एक JEE (Joint Entrance Examination) परीक्षा में सफलता होगी। इससे केवल मेधावी विद्यार्थी कॉलेज में प्रवेश पा सकेंगे और सीटों के घृणित व्यापार पर रोक लग सकेगी।

दूसरा निर्णय है उद्योग जगत से लगातार संवाद जिसके आधार पर प्रतिवर्ष पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जायेगा ताकि वे देश की नित नई आवश्यकताओं को पूरा करने में सदैव सक्षम बने रहें। दृष्टव्य है कि पाठ्यक्रमों को निरंतर प्रासंगिक बनाये रखने की दृष्टि से बदलाव प्रतिवर्ष करना होगा। इस कदम से उद्योग की अत्यंत पुरानी माँग कि ऐसे कॉलेजों के चलाने में उनसे बराबर संवाद की स्थिति रहनी चाहिये, पूरी होगी और वे खुले दिल से उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत करा सकेंगे तथा उनके समाधान के लिये धन भी उपलब्ध कराते रहेंगे।

तीसरा निर्णय है कि विद्यार्थी को डिग्री तभी मिल सकेगी जब वह सभी सेमेस्टर की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के पश्चात एक कौशल परीक्षण (स्किल टेस्ट) में सफल रहे। अभी तक ऐसा नहीं था। यह निर्णय A.I.C.T.E. का है और इसे सिद्धांत रूप में हाल ही में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भी सहमति प्राप्त हो चुकी है। यदि कोई इस परीक्षण में सफल नहीं होता है तो दुबारा पुन: प्रयत्न करेगा और तब तक बराबर करता रहेगा जब तक वह योग्यता सिद्ध नहीं कर लेता। यह परीक्षण नितांत व्यावहारिक और कठिन होगा। उदाहरणार्थ सिविल के छात्र को किसी पुल अथवा विशेष क्षेत्र के लिये सड़क निर्माण संबंधी प्रेजेंटेशन देने को अथवा कम्प्यूटर विद्यार्थी को हार्डवेयर अथवा सॉफ्टवेयर संबंधी किसी समस्या का सैद्धांतिक समाधान प्रस्तुत करने को कहा जा सकेगा। बोर्ड में संस्थान के अंदर और बाहर दोनों ही स्थानों से विद्वान होंगे। अब मेडिकल के छात्रों की भाँति इंजीनीयरिंग के विद्यार्थी को भी इंटर्नशिप करनी होगी ताकि वह व्यावहारिक क्षेत्र में बेहिचक पर्दापण कर सके। स्पष्ट है कि इस प्रकार डिग्री केवल मौलिक योग्यता वाला विद्यार्थी ही प्राप्त कर सकेगा।

शिक्षण का गुणात्मक स्तर सुधारने और सदैव प्रासंगिक बनाये रखने की दृष्टि से एक ओर महत्त्वपूर्ण निर्णय है। प्रत्येक वर्ष संस्थान के कम से कम पचास प्रतिशत शिक्षकों को ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स के माध्यम से अपना ज्ञान नितांत आधुनिक बनाये रखना होगा। यह भी एक अत्यंत उपयोगी निर्णय है यद्यपि इसकी रूपरेखा अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। कहना न होगा कि संस्थान के अध्यक्ष तक को नेतृत्व कुशलता में पारंगत बने रहने के लिये प्रतिवर्ष इसी प्रकार के एक कार्यक्रम में भाग लेना होगा।

इस प्रकार के शिक्षण के बाद जो आकलन होगा वह लेख की भूमिका में बताये गये आकलनों से निश्चित रुप से भिन्न होगा और देश की प्रगति को पँख लग सकेंगे।

केन्द्र सरकार का एक और निर्णय स्वागत योग्य है। निर्णय है कि देश भर में दस उच्चस्तरीय बहुलक तकनीकी शिक्षण संस्थान (Polymer/Plastic Technology Institutes) खोले जायें इनमें से पहले का मई 2017 को मुर्थल, हरियाणा में प्रारम्भ कर भी दिया गया। यद्यपि देश में 10-12 ऐसे संस्थान पहले से हैं, फिर भी और अधिक की नितांत आवश्यकता है। स्मरणीय है कि विश्व भर में स्टील के पश्चात् जो पदार्थ उद्योगों में सर्वाधिक प्रयुक्त होते हैं, वे प्लास्टिक अथवा बहुलक ही हैं (ज्ञातव्य है कि प्लास्टिक भी बहुलक ही हैं)। आज बहुलक, रबर, लकड़ी, काँच, धातुओं, सभी को धीरे-धीरे विस्थापित करते जा रहे हैं और वर्तमान के साथ-साथ मानव सभ्यता का भविष्य भी समझे जाते हैं।

उपरोक्त सभी निर्णय इंजीनीयरिंग की शिक्षा के क्षेत्र में सर्वथा नई सोच इंगित करते हैं और संभावना व्यक्त करते हैं कि शीघ्र ही इस तकनीकी शिक्षण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा जो निकट भविष्य में देश को एक महाशक्ति बनाने की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करेगा। बदले परिवेश के ऐसे शिक्षण संस्थानों से निकले हमारे इंजीनीयर अवश्य ही विश्व में हमारा मस्तक ऊँचा कर सकेंगे और एक बार पुन: जंतर-मंतर जैसे आश्चर्यों का निर्माण संभव हो सकेगा। ❑

(पूर्व अध्यक्ष-रसायन विभाग, महर्षि
दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)

शिक्षा में सुधार का एजेंडा

❑ जगमोहन सिंह राजपूत

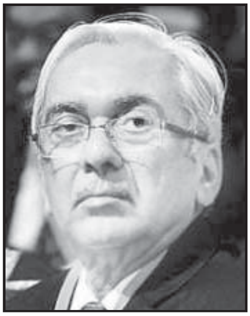

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने 1919 में लिखा था कि विश्वविद्यालयों का मुख्य कार्य शिक्षा का वातावरण निर्मित करना होता है। शिक्षा देना तो उसके बाद का सामान्य छोटा भाग है। उन्होंने यह भी कहा था कि शिक्षा में सभी तत्वों का समन्वय करना होगा। उसमें वेद-पुराण भी शामिल हों और समग्र चिंतन को सशक्त बनाने के लिए छात्रों को इससे भी परिचित कराना होगा कि बौद्ध, जैन, इस्लाम की विचाधाराओं ने भारतीय चिंतन को कैसे प्रभावित किया? उन्होंने इसे सभी विचारों को साथ लाने के लिए आवश्यक माना था। यदि शिक्षा सुधारों को 1950 से ही सही परिप्रेक्ष्य में समझा गया होता और शिक्षा नीतियों का आधार बनाया गया होता तो भारत की शिक्षा का स्वरूप बदल गया होता। 2004-14 तक शिक्षा व्यवस्था में निजीकरण को जो खुली छूट मिली उससे निजी स्कूल, मानद विश्वविद्यालय और निजी महाविद्यालय तो खुले, लेकिन इसके साथ ही शिक्षा में सरकारी भागीदारी की साख नीचे आई। इस पृष्ठभूमि में तीन साल पहले मोदी सरकार के सत्ता में आने से शिक्षा में सुधार के प्रति लोगों में नई आशा जगी। यह वह दौर था जब शिक्षा जगत में हताशा और शिथिलता नजर आती थी। केवल वही निश्चिंत थे जो शिक्षा को व्यापार समझ रहे थे। नई सरकार से अपेक्षाओं की बाढ़ आ गई थी। देश में नया जोश और संभावनाएं दिखाई दे रहीं थीं। सामान्य चर्चा में यही उभरता था कि सरकारी स्कूलों की साख वापस होनी चाहिए, शिक्षा रोजगारपरक होनी चाहिए, बच्चों पर बस्ते का बोझ कम होना चाहिए और सरकारी विश्वविद्यालयों एवं व्यावसायिक संस्थानों की संख्या बढ़नी चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षा से व्यापारीकरण दूर होने और निजी संस्थानों की मनमानी पर अंकुश लगने एवं सरकारी संस्थानों को साधनों में कमी न होने की उम्मीद जगी थी। बच्चों को समयानुकूल कौशल सिखाने और कार्य संस्कृति को गतिशील बनाने की जरूरत भी महसूस की गई थी।

चूंकि कोठारी कमीशन (1964-66) के बाद कोई राष्ट्रीय शिक्षा आयोग नहीं बना इसलिए उसे बनाने के साथ नई शिक्षा नीति की आवश्यकता शिक्षाविदों ने जताई थी। बेहतर हो कि चुनाव आयोग की तर्ज पर एक संवैधानिक स्वायत्त संस्था बने और वह शिक्षा को समयानुकूल परिवर्तित एवं संशोधित करती रहे। शिक्षाविदों की एक अन्य

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने 1919 में लिखा था कि विश्वविद्यालयों का मुख्य कार्य शिक्षा का वातावरण निर्मित करना होता है। शिक्षा देना तो उसके बाद का सामान्य छोटा भाग है। उन्होंने यह भी कहा था कि शिक्षा में सभी तत्वों का समन्वय करना होगा। उसमें वेद-पुराण भी शामिल हों और समग्र चिंतन को सशक्त बनाने के लिए छात्रों को इससे भी परिचित कराना होगा कि बौद्ध, जैन, इस्लाम की विचाधाराओं ने भारतीय चिंतन को कैसे प्रभावित किया? उन्होंने इसे सभी विचारों को साथ लाने के लिए आवश्यक माना था। यदि शिक्षा सुधारों को 1950 से ही सही परिप्रेक्ष्य में समझा गया होता और शिक्षा नीतियों का आधार बनाया गया होता तो भारत की शिक्षा का स्वरूप बदल गया होता।

अपेक्षा यह थी कि नए विषय और नए पाठ्यक्रम बनाने चाहिए तथा सरकार को जीडीपी का छह प्रतिशत शिक्षा को आवंटित करना चाहिए। बीते तीन वर्ष में सरकार ने लगभग हर क्षेत्र में नई परियोजनाएँ लागू की हैं और गुणवत्ता के विकास की आवश्यकता को पहचानने के साथ यह भी स्वीकार किया है कि स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की स्थिति में सुधार की त्वरित आवश्यकता है। इसी कारण अध्यापकों और प्राध्यापकों की नियमित नियुक्तियों पर विशेष ध्यान दिया गया है और अभी भी इन नियुक्तियों को समय से पहले और पारदर्शी ढ़ंग से करने की दिशा में अनेक सार्थक कदम उठाए जा रहे हैं। सामान्य रूप से प्रचलित निष्कर्ष यही है कि लगभग हर क्षेत्र में समस्या को पहचानने का काम हुआ है और समाधान के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। बीते तीन साल में आइआइटी, आइआइएम, नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, केंद्रीय विश्वविद्यालय और अन्य अनेक नए संस्थान खोले गए हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की रैंकिंग के लिए नई व्यवस्था बनाई गई है। बालिकाओं की शिक्षा और सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर विशेष प्रयास करने के साथ अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति एवं शैक्षिक कर्ज के प्रावधान और विस्तारित किए गए हैं। कौशल विकास और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए अलग मंत्रालय की स्थापना ने भी युवाओं में नई आशा जगाई है।

शिक्षा जगत में अपेक्षा थी कि नई शिक्षा नीति बनाने में पहले ही बहुत देर हो चुकी है। उस पर कार्य होना चाहिए। सरकार ने इस दिशा में पहल की और राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श की प्रक्रिया प्रारंभ की। हर संस्था, हर व्यक्ति को अपनी बात पहुँचाने का अवसर मिला। इसके बाद पाँच सदस्यीय समिति ने एक नीति प्रारूप तैयार कर मई 2016 को मंत्रालय को दिया। इसी बीच अनेक लोगों ने विचार-विमर्श को और आगे बढ़ाने की जरूरत जताई और उसके चलते मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति को अंतिम रूप नहीं दिया। आशा है कि इस वर्ष के अंत तक नई शिक्षा नीति आ जाएगी और उसमें बदलाव के अनुरूप आवश्यक शिक्षा और कौशल विकास करने की रणनीति को समग्र रूप में स्पष्ट किया जाएगा। इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है कि स्कूली शिक्षा का पाठ्यक्रम किस प्रकार और कितने समय बाद परिवर्तित हो? ध्यान रहे कि 14 नवंबर 2000 को घोषित पाठ्यक्रम को 2005 में एकाएक बदल दिया गया था। तबसे उसी के आधार पर बनी पाठ्यपुस्तकें आज भी चल रही हैं। हर विकसित देश यह स्वीकार करता है कि पुस्तकें पाँच साल के अंदर अवश्य ही बदलनी चाहिए। सरकार ने पुस्तकों के पुनरावलोकन की घोषणा तो की है, मगर इस ओर और अधिक गहनता से ध्यान देने की आवश्यकता है। पिछले तीन साल में कई कारगर फैसले हुए हैं, जिनका सही प्रभाव दिखाई देने लगा है। कक्षा आठ तक बच्चे को बिना सीखने के कौशल का अनुमान लगाए अग्रेषित करते जाना एक राजनीतिक निर्णय था। सरकारी स्कूलों में नामांकन तो बड़ी संख्या में दिखाए गए, मगर बच्चों की उपलब्धियाँ और शिक्षा की गुणवत्ता लगातार घटती गई। इसे बदल कर व्यावहारिक रूप दिया गया है।

सीबीएसई ने अंकों की अनावश्यक वृद्धि को समाप्त करने का निर्णय लिया है। इससे शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने की दौड़ से जो तनाव बच्चों पर बनता था वह कम होगा। निजी स्कूलों की मनमानी, व्यापारीकरण और शोषण पर नियंत्रण की उम्मीद भी बढ़ी है। अब अधिक कमीशन देकर पुस्तकें लगवाना असंभव नहीं तो कठिन हो गया है। स्कूलों में शौचालय, पेयजल और नए कमरे बड़ी संख्या में उपलब्ध कराए गए हैं, लेकिन इस मोर्चे पर अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। देश को प्राथमिकता के आधार पर सरकारी स्कूलों को नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के स्तर पर लाने की दिशा में बढ़ना है। इसके अलावा गुणात्मक शोध और नवाचारों को बढ़ावा देना है और नई शिक्षा नीति तो लानी ही है। यह पहचाना गया है कि शिक्षा संस्थाओं का हर स्तर पर उद्योग जगत से जुड़ना आवश्यक है। पिछले तीन सालों की उपलब्धियों में महत्त्वपूर्ण है सभी समस्याओं का सामने आना। ध्यान रहे कि समाधान तभी संभव है जब समस्या की पहचान सामने हो। ❑

(एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक)

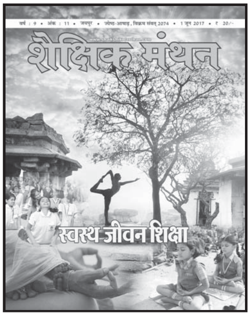

बच्चों की आवाज और अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती। अक्सर शिक्षक का ही स्वर सुनाई देता है। बच्चे केवल अध्यापक के सवालों का जवाब देने के लिए या अध्यापक के शब्दों को दोहराने के लिए ही बोलते हैं। कक्षा में वे शायद ही कभी स्वयं कुछ करके देख पाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी नहीं मिलते हैं। जरूरत है कि किताबी ज्ञान को दोहराने की क्षमता के विकास की बजाय पाठ्यचर्या बच्चों को इतना सक्षम बनाए कि वे अपनी आवाज ढूँढ़ सकें। बच्चों के सीखने के इस स्वर्णिम काल के प्रति घर, स्कूल और समाज में वयस्कों द्वारा इस तरह के गैरजिम्मेवार रवैए का क्या कारण हो सकता है?

बालमन : सीखने की प्रक्रिया

❑ **स्वतंत्र रिछारिया**

शिक्षा संबंधी सभी सिद्धांत, प्रक्रियाएँ, प्रणालियाँ, विचार, दस्तावेज आदि एक बात पर जोर देते हैं कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण और आवश्यक कार्य बच्चों में विवेचनात्मक-तार्किक चिंतन का विकास करना है। ताकि बच्चे सिर्फ रटकर सूचनाएँ एकत्रित न करें बल्कि वे विषयों और समाज की घटनाओं के प्रति तार्किक रूप से अपनी समझ विकसित करते हुए ज्ञान निर्माण कि प्रक्रिया में सहभागी हो सकें। सिद्धांतों का सार है कि बच्चे समाज में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं और वयस्कों से अंत:क्रिया करते हुए स्वयं ही ज्ञान का सृजन करते हैं। इसके लिए समाज, परिवार और स्कूल में उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण जरूरी है। दो से चार साल के बीच उम का वह समय होता है जब बच्चे स्पष्ट रूप से बोलना, अभिव्यक्त करना, नए शब्दों के साथ कुछ वाक्यों को गढ़ना प्रारंभ करते हैं। बाल्यावस्था का यह समय जिज्ञासा का चरमकाल भी कहा जा सकता है। क्योंकि इस समय बच्चा अपने आस-पास की सभी सजीवों और निर्जीवों के प्रति कौतूहल और उत्सुकता रखता है। बच्चे के जागने के साथ ही उसके क्या? क्यों? कहाँ ? कैसे? जाग जाते हैं और रात्रि में उसके सोने तक निरंतर वह उन्हें अपने साथ ही रखता है। इस समय उसके पास अनगिनत प्रश्न होते हैं। जो शायद उसके सीखने समझने और व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया के औजार हैं। सामाजीकरण और बच्चे के विकास का यह अतिमहत्त्वपूर्ण समय होता है, जब बच्चे की जिज्ञासाओं, प्रश्नों, बातों को आदर और कोमलता से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। हालांकि, कटुसत्य यही है कि वयस्कों की दुनिया के पास धैर्य और विनम्रता से बच्चों के अंतहीन प्रश्नों और बातों को सुनने के लिए समय ही नहीं है और अगर समय है भी तो यह सब उन्हें निरर्थक-सी लगती है।

आधुनिक काल में बच्चों के सीखने और ज्ञानार्जन के लिए स्कूल और शिक्षक को ही सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। समाज और परिवार में यह सामान्य मान्यता है कि घर में बच्चे जो भाषा बोल रहे हैं, जो प्रश्न पूछ रहे हैं, वह सब खेल है। वास्तविक शिक्षा और सीखना तो स्कूल जाने पर ही प्रारंभ होगा। जबकि हकीकत कुछ और ही है। स्कूल जाने के पूर्व बच्चा बहुत कुछ भाषा, व्यवहार आदि सीख चुका होता है। चार से पाँच साल तक आते-आते मानव के व्यक्तित्व का बहुत कुछ निर्धारण भी हो जाता है। सामाजीकरण, व्यक्तित्व निर्धारण और सीखने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण समय में जब बच्चों को वयस्कों द्वारा उनके प्रति स्नेह, प्रेम, धैर्य, आदर और प्रोत्साहन की जरूरत

होती है, प्रायः देखा गया है कि परिवार, समाज और स्कूल के वयस्क बच्चों के साथ अक्सर असहिष्णु हो जाते हैं। शिक्षा के जिन मूल्यों यानी सहिष्णुता, प्रेम, धैर्य, वैज्ञानिक चेतना आदि की बात की जाती है, उसका व्यावहारिक रूप बच्चे शायद ही अपने प्रारंभिक काल में घर और स्कूल में सीख पाते हैं। बच्चे अपने आसपास वयस्कों के इस व्यवहार को ही वास्तविक मानने लगते हैं। जब बच्चा देखता है कि उसके प्रश्नों का जवाब नहीं दिया जाता है तो उसे लगता है कि प्रश्न पूछना कोई अनुचित प्रक्रिया है। धीरे-धीरे वह प्रश्न पूछना ही बंद कर देता है, यह स्वभाव उसके साथ वयस्क और वृद्ध होने तक साथ ही रहता है। इस तथ्य को हमारे समाज और संस्कृति में महसूस किया जा सकता है। समाज में वयस्क भी अपने आसपास और जीवन से जुड़ी बातों, मुद्दों, राजनीति, धर्म, सामाजिक असमानता आदि पर प्रश्न नहीं पूछते। बचपन में जिस पूछने की स्वाभाविक और सहज प्रक्रिया को रोका गया, उससे ही समाज में मौन की संस्कृति (कल्चर ऑफ साइलेंस) उत्पन्न होता है।

बच्चों की आवाज और अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती। अक्सर शिक्षक का ही स्वर सुनाई देता है। बच्चे केवल अध्यापक के सवालों का जवाब देने के लिए या अध्यापक के शब्दों को दोहराने के लिए ही बोलते हैं। कक्षा में वे शायद ही कभी स्वयं कुछ करके देख पाते हैं। उन्हें पहल करने के अवसर भी नहीं मिलते हैं। जरूरत है कि किताबी ज्ञान को दोहराने की क्षमता के विकास की बजाय पाठ्यचर्या बच्चों को इतना सक्षम बनाए कि वे अपनी आवाज ढूँढ़ सकें। बच्चों के सीखने के इस स्वर्णिम काल के प्रति घर, स्कूल और समाज में वयस्कों द्वारा इस तरह के गैरजिम्मेवार रवैए का क्या कारण हो सकता है? एक कारण हो सकता है कि वयस्क बच्चों के सहज, मौलिक प्रश्नों और बातों को उनके सीखने की प्रक्रिया में ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं मानते हैं। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि वास्तव में वयस्कों के पास बच्चों के सवालों के जवाब न होते हों। बच्चों के साथ संवाद के समय देखा गया है कि वयस्क लोग या जवाब नहीं देते, या डाँट देते हैं या गलत जवाब देते हैं। जबकि वयस्कों का यह सामाजिक और नैतिक दायित्व है कि बच्चों के प्रश्नों का वास्तविक और तार्किक जवाब दें। अगर सही जवाब नहीं मालूम तो विनम्रता से मना कर देना चाहिए। बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगता है कि उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे स्कूल आज भी सभी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करा पाते। सीखने का आनंद और संतोष के साथ रिश्ता होने की बजाय स्कूलों में भय, अनुशासन और तनाव ज्यादा हावी रहता है। इसलिए जरूरत है कि समाज, परिवार और स्कूल में वयस्क, बच्चों के इस महत्त्वपूर्ण समय में उन्हें उनकी सहज और मौलिक प्रक्रियाओं, गतिविधियों को सहिष्णुता, प्रेम, धैर्य और आदर के साथ प्रोत्साहित करें। ताकि समाज जिन शैक्षिक और सामाजिक मूल्यों को बच्चों में प्रतिस्थापित करना चाहता है, वह वास्तविक रूप में फलीभूत हो सके। ❑

पिछड़ रहे केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में होगा सुधार

निश्चित अपेक्षा और बदलती माँग के अनुकूल प्रदर्शन नहीं कर रहे केंद्रीय विश्वविद्यालयों में सुधार करने के लिए केंद्र सरकार ने खास तौर पर पहल शुरू की है। इस लिहाज से 11 केंद्रीय विश्वविद्यालयों का अकादमिक ऑडिट किया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) यह काम पूरा करने के साथ ही इनको बेहतर करने के उपाय भी सुझाएगा।

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा है कि देश के 11 केंद्रीय विश्वविद्यालयों का अकादमिक ऑडिट चल रहा है। इसके तहत इन संस्थानों के प्रदर्शन का व्यापक आकलन किया जा रहा है। इनके पाठ्यक्रमों और शिक्षकों के साथ ही इनमें हो रहे शोध के स्तर आदि विभिन्न पैमानों पर भी इनका आकलन किया जा रहा है। छात्रों के प्रदर्शन के लिहाज से भी इन्हें जिम्मेवार माना जाएगा। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी बताते हैं कि कुछ विश्वविद्यालयों में पहले से चले आ रहे पाठ्यक्रम तो अच्छे चल रहे हैं, मगर इनमें बदलती जरूरतों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। जबकि बार-बार सभी विश्वविद्यालयों को कहा जा रहा है कि वे नए पाठ्यक्रमों की जरूरत और मौजूदा पाठ्यक्रमों की समीक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दें। इसी तरह विभिन्न विभागों में दशकों से एक ही जैसे विषयों पर शोध हो रहे हैं, जिनका मौजूदा परिस्थितियों से कोई वास्ता नहीं रह गया है। इसे भी बदलने पर जोर दिया जा रहा है।

मंत्रालय के अधिकारी कहते हैं, 'सभी सरकारी संस्थानों का वित्तीय ऑडिट तो होता ही है, लेकिन शैक्षणिक संस्थानों का आकलन सिर्फ इस आधार पर नहीं किया जा सकता कि उनमें धन के इस्तेमाल में कोई गड़बड़ी तो नहीं हुई। इनका अकादमिक आकलन जरूरी है।' इस ऑडिट में इलाहाबाद और अलीगढ़ जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय भी शामिल हैं। इनके अलावा जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (लखनऊ), महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, डॉ. हरि सिंह गौड़ सागर विश्वविद्यालय, त्रिपुरा विश्वविद्यालय और पांडिचेरी विश्वविद्यालय भी इसमें शामिल हैं।

शिक्षा अधिकार की उलटी चाल

❑ अरविंद कुमार सिंह

यह विडंबना ही है कि एक ओर केंद्र व राज्य सरकारें शिक्षा में सुधार के लिए प्रतिबद्धता जता रही हैं वहीं शिक्षण संस्थानों में अध्यापकों की भारी कमी से शिक्षण कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। आज देश के तकरीबन सभी शिक्षण संस्थान शिक्षकों की भारी कमी से जूझ रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आँकड़ों पर गौर करें तो देश भर के एक हजार से ज्यादा केंद्रीय स्कूलों में बारह लाख से अधिक बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं, लेकिन छात्रों की अनुपात में शिक्षकों की कमी है। यहाँ शिक्षकों के 10,285 पद रिक्त हैं। कमोबेश यही हालत देश के सभी राज्यों के शिक्षण संस्थानों की है। तकनीकी शिक्षण संस्थानों में भी शिक्षकों की भारी कमी है। पिछले वर्ष ही मंत्रालय की एक रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि देश में एक लाख से अधिक सरकारी स्कूल ऐसे हैं जो एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। पिछले वर्ष जी.के. चड्ढ़ा पे रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट से भी पता चला कि देश भर में 44.6 प्रतिशत प्रोफेसरों के पद और 51 प्रतिशत रीडरों के पद रिक्त हैं। इसी तरह व्याख्याता के 52 प्रतिशत पद रिक्त हैं। एक आँकड़े के मुताबिक 48 से 68 प्रतिशत शिक्षकों के सहारे पठन-पाठन चलाया जा रहा है। इस तरह देश तकरीबन चौदह लाख शिक्षकों की कमी से जूझ रहा है। गौरतलब है कि देश में सरकारी, स्थानीय निकाय और सहायता प्राप्त स्कूलों में शिक्षकों के पैंतालीस लाख पद हैं। लेकिन स्थिति यह है कि उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल समेत आठ राज्यों में ही शिक्षकों के नौ लाख से अधिक पद रिक्त हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में तीन लाख से अधिक शिक्षकों की कमी है। पिछले माह सर्व शिक्षा अभियान की वास्तविक स्थिति जानने के लिए केंद्र सरकार की ओर से आए ज्वाइंट रिव्यू मिशन के सामने यह खुलासा हुआ कि उत्तर प्रदेश में 7429 परिषदीय स्कूल सिर्फ एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के तकरीबन 47,483 अर्थात 42 प्रतिशत परिषदीय प्राथमिक विद्यालय ऐसे हैं जिनमें छात्र-शिक्षक अनुपात 1:35 के मानक से अधिक है। मजेदार बात यह कि राज्य के विभिन्न स्कूलों में छात्र-संख्या के अनुपात में तकरीबन पैंसठ हजार से अधिक शिक्षक तैनात हैं और

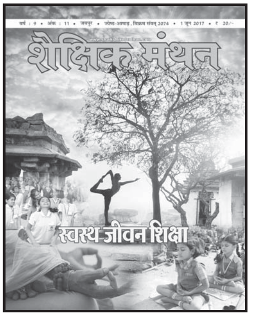

आज देश के तकरीबन सभी शिक्षण संस्थान शिक्षकों की भारी कमी से जूझ रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आँकड़ों पर गौर करें तो देश भर के एक हजार से ज्यादा केंद्रीय स्कूलों में बारह लाख से अधिक बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं, लेकिन छात्रों की अनुपात में शिक्षकों की कमी है। यहाँ शिक्षकों के 10,285 पद रिक्त हैं। कमोबेश यही हालत देश के सभी राज्यों के शिक्षण संस्थानों की है। तकनीकी शिक्षण संस्थानों में भी शिक्षकों की भारी कमी है। पिछले वर्ष ही मंत्रालय की एक रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि देश में एक लाख से अधिक सरकारी स्कूल ऐसे हैं जो एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। पिछले वर्ष जी.के. चड्ढ़ा पे रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट से भी पता चला कि देश भर में 44.6 प्रतिशत प्रोफेसरों के पद और 51 प्रतिशत रीडरों के पद रिक्त हैं। इसी तरह व्याख्याता के 52 प्रतिशत पद रिक्त हैं। एक आँकड़े के मुताबिक 48 से 68 प्रतिशत शिक्षकों के सहारे पठन-पाठन चलाया जा रहा है।

तकरीबन सात हजार उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्र-शिक्षक अनुपात मानक से अधिक है। राज्य के 87 प्रतिशत उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कई विषयों के शिक्षक नहीं हैं। 'प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन' की सालाना रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि उत्तर प्रदेश में पिछले दो साल के दरम्यान स्कूल न जाने वाले बच्चों का प्रतिशत 4.9 से बढ़ कर 5.3 हो गया है। प्रदेश के केवल सैंतीस प्रतिशत बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मुताबिक उत्तर प्रदेश में 16,12,285 बच्चे ऐसे हैं जो स्कूल नहीं जाते। यही हाल अन्य राज्यों का भी है। दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह भी है कि देश में उपलब्ध शिक्षकों में भी तकरीबन बीस प्रतिशत शिक्षक योग्यता मानकों के अनुरूप नहीं हैं।

एक आँकड़े के मुताबिक सर्व शिक्षा अभियान के तहत नियुक्त शिक्षकों में छह लाख शिक्षक अप्रशिक्षित हैं। बिहार में 1.90 लाख और उत्तर प्रदेश में 1.24 लाख शिक्षक जरूरी योग्यता नहीं रखते। छत्तीसगढ़ में पैंतालीस हजार और मध्यप्रदेश में पैंतीस हजार अप्रशिक्षित शिक्षकों के भरोसे काम चलाया जा रहा है। इसी तरह की समस्या से झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम समेत अन्य राज्य भी जूझ रहे हैं। जबकि शिक्षा अधिकार कानून में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और हर स्कूली छात्र को प्रशिक्षित शिक्षकों से पढ़ाए जाने का प्रावधान है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध शिक्षक भी अपने उत्तरदायित्वों का समुचित निर्वाह नहीं कर रहे हैं। शिक्षकों के शिक्षण संस्थानों से गायब रहने की खबरें आए दिन आती रहती हैं।

केंद्र सरकार द्वारा कराए गए सर्वे में वर्ष 2006-07 में प्राइमरी स्कूलों में 81.07 प्रतिशत और 2012-13 में 84.3 प्रतिशत ही शिक्षक उपस्थित मिले, यानी पंद्रह से बीस प्रतिशत गायब थे। इसका असर पढ़ाई पर दिखेगा ही। अन्य कई रिपोर्टों से भी उजागर हो चुका है कि देश के तिरेपन प्रतिशत से अधिक बच्चे दो अंक वाले घटाने के सवाल हल करने में सक्षम नहीं हैं। आधे से अधिक बच्चे गणित में बेहद कमजोर हैं। पाँचवीं के अस्सी प्रतिशत छात्र दूसरी कक्षा के पाठ सही तरीके से पढ़ नहीं पाते हैं। आठवीं के बच्चे जोड़-घटाना और भाग तक नहीं जानते।

संयुक्त राष्ट्र की एजुकेशनल फॉर ऑल ग्लोबल मॉनिटरिंग 2013-14 की एक रिपोर्ट में भारत में शिक्षा की बदहाली के कई कारण गिनाए गए हैं लेकिन शिक्षा पर होने वाले खर्च में भारी असमानता को सर्वाधिक प्रमुख कारण माना गया है। उदाहरण के तौर पर, केरल में प्रतिव्यक्ति शिक्षा पर खर्च लगभग बयालीस हजार रुपए है, जबकि बिहार समेत कई राज्यों मे यह छह हजार रुपए या इससे भी कम है। रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश में गरीबी के कारण सत्तर प्रतिशत और मध्यप्रदेश में पचासी प्रतिशत गरीब बच्चे पाँचवीं तक ही शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं। चिंताजनक तथ्य यह भी कि देश में शिक्षा अधिकार कानून तथा सर्व शिक्षा अभियान जैसी योजनाओं के बावजूद लाखों बच्चे स्कूली शिक्षा की परिधि से बाहर हैं। वर्ष 2014 में कराए गए एक स्वतंत्र सर्वेक्षण के अनुसार छह से चौदह साल के आयु वर्ग में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या 60.64 लाख थी। पिछले वर्ष संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में आशंका जताई गई थी कि भारत 2030 तक सबको शिक्षा देने के लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाएगा। रिपोर्ट के मुताबिक हालात इसी तरह बने रहे तो सबको प्राथमिक शिक्षा 2050 तक, सेकेंडरी शिक्षा 2060 तक और अपर सेकेंडरी शिक्षा 2085 से पहले मिलना कठिन है।

गौरतलब है कि 2015 में संयुक्त राष्ट्र के टिकाऊ विकास लक्ष्यों को 2030 तक हासिल करने के संकल्प पर भारत ने भी हस्ताक्षर किए थे। लेकिन अब ये लक्ष्य काफी दूर दिखने लगे हैं। आज देश में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा से वंचित बच्चों की संख्या 1.11 करोड़ है जो दुनिया में सर्वाधिक है। इसी तरह अपर सेकंडरी शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों की तादाद 4.68 करोड़ है। यह स्थिति तब है जब देश में शिक्षा अधिकार कानून लागू है और सर्व शिक्षा अभियान पर अरबों रुपए खर्च किया जा रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक सोलह प्रतिशत बच्चे बीच में ही प्राथमिक शिक्षा और बत्तीस प्रतिशत बच्चे जूनियर हाईस्कूल के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं। तकनीकी शिक्षण संस्थानों का हाल भी बेहद चिंताजनक है। हर वर्ष साठ हजार भारतीय छात्र इंजीनीयरिंग पढ़ने के लिए विदेशी शिक्षण संस्थानों की ओर रुख कर रहे हैं। एक वक्त था जब इंजीनीयर बनने का सपना देखने वाला हर छात्र यही चाहता था कि उसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी यानी आइआइटी में दाखिला मिले। लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में युवाओं की सोच में बदलाव आया है और उनकी नजर में अब आइआइटी को लेकर पहले जैसा आकर्षण नहीं है। इसके लिए संस्थानों में शिक्षकों का अभाव और संसाधनों की भारी कमी मुख्य रूप से जिम्मेवार है। पिछले दिनों उद्योग संगठन एसोचैम की तरफ से कराए गए एक अध्ययन में कहा गया कि शिक्षा में सुधार की रफ्तार अगर ऐसी ही रही तो भारत को विकसित देशों की तरह अपनी शिक्षा के स्तर को शीर्ष पर ले जाने में एक सौ छब्बीस साल का समय लगेगा। उसने अपने सुझाव में यह भी कहा है कि शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव की जरूरत है और शिक्षा बजट जीडीपी का छह प्रतिशत किया जाना आवश्यक है। ❑

(स्तम्भकार)

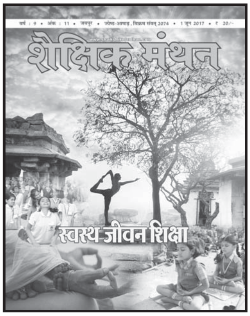

महिला शिक्षा में रोड़े

❑ **ऋतु सारस्वत**

बेटियों को उन विषयों को चुनने के लिए प्रेरित किया जाता है या कहना उचित होगा कि दबाव डाला जाता है जिनसे विवाह के बाद उनकी घरेलू जिम्मेदारियाँ बाधित न हों। कभी आर्थिक तो कभी सामाजिक दुहाई देकर पेशेवर शिक्षा लेने से रोक दिया जाता है, पर हाँ, बेटे के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाती, चाहे वह काबिलियत रखता हो या नहीं।

बीते दिनों विभिन्न राज्यों के दसवीं के परिणाम आए। हमेशा की तरह बेटियों ने अपना परचम लहराया, और ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। साल-दर-साल यही परिणाम आ रहे हैं। विभिन्न व्यवधानों के बावजूद बेटियों की जीवटता की एक बानगी आज से आठ दशक पूर्व की इस खबर से लगाई जा सकती है, 'अलीगढ़ का समाचार है कि अलीगढ़ मुस्लिम गर्ल्स स्कूल और कॉलेज की छात्राएँ बी.टी. परीक्षा को छोड़कर शेष सब परीक्षाओं में शत-प्रतिशत उत्तीर्ण हुई हैं। बी.टी. की परीक्षा में भी वे 91 प्रतिशत उत्तीर्ण हुई हैं। छात्रों के और किसी स्कूल और कॉलेज की परीक्षा का परिणाम ऐसा शानदार नहीं रहा है। बहनें परीक्षा के क्षेत्र में भी भाइयों से आगे बढ़ गई हैं, इसके लिए वे बधाई की पात्र हैं।' आज भी यह तस्वीर बनी हुई है और इसके साथ उनका संघर्ष भी।

क्या यह कल्पना करना सहज है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्रात्मक देश में, बेटियाँ आठ दिन तक अनशन इसलिए करती हैं कि वे दसवीं के बाद आगे पढ़ सकें। 'हम पढ़ना चाहती हैं। दसवीं के बाद पढ़ने के लिए हमें अपने गाँव से तीन किलोमीटर दूर कंवाली गाँव (रेवाड़ी जिला, हरियाणा) के स्कूल जाना पड़ता है। पर यह तीन किलोमीटर का रास्ता हमारे लिए जहन्नुम से कम नहीं है। बाइक पर हेलमेट पहन कर लड़के हमें तंग करते हैं। हमारे पीछे आकर गंदी-गंदी फब्तियाँ कसते हैं। स्थिति इतनी बिगड़ गई कि मनचलों के डर के मारे हमारी कई सहेलियों ने स्कूल आना तक छोड़ किया। परेशान हो हम सभी सहेलियों ने खुद ही संघर्ष का फैसला किया। स्कूल के पास धरने पर बैठ गईं। हम बेखौफ होकर पढ़ना चाहती हैं। इसलिए यही माँग रखी कि गाँव का स्कूल ही दसवीं से अपग्रेड कर बारहवीं तक कर दिया जाए, ताकि हमें मनचलों से छुटकारा मिल सके। खुशी है कि आठ दिन के संघर्ष के बाद सरकार ने लिखित में हमारी मांगें मान ली हैं। अब मनचलों

दरअसल, पुरुष सत्तात्मक समाज में यह अस्वीकार्य है कि लड़कियाँ लड़कों के समकक्ष खड़ी हों। हो सकता है यह बात पुरातन कह कर अस्वीकार की जाए, पर अगर ऐसा नहीं है तो मात्र बीस प्रतिशत अभिभावक ही क्यों बेटियों को इंजीनीयर, वैज्ञानिक या तकनीशियन बनाने में दिलचस्पी रखते हैं। किसी भी व्यक्ति की क्षमता उसके जन्म से निर्धारित नहीं होती, यह निर्धारित होती है, उसके सामाजीकरण से। येन-केन प्रकारेण यह प्रयास युगों से किया जा रहा है कि स्त्री परिवार और समाज द्वारा बाँधी गई परिधियों के भीतर ही चले और जब स्त्री-शिक्षा की बात हो तस्वीर के कई पहलू सामने आते हैं। लड़कियों का उच्च शिक्षा से यों दूर रहना भारतीय समाज की दोहरी सोच की परिणति है।

की वजह से हमारी पढ़ाई नहीं छूटेगी।' भूख हड़ताल पर बैठी बच्चियों के शब्द, महिला सशक्तीकरण के हर दावे पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं। बेटियों को शिक्षा और फिर उच्च शिक्षा, से कब और क्यों वंचित कर दिया जाएगा, इस संशय से वे हमेशा ही भयग्रस्त रहती हैं।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज की एक रिपोर्ट कहती है कि गाँव के स्कूलों में कक्षा एक में दाखिला लेने वाली सौ छात्राओं में से औसतन एक छात्रा दसवीं के बाद की पढ़ाई जारी रखती है। शहरों में प्रति हजार में से चौदह छात्राएँ ही ऐसा कर पा रही हैं। बेटियाँ क्यों स्कूल छोड़ देती हैं? इस विषय पर गैर-सरकारी संगठन 'प्लान इंडिया' द्वारा झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश में किए गए एक शोधपत्र में तथ्य सामने आए हैं कि बीच में पढ़ाई छोड़ चुकी हर पाँच लड़कियों में से एक का मानना है कि उनके माता-पिता ही उनकी पढ़ाई में बाधक हैं। समाज में असुरक्षित माहौल तथा विभिन्न कुरीतियों के कारण आठवीं या उससे बड़ी कक्षा की पढ़ाई के लिए उनके परिवार वाले मना करते हैं। करीब पैंतीस प्रतिशत लड़कियों का मानना है कि कम उम्र में शादी होने के कारण बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। यह अध्ययन स्पष्ट इंगित करता है कि बेटियों की शिक्षा के मध्य अवरोध उनके परिवार के सदस्यों द्वारा ही खड़ा किया जाता है। चाहे वह खेल का मैदान हो या फिर वैज्ञानिक या इंजीनियर बनने की बात।

गणित और विज्ञान जैसे विषयों में लड़कियों का प्रदर्शन लड़कों से कमतर नहीं रहा है। आँकड़े बताते हैं कि पचहत्तर प्रतिशत लड़कियों को पढ़ने-लिखने और नई चीजें खंगालने में रुचि है, जबकि लड़कों के मामले में यह पचास प्रतिशत है। फिर भी अधिकतर छात्राएँ विज्ञान और गणित विषय लेने से कतराती हैं क्योंकि शिक्षा के आरंभ से ही उन्हें परिवार, स्कूल और समाज द्वारा यह विश्वास दिलाया जाता है कि ये विषय उनके लिए बने ही नहीं हैं, उनकी बुद्धि और योग्यता, सामाजिक विज्ञान के अध्ययन तक सीमित है। जबकि विभिन्न शोध यह इंगित करते रहे हैं कि स्त्री की बौद्धिक क्षमता पुरुष से किसी भी रूप में कमतर नहीं है।

दरअसल, पुरुष सत्तात्मक समाज में यह अस्वीकार्य है कि लड़कियाँ लड़कों के समकक्ष खड़ी हों। हो सकता है यह बात पुरातन कह कर अस्वीकार की जाए, पर अगर ऐसा नहीं है तो मात्र बीस प्रतिशत अभिभावक ही क्यों बेटियों को इंजीनीयर, वैज्ञानिक या तकनीशियन बनाने में दिलचस्पी रखते हैं। किसी भी व्यक्ति की क्षमता उसके जन्म से निर्धारित नहीं होती, यह निर्धारित होती है, उसके सामाजीकरण से। येन-केन प्रकारेण यह प्रयास युगों से किया जा रहा है कि स्त्री परिवार और समाज द्वारा बाँधी गई परिधियों के भीतर ही चले और जब स्त्री-शिक्षा की बात हो तस्वीर के कई पहलू सामने आते हैं। लड़कियों का उच्च शिक्षा से यों दूर रहना भारतीय समाज की दोहरी सोच की परिणति है। बेटों को बेहतर से बेहतर सुविधाएँ दी जाती हैं और बेटियों से बिना किसी शिकायत के जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है। इस सत्य को अस्वीकार करना संभव नहीं है कि हमारे यहाँ लड़की के जन्मते ही अभिभावक उसके विवाह के लिए धन एकत्रित करने लगते हैं, और जीवन के प्रारंभ से विवाह होने तक उससे वही सब करने की अपेक्षा की जाती है जिससे उसे एक उच्च पदस्थ जीवन साथी मिले, चाहे वह बाह्य रंग-रूप की सार-संभाल की प्रेरणा हो या फिर शिक्षा।

बेटियों को उन विषयों को चुनने के लिए प्रेरित किया जाता है या कहना उचित होगा कि दबाव डाला जाता है जिससे विवाह के बाद उनकी घरेलू जिम्मेदारियाँ बाधित न हों। कभी आर्थिक तो कभी सामाजिक दुहाई देकर पेशेवर शिक्षा लेने से रोक दिया जाता है, पर हाँ बेटे के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाती, चाहे वह काबिलियत रखता हो या नहीं। यह समाज बड़ी चतुराई से लड़कियों को वह करने के लिए विवश कर रहा है जो वह चाहता है। 1964-66 के नेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन की 1968 की रिपोर्ट की अनुशंसा से पूर्व लड़कियों के लिए गणित और विज्ञान की शिक्षा जरूरी नहीं थी और इस रिपोर्ट की अनुशंसा के बाद भी कार्यरूप में इसे तब्दील होने में लंबा समय लग गया और वास्तविकता के धरातल पर आज बेटियों को बेसिक विषयों को लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। फिर, बेटियों का सामाजीकरण कुछ इस प्रकार का होता है कि उनके मस्तिष्क में त्याग, समर्पण और दायित्वों का ताना-बाना, महिमामंडित कर बुन दिया जाता है कि वे स्वयं अपनी संपूर्णता परिवार के निहित कर्तव्यों में समझने लगती हैं। यह सम्मोहन की वह प्रक्रिया है जो जीवनपर्यंत उन्हें बाँधे रखती है।

पीड़ा का विषय यह है कि बेटियों को लेकर क्यों हम इतने 'कुटिल' हैं। 'कुटिलता' शब्द चुभन देने वाला तो है, पर सच यही है कि बिना यह जाने कि बेटियाँ क्या पढ़ना चाहती हैं, क्या बनना चाहती हैं, भारतीय परिवार चाहे कितना भी धनाढ्य और शिक्षित हो उसका अंततोगत्वा लक्ष्य बेटी का ब्याह होता है और यह आँकने के बाद कि तथाकथित विवाह के बाजार में दूल्हे किस 'पेशे' की अपेक्षा अपनी पत्नी से कर रहे हैं, बेटियों को उन्हीं मापदंडों के अनुरूप विषय चुनने के लिए 'विवश' किया जाता है। अपने माता-पिता से ही जब बेटियाँ दायरे में जीने की शिक्षा पाती हैं तो उनका उच्च शिक्षा से वंचित रहना स्वाभाविक है, और यह सब तब तक चलता रहेगा जब तक बेटियों और बेटों में भेद की रेखा खींची जाती रहेगी। ❑

(समाज शास्त्री)

शिक्षा और सिमटती नौकरियाँ

❑ **कौशलेंद्र प्रपन्न**

तमाम संचार माध्यमों पर बड़ी गंभीरता से यह खबर प्रसारित हो रही है कि सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विश्व स्तर पर दुबारा मंदी छा रही है। विभिन्न रिपोर्टों और अध्ययनों के मुताबिक भारत में रेलिक्जर, एचसीएल, टेक महिंद्रा आदि कंपनियों ने तेजी से छंटनी शुरू कर दी है। मैकीन्से की जनवरी में आई रिपोर्ट के अनुसार भारत में आईटी सेक्टर ने सैंतीस लाख नौकरियाँ प्रदान की हैं। लेकिन इस रिपोर्ट में यह भी हिदायत दी गई है कि आने वाले दो-तीन सालों में इनमें से आधी अप्रासंगिक हो जाएँगी। यानी आईटी क्षेत्र के कर्मचारियों को कल नई तकनीक का सामना करना होगा, जिसके लिए वे तैयार नहीं होंगे। इसलिए उनकी नौकरियों पर तलवार लटकी हुई है। माना जा रहा है कि आईटी क्षेत्र में अगले तीन सालों में तकरीबन दस लाख नौकरियों पर गाज गिर सकती है। रेलिक्जर ने तो उच्च पदों पर कार्यरत अधिकारियों से कहा कि अगले छह महीने या साल भर का वेतन लें और कल से नौकरी पर न आएँ। हालांकि जिन लोगों के सामने ऐसे प्रस्ताव रखे गए उनका वेतन करोड़ों में था।

एक दूसरा कारण यह भी है कि रोज नई तकनीक इजाद हो रही है। बहुत तेजी से पुराने सॉफ्टवेयर और मशीनों को नई चुनौती मिल रही है। अगर नई तकनीक और औजारों से परिचित नहीं हैं, तो आप बाजार और कंपनी के लिए किसी काम के नहीं हैं। आपको हर दिन साबित करना होता है कि आप कंपनी के काम के कर्मचारी हैं। सूचना तकनीक क्षेत्र में इन दिनों सबसे बड़ी खबर यही है कि अगर आप अपनी समझ और ज्ञान को वर्तमान सूचना तकनीक और बाजार के अनुरूप नहीं ढालेंगे, तो बाजार अनुपयोगी साबित कर देगा। आपके स्थान पर आपसे कम वेतन में काम करने वालों की भीड़ खड़ी है। दूसरे, कंपनियों में मानव संसाधन को कम किया जा रहा है। कंपनियाँ एक बार पैसे खर्च कर मशीन लगा कर, पूरे काम को ऑटोमेटेड कर, मानवीय श्रम को खत्म करना चाहती हैं। यह लड़ाई मानवीय श्रम और तकनीक वर्चस्व का है। तकनीकी शिक्षा कहीं न कहीं साहित्य और भाषाई विषयों के शैक्षिक दर्शन की दृष्टि से अलग है। अगर विज्ञान और तकनीक को शिक्षा-दर्शन की नजर से देखने-समझने की कोशिश करें तो दोनों में बुनियादी अंतर दिखाई देता है। तकनीक जहाँ आँकड़ों, यथार्थ, सत्यता और

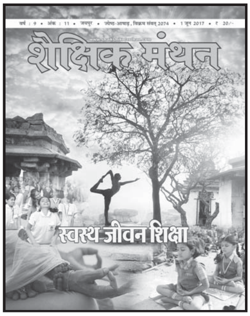

जहाँ साहित्य का अध्येता समाज और परिवेश को साहित्य की दृष्टि से सत्यम् शिवम् और सुंदरम् ही देखता-महसूस करता है, बल्कि वह समाज से साहित्य के अनुसार ही व्यवहार की भी अपेक्षा करता है। वहीं तकनीक के विद्यार्थी समाज और सामाजिक रिश्तों, मान्यताओं आदि को बाजार और अर्थ के मापदंडों पर परखने की कोशिश करते हैं। यह दृष्टि भेद न केवल स्कूल स्तर पर, बल्कि ताजिंदगी देखा जा सकता है। साहित्य का पाठक समाज और सामाजिक मूल्यों को संवेदना के धरातल पर परखता है, तो तकनीक, विज्ञान या मैनेजमेंट का छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षा और जीवन को बाजार मूल्यों, यथार्थ और वैश्विक चुनौतियों की कसौटी पर कसता है। अगर इन शैक्षिक और सामाजिक बनावटों को समझ लिया तो तकनीक के शैक्षिक दर्शन और भय की परतों को खोला जा सकता है।

प्रामाणिकता पर जोर देती है, वहीं साहित्य सृजन की वैयक्तिक भिन्नता पर निर्भर है। विज्ञान और तकनीक का सत्य सार्वभौमिक होता है, जबकि साहित्य का सत्य वैयक्तिक और सामाजिक संदर्भ पर निर्भर करता है। साहित्य का सत्य काल और व्यक्ति सापेक्ष होता है, जबकि तकनीक के लिए सत्य भिन्न है। क्योंकि इन क्षेत्रों में रोज अनुसंधान और प्रयोग हो रहे हैं।

तकनीक और साहित्य के शिक्षा-शिक्षण शास्त्र में भी बुनियादी अंतर देखा जा सकता है। जहाँ विज्ञान और तकनीक में पूर्व निर्धारित तथ्यों को स्वीकार करने पर जोर दिया जाता है, वहीं साहित्य शिक्षण में सृजनात्मकता के विविध आयामों पर ध्यान दिया जाता है। समाज में साहित्य के प्रति जिस प्रकार की धारणा होती है, तकनीक के प्रति वही दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाता। तकनीक यूजर फ्रेंडली होती है, वहीं साहित्य पाठक फ्रेंडली नहीं होता। लेखक जो लिखना चाहता है वही लिखता है। पाठक उसे अपने अनुभव से जोड़ कर अर्थ ग्रहण करता है। उपभोक्ता पुस्तिका को पढ़ कर औजार को चलाना सीखा जा सकता है, लेकिन साहित्य किसी मार्गदर्शिका से समझने वाली चीज नहीं है। साहित्य को हर पाठक अपने अनुभव जगत से जोड़ कर उसके संदर्भगत अर्थ ग्रहण करता है।

क्या स्कूली स्तर पर बच्चों और शिक्षकों में तकनीक को लेकर किसी किस्म का भय है या जिस रुचि और चाव से कविताएँ, कहानियाँ पढ़ते हैं उसी लगन से तकनीक को स्वीकार कर पाते हैं? तकनीक और विज्ञान को बेहद प्रामाणिक, सत्यापित और स्थापित ज्ञान के तौर पर पढ़ाया जाता है, वहीं साहित्य को काल्पनिक और अयथार्थ ज्ञान के तौर पर बरता जाता है। यही कारण है कि साहित्य और तकनीक के छात्रों के सामाजिक नजरिए में एक बुनियादी अंतर देखा जा सकता है।

जहाँ साहित्य का अध्येता समाज और परिवेश को साहित्य की दृष्टि से सत्यम् शिवम् और सुंदरम् ही देखता-महसूस करता है, बल्कि वह समाज से साहित्य के अनुसार ही व्यवहार की भी अपेक्षा करता है। वहीं तकनीक के विद्यार्थी समाज और सामाजिक रिश्तों, मान्यताओं आदि को बाजार और अर्थ के मापदंडों पर परखने की कोशिश करते हैं। यह दृष्टि भेद न केवल स्कूल स्तर पर, बल्कि ताजिंदगी देखा जा सकता है। साहित्य का पाठक समाज और सामाजिक मूल्यों को संवेदना के धरातल पर परखता है, तो तकनीक, विज्ञान या मैनेजमेंट का छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षा और जीवन को बाजार मूल्यों, यथार्थ और वैश्विक चुनौतियों की कसौटी पर कसता है। अगर इन शैक्षिक और सामाजिक बनावटों को समझ लिया तो तकनीक के शैक्षिक दर्शन और भय की परतों को खोला जा सकता है।

पूरे देश में इस समय दो स्तरीय उच्च और माध्यमिक शिक्षा की दुनिया रची जा रही है। एक ओर निजी कंपनियों के मुनाफे से चलने वाले शैक्षिक संस्थान हैं, तो दूसरी ओर सरकार की योजनाओं और सदिच्छाओं पर चल रहे हैं। दोनों शैक्षिक संस्थानों के पाठ्यक्रमों पर नजर डालें तो एक बहुत बड़ा अंतर नजर आएगा। निजी शैक्षिक संस्थानों में व्यापार होटल, सूचना तकनीक, बाजार आदि से संबंधित पाठ्यक्रम होते हैं, जहाँ मानवीय संकाय के विषयों, मसलन भाषा, दर्शन, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज विज्ञान आदि को कोई स्थान नहीं दिया जाता। सरकारी स्तर पर इस खाई को पाटने का प्रयास भी नहीं होता। कई पाठ्यक्रम भुगतान आधारित होते हैं, कुछ की फीस अभिभावकों से ली जाती है, तो ऐसे में बाजार सामने आता है और कर्ज लेकर बच्चे पढ़ाई करते हैं। उस पर तुर्रा यह कि वे सपने बहुत बड़ी नौकरी के पाल लेते हैं।

कैंपस प्लेसमेंट में जिस तरह से कंपनियों और निजी शैक्षिक संस्थानों की आपसी साँठ-गाँठ होती है, उसे भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जब सूचना तकनीक और अन्य व्यावसायिक विषयों में स्नातक और परास्नातक पाठ्यक्रम पूरा कर बच्चे नौकरी के लिए भटकते हैं, तब उन्हें वास्तविक दुनिया और विषय की प्रासंगिकता का अहसास होता है। लाखों रुपए खर्च कर बच्चे इंजीनीयरिंग की राह पर तो चल पड़ते हैं, लेकिन जब बाजार की माँगों के अनुरूप नहीं काम कर पाते तो उस बच्चे के साथ-साथ संस्थान की नाक भी नीची होती है। सूचना तकनीक हो या अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम, इन्हें पढ़ने वाले बच्चे बहुत जल्दी कमाने की होड़ में लग जाते हैं। हालांकि यह दबाव कई बार अभिभावकों का भी होता है और समााज का भी। लेकिन इस प्रक्रिया में बच्चा अपनी समझ और ज्ञान के निर्माण में जल्दबाजी की वजह से विषय की बारीकियों को नहीं पकड़ पाता। इसी का परिणाम होता है कि जब ऐसे बच्चे बाजार में जाते हैं तो उनकी पढ़ाई और माँग के बीच एक गहरी खाई नजर आती है। खासकर समाज में कुछ पेशे ऐसे हैं, जिनमें पढ़ना बेहद जरूरी माना जाता है। अगर आप पढ़ते नहीं हैं तो अपने पेशे में हाशिये पर धकेल दिए जाते हैं। डॉक्टर, टीचर, वकील, इंजीनीयर आदि अपने क्षेत्र में होने वाले नए-नए अनुसंधानों आदि से वाकिफ नहीं होंगे, तो वे अपनी पेशेगत माँग में पीछे रह जाएँगे। यही डर आज आईटी क्षेत्र में महसूस किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि कुछ ही सालों बाद आज की तकनीक बदल जाएगी। अगर कर्मी खुद को नहीं बदल पाए तो उनके हाथ से नौकरी फिसल जाएगी। ❑

(स्तम्भकार)

सीबीएसई में होंगे व्यापक बदलाव : जावडेकर

साक्षात्कार

स्कूल का नाम आते ही आम जनता के बीच एक साथ शिक्षा की गुणवत्ता, अच्छे शिक्षकों की उपलब्धता, पाठ्यक्रम, फीस बढ़ोतरी जैसे कई सवाल एक साथ उठते हैं। यह भावना हर स्तर पर दिखाई देती है कि सब कुछ बदलना चाहिए।

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री ने हाल ही में दिये एक साक्षात्कार में कहा कि वे महाराष्ट्र के स्थानीय सरकारी स्कूल में पढ़कर आगे बढ़े हैं, इसलिये वे इन समस्याओं से परिचित हैं। वे सबको शिक्षा और अच्छी शिक्षा के ध्येय को लेकर काम कर रहे हैं। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के मौजूदा ढाँचे को लेकर वे संतुष्ट नहीं हैं और कहते हैं कि जल्द ही इसमें बदलाव किया जाएगा। जावड़ेकर ने कहा कि उन तकनीकी संस्थानों के लिए एक नियामक संस्था के गठन की जरूरत है जिनके छात्रों को समुचित प्रशिक्षण के अभाव में रोजगार नहीं मिल पाता है।

प्रस्तुत है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश–

प्रश्न : ऐसा लग रहा है कि अंग्रेजी सभी भारतीय भाषाओं पर हावी हो रही है। ऐसे में इनके विकास के लिए क्या किया जा रहा है?

उत्तर : आप सही कह रहे हैं। जो अंग्रेज नहीं कर पाए, वह हमारे लोगों ने कर दिया। पिछले 70 वर्षों में यह साबित कर दिया गया कि अंग्रेजी का कोई विकल्प नहीं। इसके बिना कोई काम नहीं हो सकता। हम तो सभी भाषाओं को प्यार करते हैं। लेकिन जब ऐसा मान लिया जाए कि अंग्रेजी ही सब कुछ कर सकती है तो चिंता की बात होती है। संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है और अंग्रेजी को लिंक भाषा के तौर पर मान्यता है।

इसलिए हमने स्पष्ट कर दिया है कि संविधान की इसी भावना के तहत काम किया जाए। तीन भाषा का जो फार्मूला रहा है, उसमें भी हमने खास तौर पर भारतीय भाषाओं को रखने पर जोर दिया है। हालांकि यह छात्र पर निर्भर करेगा कि वह किस भाषा को चुनेगा। इसमें उस पर कोई दबाव नहीं होगा।

प्रश्न : शिक्षा एक बुनियादी मुद्दा है। क्या सर्वदलीय सम्मति से राष्ट्रीय नीति नहीं बनाई जानी चाहिए जो पूरे देश के लिए प्रभावी हो?

उत्तर : यह तो मैंने किया है। नई शिक्षा नीति को लेकर सभी दलों को चिट्ठी लिखकर सुझाव मंगाए गए हैं। एक बैठक बुलाई गई, जिसमें 52-55 सांसदों ने हिस्सा लिया। राज्यसभा में भी इस पर चर्चा की गई। अब जल्द ही हम राष्ट्रीय शिक्षा

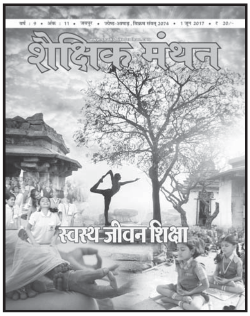

अभिभावक भी अपने बच्चों का निजी स्कूल में ही दाखिला करवाना चाहते हैं। इसके पीछे दो वजह हैं, पहली धारणा और दूसरी लोगों की इच्छा। इसको बदलना होगा। यह तो माता-पिता को देखना होगा। मैं तो कह रहा हूँ कि हमें तीन भ्रम तोड़ने होंगे। तीन भ्रम बहुत व्यापक रूप से लोगों पर छाए हुए हैं- पहला भ्रम है कि महँगी शिक्षा ही अच्छी शिक्षा है। इसी तरह दूसरा भ्रम है कि प्राइवेट शिक्षा अच्छी शिक्षा है। लोगों में तीसरी गलतफहमी यह है कि अंग्रेजी माध्यम से ही जीवन चल सकता है। ये तीनों बातें पूरी तरह गलत हैं।

नीति लाने वाले हैं।

प्रश्न : पाठ्यक्रम को लेकर अक्सर विवाद होता रहता है। क्या नई शिक्षा नीति के बाद यह माना जा सकता है कि इस पर कोई विवाद नहीं होगा?

उत्तर : हमें तो यही उम्मीद है। नई शिक्षा नीति के बारे में मैं पहले से ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा। इसके लिए थोड़ा इंतजार कीजिए। जल्द ही यह आपके सामने होगी।

प्रश्न : निजी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को सुनिश्चित करने के लिए क्या सरकार कुछ कर रही है?

उत्तर : आज देश में स्कूलों में पहली से 12वीं तक 23 करोड़ छात्र हैं। इनमें से 13 करोड़ आज भी सरकारी सेक्टर में हैं। पिछले दिनों सरकारी स्कूलों में दाखिले में गिरावट आने लगी है। सरकारी स्कूलों में प्रवेश लेने वाले छात्रों में चार प्रतिशत कमी आ रही है, जबकि निजी स्कूलों में आठ प्रतिशत की बढ़ोतरी हो रही है। मैं उसमें सुधार करूँगा, तो 80 प्रतिशत स्कूली बच्चे सरकारी स्कूलों में आएंगे। निम्न मध्य वर्ग के अभिभावक भी अपने बच्चों का निजी स्कूल में ही दाखिला करवाना चाहते हैं।

इसके पीछे दो वजह हैं, पहली धारणा और दूसरी लोगों की इच्छा। इसको बदलना होगा। यह तो माता-पिता को देखना होगा। मैं तो कह रहा हूँ कि हमें तीन भ्रम तोड़ने होंगे। तीन भ्रम बहुत व्यापक रूप से लोगों पर छाए हुए हैं- पहला भ्रम है कि महँगी शिक्षा ही अच्छी शिक्षा है। इसी तरह दूसरा भ्रम है कि प्राइवेट शिक्षा अच्छी शिक्षा है। लोगों में तीसरी गलतफहमी यह है कि अंग्रेजी माध्यम से ही जीवन चल सकता है। ये तीनों बातें पूरी तरह गलत हैं।

प्रश्न : सरकार शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में इतने काम का दावा कर रही है, फिर क्या कारण है कि हम ताजा ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स में भी पहले के मुकाबले और नीचे हो गए?

उत्तर : एक-आध नंबर आगे-पीछे होना बड़ी बात नहीं है। आर्थिक क्षेत्र में हम तेजी से काफी आगे बढ़ गए। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में जो बदलाव हो रहे हैं, उनके परिणाम आने में पाँच-दस साल का समय लगता है। इंडेक्स में बदलाव में समय लगता है। ऐसा नहीं है कि स्विच ऑन किया और लाइट आ गई। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बदलाव में समय लगता है।

प्रश्न : निजी शिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता को सुनिश्चित करने का क्या प्रयास सरकार कर रही है?

उत्तर : छात्र लगातार इस लिहाज से शक्ति संपन्न हो रहे हैं। पिछले कुछ समय में छात्रों ने तीन सौ इंजीनीयरिंग कॉलेज बंद करवा दिए। इसी तरह 125 कॉलेजों ने अपना संचालन बंद करने की इस साल भी इजाजत मांगी है, उसकी इजाजत हमने दी है। मैं अगर बंद करता तो आंदोलन होता।

लेकिन ये तो छात्रों ने बंद कर दिए। क्योंकि आज उन्हें काफी जानकारी मिल जाती है, वे प्रवेश लेने से पहले ही देख लेते हैं कि इसकी फैकल्टी कैसी है, सुविधा कैसी है, प्लेसमेंट कैसा है। छात्र पहले वेबसाइट पर जाते हैं। तकनीक ने उन्हें बहुत सक्षम बना दिया है। इसलिए अच्छे ही आगे बढ़ेंगे और जो खराब हैं, उन्हें भुगतना पड़ेगा।

प्रश्न : शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने की बात सरकार कर रही है। लेकिन इसके लिए आवश्यक अध्यापकों की भारी कमी है। फिर गुणवत्ता कैसे बढ़ेगी?

उत्तर : देश में शिक्षकों की उतनी कमी नहीं है। समस्या यह है कि बड़े शहरों में शिक्षकों की संख्या जरूरत से ज्यादा है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में एकल शिक्षक वाले स्कूल चल रहे हैं।

अब हम नई पॉलिसी ला रहे हैं जिसमें हर शिक्षक को दस साल के लिए ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ाना अनिवार्य होगा।

प्रश्न: आइआइटी और आइआइएम जैसे क्रीम संस्थानों में भी तीस प्रतिशत शिक्षकों के पद खाली हैं। ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के टैलेंट को पैदा करने में कैसे सफलता मिलेगी?

उत्तर : आइआइटी में शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए हमने प्रयास शुरू कर दिये हैं। अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में प्रतिभाशाली शोधार्थियों को आकर्षित करने के लिए हम उन्हीं के कैंपस में भर्ती अभियान चलाएँगे।

प्रश्न : विभिन्न सर्वे बताते हैं कि इंजीनीयरिंग कॉलेज में अधिकांश ऐसा प्रशिक्षण नहीं दे रहे जिससे छात्रों को रोजगार मिल सके। ऐसे में कोई नियामक बनाने पर आप काम कर रहे हैं?

उत्तर : यह बहुत अच्छा सुझाव है। इस पर मंत्रालय काम करेगा।

प्रश्न : यूपी-बिहार में निजी डिग्री कालेज हैं, जहाँ नकल की सुविधा नहीं होती है, वहाँ दाखिले नहीं होते हैं। इसे लेकर सरकार की क्या योजना है?

उत्तर : इस पर बिल्कुल कदम उठाएँगे और बहुत सख्ती से उठाएँगे।

प्रश्न : महँगी शिक्षा के दायरे में आने वाले ज्यादातर स्कूल सीबीएसई से जुड़े हैं, जो आपके मंत्रालय के दायरे में आते हैं। ऐसे में आप क्या कदम उठाएँगे?

उत्तर : पहले तो सीबीएसई सिर्फ दिल्ली के लिए था। आज पूरे देश में हो गया। यह परीक्षा का बोर्ड था और आज यह मान्यता दे रहा है। इसके लिए कोई प्रावधान ही नहीं है। आपके पास निरीक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है और राज्य वाले भी जा नहीं सकते। इसलिए अब इसमें हम व्यापक बदलाव करने जा रहे हैं।

प्रश्न : प्राइवेट स्कूलों की फीस को लेकर मनमानी पर कोई अंकुश क्यों नहीं लगाया जा रहा? जबकि इनमें से अधिकांश सीबीएसई के हैं और इन पर अंकुश लगाने में कोई कानूनी अड़चन नहीं है।

उत्तर : प्राइवेट स्कूलों की अपनी

लागत है। आज सरकार का शिक्षा पर खर्च 18 हजार करोड़ रुपये आता है। मतलब सालाना 18 हजार रुपये प्रति छात्र। इस तरह यह डेढ़ हजार रुपये प्रति माह प्रति बच्चा है। सीबीएसई में फीस को लेकर सिर्फ एक ही प्रावधान है। इसमें कहा गया है कि स्कूल रीजनेबल फीस लेंगे। इसलिए इसमें ज्यादा स्पष्टता नहीं है। उधर, आईसीएसई बोर्ड है। मुझे एक साल हो गया मंत्रालय में लेकिन आज तक मैं नहीं जानता कि इस बोर्ड में कौन लोग हैं। यह बात जरूर है कि राज्यों में इस लिहाज से कोशिश शुरू हो गई है। गुजरात ने इस संबंध में कानून बनाया है। इसी तरह दूसरे राज्य भी इस संबंध में पहल करने लगे हैं। यह राज्यों का अधिकार है।

प्रश्न : आप कम से कम भाजपा शासित दूसरे राज्यों को तो कह सकते हैं कि इस तरह का कानून बनाएँ। यह मुद्दा पार्टी का नहीं है।

उत्तर : यह राज्यों का काम है और वे कर रहे हैं।

प्रश्न : वसंत विहार गैंगरेप के बाद नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने की बात उठी थी। इसे लेकर क्या हो रहा है?

उत्तर : यह बिल्कुल सही बात आपने कही है। हमारा शिक्षण मंथन चल रहा है। इसके तहत हम देश भर में विमर्श कर रहे हैं। एक समाचार समूह की ओर से इस संबंध में किया जाने वाला संस्कारशाला कार्यक्रम भी काफी प्रभावी है। इसमें चार चीजों को शामिल करने की जरूरत है। शारीरिक मेहनत के तहत खेल जरूरी है। वैसे ही सत्य, अहिंसा और मानवता की शिक्षा में काफी अहमियत है।

प्रश्न : तीन साल में व्यापक स्तर पर इस सरकार में क्या बदला?

उत्तर : दूसरी सरकारों में तीन साल में एंटी इंकम्बैंसी दिखने लगती है। जबकि हमारी सरकार में अब उल्टा प्रो इंकम्बैंसी दिखने लगी है।❑

परीक्षा और पैमाने

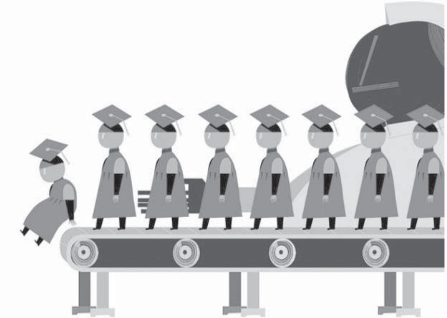

इस बार केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की बारहवीं की परीक्षा के नतीजों की सबसे बड़ी खूबी यह रही कि पंद्रह साल बाद कला वर्ग के किसी परीक्षार्थी ने पूरे देश में अव्वल मुकाम हासिल किया। इसके अलावा उत्तीर्ण प्रतिशत में इस बार भी लड़कियों ने बाजी मारी। आमतौर पर विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के परीक्षार्थी अव्वल आते रहे हैं। लेकिन इस बार कला वर्ग की छात्रा रक्षा गोपाल ने 99.6 प्रतिशत अंकों के साथ सर्वोच्च स्थान हासिल कर विषयों की कमतरी-बेहतरी को लेकर बनी पुरानी धारणा को तोड़ दिया। रक्षा ने राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और अंग्रेजी में शत-प्रतिशत अंक अर्जित किए। रक्षा ने कहा है कि वे राजनीति शास्त्र लेकर आगे पढ़ना चाहती हैं और देश में रह कर ही काम करना पसंद करेंगी। चंडीगढ़ की विज्ञान वर्ग की भूमि सावंत डे 99.4 प्रतिशत अंक पाकर दूसरे स्थान पर रहीं, जबकि इसी शहर की कामर्स की छात्रा मन्नत लूथरा और छात्र आदित्य जैन बराबर-बराबर यानी 99.2 प्रतिशत अंक पाकर तीसरे स्थान पर रहे। इन विद्यार्थियों की यह सलाह गौरतलब है कि छात्र अगर सोशल मीडिया के पचड़ों से दूर ही रहें तो अच्छा।

यों पिछले साल की तुलना में परिणाम एक प्रतिशत कम आया है, लेकिन उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या बढ़ी है। 87.5 प्रतिशत लड़कियाँ और 78 प्रतिशत लड़के ही इस बार उत्तीर्ण हुए, जबकि 2016 में 88.58 प्रतिशत लड़कियाँ और 78.85 प्रतिशत लड़के उत्तीर्ण हुए थे। लेकिन इस बार 95 प्रतिशत से ज्यादा अंक पाने वालों की संख्या बढ़ी है। देश में कुछ बरसों से सरकारी विद्यालयों को कोसने और निजी क्षेत्र के विद्यालयों के गुण गाने का एक चलन चला हुआ है। मगर सरकारी स्कूलों का नतीजा निजी स्कूलों की तुलना में सात-आठ प्रतिशत बेहतर आया। जहाँ निजी स्कूलों का उत्तीर्ण प्रतिशत 82.29 प्रतिशत रहा, वहीं निजी स्कूल 79.27 प्रतिशत पर ही अटक गए। सबसे ज्यादा उत्तीर्ण प्रतिशत जवाहर नवोदय विद्यालयों का रहा। जिस प्रकार के नतीजे आए हैं उससे एक अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि दिल्ली समेत दूसरे विश्वविद्यालयों में प्रवेश की मारामारी तो रहेगी, कटऑफ प्रतिशत बढ़ सकता है, क्योंकि तिरेपन हजार से ज्यादा छात्रों को नब्बे प्रतिशत से ज्यादा अंक मिले हैं। स्वाभाविक है कि सभी को ऊँची शिक्षा के लिए प्रवेश चाहिए होगा।

इससे पहले कामर्स विषय में प्रवेश लेने की लालसा ज्यादा रहती थी, क्योंकि उदारीकरण के दौर में यह विषय कॅरियर के लिहाज से ज्यादा उपयोगी व ज्यादा संभावनापूर्ण माना जाता है। लेकिन इस बार कला वर्ग के विषयों में भी प्रतिद्वंद्विता बढ़ने के आसार हैं। संघ लोक सेवा आयोग और प्रांतीय लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में बैठने और नौकरशाही का हिस्सा बनने की ललक भी इधर मध्यवर्ग में बढ़ी है। जो विद्यार्थी किसी कारणवश फेल हो जाते हैं वे और उनके परिवार मायूसी तथा कई बार निरर्थकता-बोध से घिर जाते हैं। लेकिन किसी एक वर्ष की परीक्षा ही जीवन का सबकुछ नहीं है। मानव संसाधन विकास मंत्री ने भी सफल न हो पाने वाले विद्यार्थियों को सलाह दी है कि वे हिम्मत न हारें। अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए बोर्ड ने मनोवैज्ञानिक काउंसिलिंग के लिए टोल फ्री नंबर भी जारी किए हैं और इसके लिए पाँच दर्जन से अधिक काउंसलर भी नियुक्त किए हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि जो इस बार नाकाम रह गए हैं वे अगली बार कामयाब होंगे।❑

The Economy at Three

❑ **Arvind Panagariya**

Few disagree that when the present government took office three years back, the economy had been in great difficulty. Going by the new GDP series, growth had fallen to 5.6% in 2012-13 and 6.6% in 2013-14 compared to 8.3% during the preceding nine years. Inflation and the current account deficit were high. There was deep paralysis in decision-making, infrastructure projects were stuck in all areas, corruption scandals had been breaking out all around and investors were terrified of retrospective taxation.

Today the decision making process has been unblocked, infrastructure building has gained momentum, corruption has been reined in and fears associated with retrospective taxation have been assuaged. As a consequence, growth has been restored. The economy grew 7.2% during 2014-15, 7.9% during 2015-16 and 7.1% during 2016-17. Alongside, inflation has dropped from 8% during the first four months of 2014 to below 4% currently. Foreign direct investment during the three financial years of the government has summed to $156 billion with the flow during 2016-17 alone being a record $56 billion.

These indicators do not reflect the full potential of the economy created by the policy initiatives of the government. There are lags between the introduction of new policies and realisation of their full impact. It was many years of reforms, first under Prime Minister Narasimha Rao and then under Prime Minister Atal Bihari Vajpayee, that eventually translated into the 8.3% annual growth for nine years beginning in 2003-04.

On macroeconomic front, the government has steadily brought fiscal deficit down from 4.5% in 2013-

Finally, in the true spirit of federalism, states have emerged as equal partners of the Centre in development. Some states have reformed central laws in areas of labour and land acquisition on which the Centre has had difficulty moving ahead. Others have swiftly moved to reform tenancy laws through modern land leasing laws. Yet others have pioneered the spread of digitisation and e-mandis. Nearly all are experimenting with new ways to rejuvenate agriculture and vigorously promoting the Swachh Bharat Mission.

14 to 3.5% in 2016-17 and has adopted the target of 3.2% in 2017-18 and 3% subsequently. It has also introduced inflation targeting, which has been central to holding down inflation. The exchange rate has been managed prudently. In 2013, in an episode that has come to be called "taper tantrum", rupee had massively depreciated just at the possibility of an interest-rate hike by the Federal Reserve of the United States. In contrast, it has been entirely unscathed recently despite substantial actual interest rate increases by the Fed.

A key focus area of the government has been governance. The list of measures includes the end to bureaucratic paralysis, streamlining of environmental clearances, improving the ease of doing business, self-certification of true copies of diplomas and degrees, repeal of 1,175 redundant laws, close monitoring of projects, ranking of states in health, education and water, end of plan and non-plan distinction in the budget, merging of the railway and national budget and advancing of date of budget presentation to cut delays in disbursement of funds to ministries and states. During the three years, there has not been a single allegation of high-level corruption.

Several key reforms have been introduced through new laws. Early legislations in this category included those relating to the auctions of coal and mineral mines. Later on came big-ticket items such as the Aadhaar Act, Insolvency and Bankruptcy Act and various Goods and Services Tax (GST) acts. The government has also moved steadily ahead on the foreign direct investment (FDI) front opening defence to FDI, raising the FDI cap on insurance to 49%, and permitting 100% FDI in marketing food products.

Closure of sick public sector units (PSUs) and privatisation of healthier ones that do not serve a public purpose have returned to the active policy agenda of the government. Surprising many sceptics, Cabinet has already approved the plans for the closure of nearly a dozen sick PSUs. Privatisation has not moved at a commensurate pace but it too has made progress with the Cabinet giving a go ahead on 20 PSUs. The government is also proceeding with the listing of currently unlisted PSUs in a time-bound manner.

Rural development and social spending have acquired new vigour with empowerment replacing entitlement as the underlying philosophy. Rural electrification has greatly accelerated with every village set to receive electricity by May 1, 2018. Per-day rural road construction has accelerated to 133 km during 2016-17 compared with 73 km during 2011-14. Within a short time, two crore below poverty line (BPL) rural households have received LPG.

Housing for all initiative has received huge impetus with 10 million new rural houses to be constructed by 2019 in rural areas alone. Use of Aadhaar verification has led to the elimination of ghost and multiple accounts in the Public Distribution System (PDS), LPG distribution and MGNREGA wage lists. Asset construction under MGNREGA has significantly improved.

Finally, in the true spirit of federalism, states have emerged as equal partners of the Centre in development. Some states have reformed central laws in areas of labour and land acquisition on which the Centre has had difficulty moving ahead. Others have swiftly moved to reform tenancy laws through modern land leasing laws. Yet others have pioneered the spread of digitisation and e-mandis. Nearly all are experimenting with new ways to rejuvenate agriculture and vigorously promoting the Swachh Bharat Mission.

In sum, while many problems remain to be solved in a complex and vast economy such as ours, today, there are good reasons to be optimistic that in the years ahead India will emerge as the third largest economy in the world. When a courageous prime minister and numerous imaginative and hard-working chief ministers work together to take the economy forward, success cannot be far from the country's grasp. ❑

(Vice- Chairman, Niti Ayog)

ABRSM Delegation Discussed Verious Issues with Hon'ble HRD Minister

Akhil Bhartiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh request your honour to consider the following issues and take necessary action to resolve them in the interest of education.

1. Anomalies of Sixth Pay Commission be removed.

The Sixth Pay Commission recommendations were required to be implemented uniformly throughout the country, but in few states it is not implemented accordingly. In School, Colleges and universities where it is implemented, number of anomalies remains unaddressed such as the junior teacher is getting higher salary than senior teacher. This is very important due to the fact that in the presence of these anomalies, teachers will not get accurate fixation of their salary.

2. Recommendation of VII Pay Commission be implemented uniformly throughout the country.

The ministry of Human Resources Development must ensure that all recommendation of the Pay commission must be implemented uniformly by all states of Union of India. There are several an omalies in pay scales and service conditions of teachers working in various states. Uniform pay scale policy needs to be implemented across the country on the principle of equal salary to equal work. To implement these policies uniformly by the State Govts. the central government may make provision of special grants to the State Governments.

3. The pre 1st January 2004 pension scheme be revived and extend to all Schools, Colleges and Universities.

New pension scheme is considered a negative step in a welfare state. In its place pre 1st January 2004 pension scheme be revived to all the teachers to promote their welfare.

4. The age of superannuation be made 65 years across the Country.

Various States of our country are having different age of retirement for school, college and university teachers. It is 60 years in Rajasthan, 55 years in Kerla, 58 years in Orrisa, 62 in UP, 65 years in Bihar and 65 years in central universities. For overcoming the problem of less number of teachers, to take advantage of their experience and to make education career attractive the retirement age of teachers be made 65 years uniformly across the country. In the light of consistent increase in life expectancy and increasing age of entry in education service it will be judicious to make 65 years as age of retirement.

5. Ensure regular and permanent appointment of teaching positions and sound training to the teachers be ensured.

Lakhs of teaching positions of primary, secondary, college and university teachers are lying vacant in Central govt. and State Govts. The governments with the aim of reducing financial burden are making temporary arrangements like vidyarthi mitra, Para teachers, Contract teachers, Guest Lecturer, Prabodhak, Shiksha Mitra, part-time teachers etc. It is causing incalculable loss to the quality of education and weakening the very foundation of the whole structure of education. Regular and permanent appointment of teachers is required in place of temporary arrangement. For the improvement of quality of education at all levels the arrangement of teachers training must be such which facilitate a teacher to contribute positively to the overall development of students and refined them through latest knowledge.

6. The nomenclatures of various teaching positions in colleges be made uniform throughout the country as Assistant Professors, Associate Professors and Professors on the lines of UGC recommendations.

UGC has recommended uniform nomenclatures of teaching positions throughout the country with the objective to create uniformity amongst all the teachers working in higher education with various names. The change in nomenclature is not having any financial burden on the Govts. and will help in improving quality of education. By giving the position of Assistant Professor, Associate Professors and professors in the colleges, it will do away illusion of positions and create uniformity in the whole country.

7. Ensure benefits of career advancement scheme (CAS) to the university and college teachers :

The CAS stipulating the new scheme of performance based appraisal system (PBAS) through Academic Performance Indicators (API) rules to be revisited. This scheme is not rational and full of confusion which is evidenced by the fact that UGC has itself amended it four times. This scheme must be replaced immediately by a scheme which is practical and quality oriented.

8. The tenure of the college principal in universities and colleges be not limited to 05 years but continue till the attainment of the age of superannuation.

The UGC has limited the tenure of college principal for 05 years. This is neither judicious nor practical. The post of Principal is a selection post and it has no lien on previous post. After the Completion of 5 years their futures should not remain uncertain and for this it would be judicious to keep their tenure till they attain the age of superannuation.

9. Exemption form Ph.D. Courses work to the working teachers :

The teachers working in the colleges and universities be exempted from the Ph.D. course work or they should be granted full pay leave with a view to promote research work.

10. Treasury payment facility be provided to the teachers of aided colleges and schools.

There are several anomalies in the payment of salaries to the teachers of aided schools and colleges. This has resulted the exploitation of teachers by these educational institutions. To ensure full and regular payment of salaries to all the teachers treasury payment facility will be the better option.

11. The teachers of Schools, Colleges and Universities be provided free Health Card facility to enable them proper medical treatment and its proper implementation be ensured.

Providing proper medical facilities will increase the capability of teachers, therefore, proper and practically applicable system of medical facilities he provided to all the teachers.

12. Counting of past service for career progression :

In order to solve the hardships of teachers who have put in long years of temporary or adhoc services, their past service be counted for the purpose of career progression. Such provision be made in the UGC regulations itself.

13. Parity of other academic staff with the teachers :

Parity of librarians and physical instructors of the college, research associates and research scientists, systems analysts and systems programmers with the teachers be maintained in terms of pay structures, service conditions and promotions avenues etc.

Issues Relating to Education.

14. The present education system be restructured by incorporating National identity, Indian values, human and character building, social concern, original thinking, research and innovation.

Present day education system is becoming limited to dissemination of information only. Due to the neglect of main objective of human and character building of education, the education has been marginalized. It is losing its ability of creating curiosity, power of review, criticism, developing vision, original thinking, new initiatives, research, innovations, building national identity, cultural values and social concern. For men making education system need to be restructured by incorporating national identity, Indian values, social concern, original thinking, research and innovations.

15. Autonomous and independent Regulatory Commission Consisting of educationists be established at National and State levels to regulate and control the education system.

In past years private educational institutions have mushroomed. Taking advantage of the weak administrative system and rules innumerable schools, colleges and universities have made education a good business of amassing wealth. These educational institutions have no serious concern for the education and the parents and students are totally distress and helpless. The setting up of educational institutions, their administration, fee structure, decision on curriculum, evaluation system, selecting the faculty, pay scales etc is either controlled by central and state Govts. or under the sole control of private management. To save the education from doom separate independent and autonomous regulatory commission consisting of intellectuals be established by both central and State Governments to regulate and control the whole education system.

16. 10 percent of GDP by the Central Govt. and 30 percent of the State budgets be spent on education so as to make basic amenities like teachers, books, playgrounds, building etc available to the students.

Even after 70 years of attaining independence the education is not finding reasonable number of teachers, books, buildings, play grounds etc. Despite being an emerging economy the central and state Govts. are spending less than 4% of GDP on education. This is depriving thousands of people from the opportunity of gaining knowledge and research and innovations are adversely affected. The quality of education is deteriorating and the position of the students of India who were considered best in the world are ranked amongst the last countries of the world. To improve the present education scenario 10 percent of GDP should be spent on education.

17. Autonomy of education be restored across the country and the participation of teachers in decisions pertaining to education be ensured and political and administrative interference be stopped.

Today the political and administrative interference in education is very high and all educational decisions are having the monopoly of these people. Even the syllabus and teaching material is selected by the Govt. To restore the autonomy of education the political and administrative interference has to be stopped. In all educational decisions the active participation of teachers has to be ensured and democratic pattern of education system needs to be accepted.

18. The provisions of Right to Free and Compulsory Education Act be made consistent and practical and to ensure its proper implementation needed funds and facilities be provided.

We welcome the Right to free and Compulsory Education Act but certain provisions of the Act need to be revisited and made consistent and practically applicable. The decision of not declaring any student fail up to class VIII, fulfilling many formalities under Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) system by the teachers, severe constraints of basic amenities for its proper implementation need to be considered holistically. To make this law consistent and practically applicable few provisions of this Act need to be reviewed.

19. The primary education be imparted in mother language.

The child learns in its own mother language easily and his skill of creativity increases, therefore, primary education be imparted in mother language only.

20. The commercialisation of education be controlled.

The negative result of commercialization of education is very much seen in these days. Today the educational institutions are virtually becoming the institutions of distributing certificates and degrees. The system of regulation and control of such institution may be entrusted to an independent and autonomous regulatory commission consisting of intellectuals.

HRD ministry seeks cabinet nod for 20 world-class institutions

India has taken a firm step towards building 20 world-class educational institutions, which will be termed Institutions of Eminence, with the human resource development ministry moving the proposal to the Union Cabinet for approval. Firmly bearing the stamp of the Prime Minister's Office, this is a new framework to catapult Indian institutions to global recognition by freeing the best of them from the University Grants Commission's restrictive regulatory regime and ushering in an unprecedented level of institutional autonomy. Here are some of the finer details:

WHAT WILL MAKE THEM 'EMINENT'

The UGC (Institutions of Eminence Deemed to be Universities) regulations, 2017 will govern all such institutions that are conferred with this status, ensuring their complete academic, administrative and financial autonomy. These regulations will override all other UGC regulations and free the institutions of UGC's restrictive inspection regime, the regulatory control over fee and curriculum. The institutions will have to achieve a place in the top 500 of any of the global rankings within 10 years of being declared an institution of eminence and eventually reach the top 100 slot

* They will have a teacher:student ratio of 1:20 to begin with and 1:10 in five years, with a student enrolment of 15,000 in 15 years. There will be a good mix of Indian and international faculty, and only those who come with a degree from top 500 institutions in global rankings will be considered eligible foreign faculty.

* The institutions will be free to select students through a merit-based transparent admission process to ensure no meritorious student is turned away for lack of funds. Up to 30% foreign students vis-a-vis the strength of domestic students can be admitted. The institution will be free to decide its fee structure but will have to declare it in a transparent manner. Any reports of capitation fee will be treated as serious violation. An Ombudsman will be set up to cater to student grievances.

* One paper will have to be published per faculty member per year on average in a reputed peer reviewed international journal, with publications included in SCOPUS, Web Science, etc to be counted as a research publication. A world-class library with subscriptions to reputed journals related to courses offered will have to be maintained along with cutting-edge research in frontier areas.

* Along-term lead campus (30 years minimum) with adequate space for expansion.

* While private institutions will not get any government funding they will be able to access government funds for specific studies and projects they may execute.

* Full freedom to the institution to decide course structure, the credit hours needed for a degree, fixing of curriculum and syllabus and up to 20% online courses as part of its programmes and fully online certificate courses. Full freedom to hire faculty, even industry personnel as faculty and choose any career progression scheme, salary structure for its faculty. None of its academic collaborations will need government approval unless they are with countries on the foreign ministry's or home ministry's 'negative list'.

WHO IS ELIGIBLE

* Ten government run and ten private institutions will be conferred this status, with Rs 10,000 crore funding earmarked for the former. * While a government-owned institution will apply to HRD ministry for the special status, a private deemed to be university or private state university will have to be backed by a sponsoring organisation with a total net worth of Rs 5,000 crore and credible members, an identified first chancellor and vice chancellor, and a detailed 15-year vision plan besides a five-year rolling implementation plan.

* The governance structure of the institution and its sponsoring organisation will be different.

WHO WILL SELECT

* An empowered expert committee with three to five eminent persons appointed for three years with the final approval of the appointments committee of the Cabinet headed by the PM will select the 20 institutes. The EEC will recommend the names to the UGC, which will forward its decision to the HRD ministry that will issue a letter of intent to such institutions and decide on the final conferment of the status after a memorandum of understanding. * EEC will monitor and review the institutions of eminence to ensure quality, decide on appeals, changes in transfer of sponsorship and liquidation of corpus fund if necessitated among other things.

ABRSM Delegation Meeting with the Hon'ble Minister of HRD Shri Prakash Javadekar

A four member delegation consisting of Shri Mahendra Kapoor, Shri J.P. Singhal, Dr. Manoj Sinha and Dr. Anurag Mishra met Hon'ble Minister of HRD Shri Prakash Javadekar Ji on 3rd May, 2017 at Delhi. The meeting was held in a very cordial atmosphere. A memorandum of 20 points relating to the problems of education and educators were discussed and on the many issues the Hon'ble minister was very positive. Some of the issues addressed and decided in the meeting were as follows –

1. The Seventh Pay review committee report shall be placed in the Cabinet meeting and is going to be announced very soon.
2. The financial and academic anomalies of 6th Pay review comities will be taken care of.
3. The old pension scheme (Pre-2004 scheme) shall be at least revived to ensure mobility of faculty members between different schools, colleges and universities.
4. Regular appointments of teachers will be their priority and ministry is very particular about this and planning for the same.
5. Age of superannuation shall be 65 years across all academic institutions in India. Ministry will sent advisory to the State Govt. to do the same.
6. API- PBAS system will be reviseted and appropriate measures will be taken to make it reasonable and practical to ensure promotion of teachers.
7. ABRSM delegation has been successful in convincing the ministry to keep the tenure of principals till they attain the age of superannuation and not limited to 5 or 10 years. The Hon'ble Minister was very much positive on this issue. He was in agreement to give lien to the principals.
8. For Ph.D. course work by regular teachers, the course work period of six months will be cover within the study leave period.
9. The Hon'ble minister agreed to initiate the direct debit transfer facilities (DDTF) of salary to the accounts of teachers of aided schools and colleges. This will help in doing away the exploitation of teachers of aided schools and colleges.
10. The ABRSM delegation has very strongly raised the issue of counting of past services, parity of other staff such as Liberian, PTI, RA etc with the teachers, proper facilities of medical treatment. Hon'ble Minister assured the delegation to look into the matters.
11. The ABRSM delegating has also raised the issue of autonomy of education, establishment of autonomous and independent regulatory commission for education, increase in the budget for education, revisit the right to free and compulsory Education Act, do away with commercialisation of education and imparting of primary education in mother language etc. The responce of Hon'ble Minister was positive.

पुण्य स्मरण – वरिष्ठ प्रचारक चन्द्रशेखर जी

वरिष्ठ प्रचारक एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के दक्षिण क्षेत्र के संगठन मंत्री के रूप में लम्बे समय तक संगठन के विचार को विस्तार देने में पुण्य स्मरण लगे संतोष प्रवृत्ति से भरपूर संघ में विविध दायित्वों का निर्वहन कर शिक्षा क्षेत्र में विशेषकर शिक्षकों का मार्गदर्शन कर रहे थे। लगभग एक वर्ष पूर्व स्वास्थ्य बिगड़ने पर उन्हें माता अमृता अस्पताल कोच्चि में भर्ती कर शल्य चिकित्सा की गई। दीर्घ अवधि के पश्चात वे स्वास्थ्य लाभ के लिए कार्यालय रहे। बार–बार चिकित्सा हेतु अस्पताल जाते रहे। 11 मई 2017 को रात्रि 11:45 बजे वे सदा–सदा के लिए हम से दूर परम धाम चले गये। रा. स्व. संघ में विभिन्न दायित्वनिर्वहन के पश्चात विश्व हिन्दू परिषद का दायित्व संभालते रहे। समाज बंधुओं की होम्योपेथिक चिकित्सा करते रहे। विज्ञान व भूगोल क्षेत्र में वे सतत् प्रयोग करते रहे। हँसमुख व मिलनसार व्यक्तित्व के कारण सभी श्रेणी के लोगों के मध्य चर्चित व स्वीकार्य रहे। अपने लेखों के माध्यम से आध्यात्मिक क्षेत्र की विचार पूंजी समाज चरणों में समर्पित करते रहे। महासंघ में वे हमारे पालक की भूमिका निभाते रहे। संत परम्परा के प्रतिनिधि श्री चन्द्रशेखर जी को महासंघ की तरफ से सादर श्रद्धांजलि।

Seminar on 'Need of Reforms in Education Sector' held in Poonch (J&K)

The government of Jammu and Kashmir is committed to bring reforms in education sector and has achieved success in streamlining its derailed system this was stated by Smt Priya Sethi, Minister of State for Education. She was addressing in a Seminar on 'Need of Reforms in Education Sector' at Dakbunglow Poonch.

The Seminar was organized on 21 May, 2017 in poonch by All Jammu, Kashmir and Ladakh Teachers Federation under the Aegis of Akhil Bhartiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh.

She said, "The state government has already initiated various reforms like making Model schools in the state, ICTS labs and in shape of clusterisation etc and such seminars are necessary for the feedback so that the real issues should come out from such seminars"

She announced that Chartered Accountants are being appointed at CEO level for the proper monitoring of the official accounts. She also appreciated the role of Teachers for bringing good academic results in various exams.

Hundreds of Teachers, Masters, Principals and educationists attended the Seminar. Smt Priya Sethi, MOS Education, who was the chief guest on the occasion inaugurated the Seminar by lightening the traditional lamp, Pardeep Sharma, Member Legislative Council was the guest of Honour.

Appreciating the already initiated reforms in the education sector, Speakers highlighted that there was a dire need of overhaul in the department, as the Jammu and Kashmir State is passing through a tough time and teaching community feeling dejected and being avoided by the state government in the formulation of education policies, despite being the most important instrument of the system.

ITIs to be remodelled into formal schools : HRD Ministry

The Industrial Training Institutes (ITIs) which offer skill education will soon be developed into formal schools like those affiliated to CBSE and ICSE to enable the ITI graduates to pursue regular courses in other schools and colleges. A proposal in this regard, which was mooted by the Ministry of Skill Development and Entrepreneurship, has been accepted by the HRD Ministry and is likely to benefit over 2 million students graduating from over 13,000 ITIs every year.

"A separate board on the lines of CBSE and ICSE will be set up which will award certificates at par with those given to students clearing class 10 and 12 from regular boards. This will help ITI graduates to pursue regular courses in other schools and colleges," a senior HRD Ministry official said. Once the proposal is formalised, the National Council for Vocational Training (NCVT) will be authorised to conduct academic examination and certification for class 10 and 12 for the ITI students. "Following consultations with CBSE, UGC, NCERT and state education boards, bodies like UGC and AICTE will be informed that they should instruct all colleges and universities to recognise ITI graduates as class 12 pass outs," the official added.

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ का उद्घाटन

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ, महेन्द्रगढ़ का औपचारिक उद्घाटन दिनांक 1 जून 2017 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के प्रोफेसर अश्विनी महापात्रा द्वारा किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि का परिचय कराते हुए सामाजिक विज्ञान के अधिष्ठाता प्रो. सतीश कुमार ने बताया कि प्रो. महापात्रा जो जेएनयू के मध्य एशिया विभाग के अध्यक्ष है, अपने क्षेत्र में एक लब्ध-प्रतिष्ठित नाम है और अपने विद्यार्थी काल से ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार के पोषक है। उन्हें इस संघ के उद्घाटक के रूप में पाकर हम सभी धन्य हैं। मुख्य अतिथि प्रो. महापात्रा ने संघ के सदस्यों को अराजनैतिक आधार पर निर्मित शिक्षकों की स्वत: स्फूर्त प्रेरणा से गठित संघ बनाने के लिए बधाई दी। संघ के बारे में बताते हुए संघ के अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार राव ने बताया कि हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ की स्थापना का दृष्टि सूत्र राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक और शिक्षक के हित में समाज है। श्री राव ने बताया कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ और संभावनाओं को लेकर 29-30 जुलाई, 2017 को नई दिल्ली में होने वाले सम्मेलन में जिसमें माननीय प्रकाश जावड़ेकर मुख्य अतिथि होंगे, में हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ ओर से दो प्रतिनिधि भाग लेंगे। अध्यक्ष ने यह भी बताया कि शिमला में 27-28 मई 2017 को अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में आम सहमति से संघ को संबद्धता प्रदान कर दी गई। कार्यक्रम में महासचिव डॉ. आशीष कुमार ने सभी सदस्यों का मुख्य अतिथि से परिचय कराया और डॉ. नरेश कुमार, सचिव ने समारोह के सुचारू व्यस्थापन को सुनिश्चित किया। अंत में संघ के संगठन सचिव डॉ. नरेन्द्र परमार ने सभी उपस्थित शिक्षकों का सम्मान और आभार प्रकट किया। सभी शिक्षकों से अधिक से अधिक संख्या में बने हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ की सदस्यता लेने का आह्वान किया। सभा में उपाध्यक्ष डॉ. कश्यप दूबे और डॉ. राजीव कुमार सिंह की भी गरिमामय उपस्थिति रही।

विषय विशेषज्ञों की कार्यशाला बेंगलुरु में सम्पन्न

कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ की ओर से दिनांक 30.04.2017 को विजय टीचर्स कॉलेज, सभा भवन, जयनगर, बेंगलुरु में विषय विशेषज्ञों की कार्यशाला सम्पन्न हुई। सभामंच पर पूज्य श्री कैवल्यानंद स्वामी जी, श्री शिवानंद मठ, घोडगेरि, श्री विश्वेश्वर हेगडे कागेरि (मान्य विधानसभा सदस्य और पूर्व शिक्षण मंत्री) श्री बालकृष्ण भट्ट, पूर्व विधानपरिषद सदस्य, अतिरिक्त महामंत्री अ.भा.रा.शै.संघ, दिल्ली, श्री कैप्टन गणेश कार्णिक, मान्य मुख्य सचेतक, विपक्ष, विधान परिषद एवं क.रा.मा.शि.संघ के मार्गदर्शक, बेंगलूरु, श्री जी. आर. जगदीश, क्षेत्रीय संगठन कार्यदर्शी, विद्याभारती, बेंगलूरु, श्री अरुण शहापुर, विधान परिषद सदस्य, राज्य कार्याध्यक्ष, क.रा.मा.शि.संघ, बेंगलूरु उपस्थित रहे।

श्री अरुण शहापूर ने कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य प्रास्ताविक में सभी को बताया कि पिछले पाठ्यक्रम को देशभर में प्रशंसा मिली है, फिर भी पाठ्यवस्तु का परिवर्तन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य क्या हो सकता है ? परिवर्तन के समय किसी भी शिक्षणतज्ञों के सलाह नहीं ली गई। इसलिए पिछले पाठ्यवस्तु के रचना कार्य में भाग लिए हुए शिक्षा तज्ञों के साथ विचार करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

कर्नाटक के पूर्व शिक्षण मंत्री श्री विश्वेश्वर कागेरि ने उद्घाटन भाषण में पूर्व पाठ्यरचना समिति के मुख्य संयोजक प्रो. जे.एस. मुडंबडित्ताया जी को स्मरण करते हुए मानव जीवन में शिक्षा के महत्त्व पर बताया। एन.सी.एफ. 2005 के बारे में बताया। श्री जी.आर. जगदीश ने शिक्षा के आरंभ के बारे में बताते हुए उपनिषद, कठोपनिषद के बारे में भी बताया। उनका मत था कि पाठ्यपुस्तकों के रचना समय में भारतीयता का चिंतन होना चाहिए।

श्री कैवल्यानंद स्वामी जी ने अपने प्रवचन में शिक्षकों के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि 'जब जब देश संकट में रहा, तब-तब एक शिक्षक ने संकट से उस देश को बचाया है।' शिक्षक बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है। समाज में शिक्षा का महत्त्व बताते हुए कहा कि भारतीयता को बच्चों में पैदा करना हर एक शिक्षक का आद्य कर्तव्य होना जरूरी हो गया है ।

कैप्टन गणेश कार्णिक ने बताया कि राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक की क्या जिम्मेदारी है ? उसे सोचना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट हो तो कार्य सफल होगा। श्री वरदराजु के वंदनार्पण के साथ उद्घाटन सत्र सम्पन्न हुआ।

दूसरे सत्र में विजय टीचर्स कॉलेज की प्राचार्या श्रीमती विजयकुमारी ने बताया कि पूर्व पाठ्यवस्तु के परिवर्तन का उद्देश्य मुख्यत: दो थे। 1. बोध विधान में परिवर्तन 2. जीवन कौशल का निर्माण कराना। लेकिन आज के पाठ्यवस्तु के परिवर्तन का उद्देश्य क्या है? इसके बारे में किसी भी शिक्षक को पता नहीं है। उन्होंने श्री मुडंबडित्ताया जी के साथ जो काम किया उसे याद किया। बाद में विषय तज्ञों ने अपने विचारधारा को सभा के सामने रखा। और सलाह भी दी कि भारतीयता को कक्षा के अंदर बच्चों को कैसे सिखाया जा सकता है।

दिल्ली अध्यापक परिषद प्रदेश कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग सम्पन्न

दिल्ली अध्यापक परिषद का दो दिवसीय कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग 13 व 14 मई 2017 को भुंतर, कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) में संपन्न हुआ।

उद्घाटन सत्र में अभ्यास वर्ग की उपयोगिता पर माननीय महेंद्र कपूर अखिल भारतीय संगठन मंत्री ने चर्चा के माध्यम से कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया कि अपना कौशल विकास, सकारात्मक एवं सृजनात्मक सोच, संगठन का समग्र विचार, अपना आचार-विचार एवं व्यवहार शुद्ध करना, समय समर्पण, परिवार भाव, गुणों को समायोजित करके सभी को साथ लेकर आगे बढ़ना, आदि के लिए अभ्यास की निरंतरता जरूरी है।

चक्रीय बैठकों में कार्यकर्ता व्यवहार एवं कार्यशैली, संगठन का दृढ़ीकरण, संगठन में महिलाओं की सहभागिता तथा संगठन में काम करने के दौरान आने वाली कठिनाइयाँ एवं समाधान विषय पर छोटे-छोटे ग्रुप में चर्चा हुई। इसमें सभी कार्यकर्ताओं ने खुलकर अपने विचार प्रकट किए साथ ही कुछ बिंदुओं पर सामूहिक सहमति बनी।

दिल्ली अध्यापक परिषद के अध्यक्ष श्री जयभगवान गोयल ने परिचय के महत्व तथा उपयोगिता को बताते हुए निकाय अनुसार परिचय सत्र पूर्ण किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली के सह प्रांत प्रचारक श्री जतिन जी ने संघ की विचारधारा से परिचित तथा अपरिचित कार्यकर्ताओं से समाज में संघ की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की। सभी की शंकाओं का समाधान भी किया। संघ समाज में संगठन नहीं, समाज का संगठन है यह विचार सभी को दिया।

श्री जगदीश चौहान (उपाध्यक्ष) ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का शिक्षा में योगदान विषय पर बताया कि अंबेडकर जी के अनुसार शिक्षा से ही ज्ञान का द्वार खुलता है। शिक्षा के माध्यम से ही प्रगति के रास्ते पर अग्रसर हुआ जा सकता है। 'सबकी शिक्षा- सबको शिक्षा' पर जोर दिया।

दायित्व अनुसार बैठकों में अपने दायित्व के बारे में पूर्ण स्पष्टता हुई। साथ ही अपने कार्यों को पहचान कर संगठन को मजबूत बनाने के भी गुर सीखे।

निकाय अनुसार बैठक में मासिक बैठकों का महत्त्व, विद्यालयों में संपर्क का महत्त्व तथा प्रकार समस्याएँ और उनके समाधान पर भी चर्चा हुई।

समापन सत्र में अध्यक्षीय भाषण में श्री जयभगवान गोयल ने सभी का प्रेरणादायी संस्मरणों के द्वारा उत्साहवर्धन किया।

माननीय महेंद्र कपूर ने समापन पर बताया कि हमारा संगठन वैचारिक स्तर पर राष्ट्रवादी विचारधारा का संगठन है। संगठन की पहचान कार्यकर्ताओं से है। इच्छाशक्ति, मनोबल, आत्मविश्वास, समन्वय, समायोजन, नए सदस्यों को जोड़ना, समस्याओं का समाधान, जवाबदेही, सभी को साथ लेकर चलना, नए विषय चुनकर सेमिनार करें, बैठक करें, अपनी कुशलता बढ़ाएँ।

चारों निकायों से कुल 112 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इसमें 16 महिला कार्यकर्ता रहीं।

दिल्ली अध्यापक परिषद के प्रतिनिधिमंडल की उपराज्यपाल से भेंट

दिल्ली अध्यापक परिषद का एक प्रतिनिधिमंडल दिल्ली के समस्त शिक्षकों के विभिन्न माँगों के संदर्भ में उपराज्यपाल दिल्ली श्री अनिल बैजल से मिला। परिषद के अध्यक्ष श्री जयभगवान गोयल ने विस्तार से उप राज्यपाल महोदय के सम्मुख दिल्ली के शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को रखा। सबसे प्रमुख समस्या जिससे कि दिल्ली नगर निगम के शिक्षक पीड़ित हैं उनकी वेतन-भत्तों और एरियर, सेवानिवृति पेंशन तथा विद्यालयों के विभिन्न प्रशासनिक व्ययों से संबंधित विभिन्न भुगतान वर्षों से लंबित होना है। उपराज्यपाल महोदय को विस्तार से बताया गया कि उत्तरी दिल्ली एवं पूर्वी दिल्ली नगर निगम के हज़ारों शिक्षक पिछले कुछ वर्षों से तीन-तीन महीने देरी से वेतन ले रहे हैं। उनके वेतन के अतिरिक्त सारे भुगतान वर्षों से लंबित है। इसके बावजूद वो विद्यालय सबंधी प्रशासनिक व्यय तक अपनी जेब से कर रहे हैं क्योंकि उनकी प्रतिबद्धता और समर्पण उनके छात्रों के लिए है। दिल्ली अध्यापक परिषद् ने आक्रोशित एवं व्यथित शिक्षक समाज का पक्ष पिछले वर्ष माननीय दिल्ली हाईकोर्ट में भी रखा एवं कोर्ट के हस्तक्षेप से न केवल दिल्ली सरकार द्वारा वेतन हेतु धनराशि जारी की गई थी अपितु सभी संबद्ध पक्षों द्वारा जिसमे तीनों निगमों के आयुक्त भी थे द्वारा माननीय न्यायालय को एफिडेविट दे कर भविष्य में भुगतान नियमित करने का भरोसा दिया गया था किन्तु आज फिर शिक्षक समाज एवं शिक्षा विभाग वित्त एवं संसाधनों हेतु संघर्ष कर रहा है। इस अवसर पर परिषद् द्वारा निगम के चार हजार से अधिक शिक्षकों के हस्ताक्षर युक्त वेतन, एरियर, पेंशन एवं प्रशासनिक व्यय न प्राप्त होने का अपना प्रतिवेदन माननीय उपराज्यपाल को सौंप कर उनसे हस्तक्षेप करने का आग्रह किया गया। इसके अतिरिक्त छठे वेतन आयोग की अब तक जारी वेतन विसंगतियों जिनके कारण हजारों सीनियर शिक्षक अपने जूनियर शिक्षकों से कम वेतन ले रहे हैं, के विषय में भी ध्यान आकर्षित किया गया।

चतुर्थ वेतन आयोग की भांति प्राथमिक, टी. जी. टी. एवं पी. जी. टी को 1.01.2006 को दिए जाने वाले न्यूनतम वेतन के 1986 की भांति सीधे आदेश देने हेतु आग्रह किया गया। बारह आकस्मिक अवकाश पुनः बहाल किए जाने एवं TGEIS की कटौती की राशि 60 रूपए किए जाने का भी अनुरोध किया गया जिससे सेवानिवृति के समय शिक्षकों को इसका पूर्ण लाभ मिल सके। सहायता प्राप्त विद्यालयों को सभी सुविधाएँ जैसे - एल. टी. सी. एडवांस, सेमिनार, फाइल ट्रेकिंग सिस्टम और विद्यालय कल्याण समिति जैसी सुविधाएँ भी दी जाएँ। उपराज्यपाल महोदय ने बड़े विस्तार से सभी समस्याओं के तकनीकी, प्रशासनिक एवं मानवीय पहलुओं को सुना-समझा एवं उन पर संभव विमर्श कर सार्थक एवं समयबद्ध समाधान हेतु आश्वासन दिया। प्रतिनिधि मण्डल में दिल्ली अध्यापक परिषद् के महामंत्री रतन लाल शर्मा ,संगठन मंत्री राजेंद्र गोयल, प्रचार मंत्री अजयसिंह के साथ राजकीय निकाय के अध्यक्ष वेदप्रकाश, मंत्री ज्ञानेंद्र सिंह मावी, निगम निकाय के अध्यक्ष सुभाष बघेल, मंत्री दीपक गोस्वामी, सहायता प्राप्त निकाय के अध्यक्ष नरेश चंद शर्मा भी उपस्थित थे।

अ.भा.रा. शैक्षिक महासंघ की माध्यमिक संवर्ग बैठक शिमला में सम्पन्न

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के माध्यमिक संवर्ग की राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक श्रीराम धर्मशाला शिमला में 26 मई, 2017 को राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल, महामंत्री प्रो. जे.पी. सिंघल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर के सानिध्य एवं संवर्ग के उपाध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

संवर्ग के राष्ट्रीय सचिव मोहन पुरोहित ने बताया कि इस बैठक में न्यूनतम अधिगम स्तर एवं माध्यमिक शिक्षा के हित में आवश्यक परिवर्तन के निमित्त व्यापक चर्चा पश्चात् राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर ने पाथेय प्रदान करते हुए बताया कि बैठक में महत्त्वपूर्ण सुझाव आए है इनकी शिक्षक, शिक्षार्थी और राष्ट्र हित में महत्ता को देखते हुए और विचार विमर्श कर एक प्रस्ताव तैयार कर सरकार को भेजना चाहिए। यह भी निर्णय लिया गया कि दिल्ली में 20 अगस्त को संवर्ग के प्रमुख कार्यकर्ता राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर के सानिध्य में बैठक कर एक मॉडल तैयार कर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार को भेजा जाएगा।

इसके अलावा सातवें वेतनमान की स्थिति पर चर्चा हुई तो जानकारी में आया कि अब तक 5 राज्यों में इसे लागू किया है, लेकिन छठे वेतनमान की विसंगतियों का निराकरण नहीं करने से आर्थिक नुकसान हो रहा है। इस कारण यह निर्णय लिया कि भारत सरकार को विसंगतियों के निवारण हेतु ज्ञापन देकर प्रयास किए जाएंगे तथा शेष राज्यों में जहाँ सातवाँ वेतनमान लागू नहीं हुआ है उन राज्यों में शीघ्र लागू हो इस दिशा में राज्य संगठनों के प्रयासों की जानकारी प्राप्त की गई। बैठक में शिक्षक समस्याओं का संकलन किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री श्री जे.पी. सिंघल ने बताया कि संवर्ग के हित मेंऔर अधिक प्रयास किए जाएंगे और अधिकाधिक शिक्षकों के हित निमित्त महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। साथ ही न्यूनतम अधिगम स्तर और माध्यमिक शिक्षा के हित में भारत सरकार को प्रस्ताव बनाकर भेजने के निर्णय को आवश्यक बताया तथा संवर्ग के इस निर्णय पर प्रसन्नता व्यक्त की, क्योंकि संवर्ग के हित में निरन्तर प्रयास को समय की माँग बताया।

गुरु गोविंद सिंह के 350 वें प्रकाश उत्सव पर ‘सवा लाख से एक लडाऊँ’ पुस्तक विमोचन

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ देश भर में के.जी. से पी.जी. तक काम करने वाला अनूठा संगठन हैं। संगठन अपनी स्थापना से ही शैक्षिक गतिविधियों, नवाचारों के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों पर इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करता आया है। इसी श्रृंखला में गुरु गोविंद सिंह के 350 वें प्रकाश उत्सव पर व्याख्यान एवं पुस्तक विमोचन का आयोजन 5 मई 2017 को नारायण सिंह सर्किल, स्थित इन्द्रलोक सभागार में किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार की उच्च शिक्षा मन्त्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा कि ‘‘350 वर्ष पहले गुरु गोविंद सिंह ने कहा कि दीन को पालूं, दुष्ट को मारूं, तभी गुरु गोविंद सिंह कहलाऊँ।’’ उन्होंने पंज प्यारे पर प्रकाश डाला और साहस व प्रेरणा की बात कही जिससे राष्ट्र का निर्माण हो सके।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष स. जसवीर सिंह ने कहा कि कि यह प्रकाश पर्व पूरे विश्व में बड़ी शिद्दत के साथ मनाया जा रहा है। उन्होंने अनेक उदाहरणों से स्पष्ट किया कि गुरु गोविंद सिंह हमारे आदर्श हैं। महाराजा रणजीत सिंह ने गुरु गोविंद सिंह से प्रेरणा लेकर काबुल में ईंट से ईंट बजायी जो हमारे देश से बँट कर गया उस देश की परिस्थितियाँ आज अच्छी नहीं हैं। उन्होंने आज तलवार रूपी संकल्पों की जरूरत बतायी और कहा कि हथियारों से लैस सेना को रोक पाना संभव है लेकिन विचारों को रोक पाना संभव नहीं है। देश एवं धर्म के प्रति प्रतिबद्धता बहुत जरूरी है तभी भारत विश्व गुरु बनेगा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग के अनुसंधान अधिकारी एवं पुस्तक लेखक श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने गुरु गोविंद सिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समाज की विकृतियों को दूर करने के लिए भारतीय समाज को जोड़ने के लिए, एकता के सूत्र में पिरोने एवं छुआछूत जैसी विकृतियों को दूर कर धर्म की स्थापना करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि शांति की स्थापना एक साझी वार्ता से ही संभव है एकात्मकता से ही संभव हैं। व्यक्तिवादी व्यवस्था समाज से समाप्त होनी चाहिए, व्यक्ति निष्ठा की जगह तत्व निष्ठा होनी चाहिए जिससे हिन्दू समाज का सुदृढ़ निर्माण हो सके। उन्होंने कहा कि ‘‘चिड़िया ते में बाज लड़ाउँ, गिद्दों से मैं शेर बनाउँ, सवा लाख से एक लड़ाउँ, तभै गोविंद सिंह नाम कहाउँ।

अध्यक्षता महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने करते हुए ने बताया कि संगठन राष्ट्रीय भाव से कार्य करता हैं और उन्होंने राष्ट्रीयता की बात कही। गुरु गोविंद सिंह के बारे में बताते हुए कहा कि तीन पीढ़ियों की कुर्बानी करने वाला एक मात्र परिवार था। गोविंद राय से गुरु गोविंद सिंह बने।

अतिथियों ने हनुमान सिंह राठौड़ द्वारा लिखित एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा प्रकाशित पुस्तक ‘‘सवा लाख से एक लड़ाऊँ’’ का विमोचन किया।

संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री जे.पी. सिंघल ने संगठन की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संगठन सदा से ऐसे महापुरुषों की जीवनियों के साथ जनजागरण का कार्य करता रहा है। उन्होंने सामाजिक सरोकारों की बात करते हुए राष्ट्र के निर्माण में महापुरुषों के योगदान की बात कही। गुरु गोविंद सिंह एक संत, एक सैनिक, एक कवि, एक योद्धा थे। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर, मदस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी, वीएमओयू के कुलपति प्रो. अशोक शर्मा, पं. दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय सीकर के कुलपति प्रो. बी.एल. शर्मा, म.द.स. विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी.एल. चतुर्वेदी एवं कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहें।

आभार महासंघ के कोषाध्यक्ष बजरंग प्रसाद मजेजी एवं संचालन डॉ. ओम प्रकाश पारीक ने किया।

हिन्दी सेवी जे.पी. सिंघल को राष्ट्रपति ने किया सम्मानित

केंद्रीय हिन्दी संस्थान की अखिल भारतीय हिन्दी सेवी सम्मान योजना के तहत पं. मदनमोहन मालवीय पुरस्कार 30 मई 2017 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह में जगदीश प्रसाद सिंघल को दिया गया। पुरस्कार राशि 5 लाख रुपये, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया।

श्री जे.पी. सिंघल राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे हैं। तीन बार राजस्थान विश्वविद्यालय के सिंडीकेट सदस्य, सरकार के प्रतिनिधि व अग्रवाल कॉलेज के प्राचार्य भी रहे हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के अध्यक्ष भी रह चुके है।

श्री जे.पी. सिंघल की 1979 में हिन्दी भाषा में पहली पुस्तक ‘प्रबन्ध’ का प्रकाशन हुआ। इसी क्रम में हिन्दी भाषा में व्यावसायिक संगठन, औद्योगिक संगठन, विक्रय संवर्द्धन एवं विक्रय प्रबंध, व्यवसाय प्रबंध और प्रबंध की अवधारणाएँ जैसी कुल 17 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा आयोजित अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षणों तथा पुनश्चर्या पाठयक्रमों में अध्यक्ष, विषय विशेषज्ञ एवं कुशल वक्ता के रूप में भागीदारी करते रहे। शिक्षा जगत में प्रसिद्धि के कारण हरिशचन्द्र माथुर राजकीय लोक प्रशासन संस्थान, बीमा शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, बैंक प्रबंधन प्रशिक्षण केन्द्रों, व्यवसायिक संगठनों, रोटरी, लॉयन्स क्लब एवं सामाजिक संस्थानों से जुड़े हैं। शिक्षा के साथ-साथ अनेक सामाजिक संगठनों में भागीदारी रही।

अ.भा. रा. शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी शिमला में सम्पन्न

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की शिमला (हिमाचल प्रदेश) में 27 व 28 मई 2017 को सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने महासंघ द्वारा शिक्षा क्षेत्र के द्वारा किये जाने वाले कार्यों की सराहना की। उन्होंने सरकारी नौकरी करने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारियों को अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में ही अनिवार्य तौर पर पढ़ाने की वकालत की तथा प्राथमिक कक्षा तक शिक्षा मातृभाषा में दी जाये तब ही देश का भला होगा। उन्होंने कहा कि हमने हिमाचल प्रदेश को अपने कार्यकाल में शिक्षा हब बनाने का कार्य किया और महासंघ द्वारा प्रस्तुत माँग पत्र को बहुत हद तक पूरा करने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख प्रो. अनिरुद्ध देशपाण्डे जी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के वैचारिक अधिष्ठान को नष्ट करने के उद्देश्य से गैर राष्ट्रवादी शक्तियाँ उपनिवेशन एवं विषाक्तयुक्त वातावरण उत्पन्न कर राष्ट्र के मानचिन्हों पर चोट कर राष्ट्रीयता को खण्डित करने का प्रयास कर रहे हैं। ये लोग सामाजिकता का मुखौटा लगाकर राजनीतिक विचार की लड़ाई लड़ रहे हैं और ऐसे अनेक लोग हमारे देश की शिक्षण संस्थाओं में है और ये लोग विभेद पैदा करने के दुष्चक्रों को हवा दे रहे हैं। महासंघ से जुड़े हुए शिक्षकों की इस दुष्चक्र को नष्ट करने के लिए बौद्धिक योद्धा बनने एवं बनाने की आवश्यकता है। शिक्षकों को इसके लिए संस्कृति, धर्म एवं राष्ट्रवाद को बढ़ाना होगा, राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत साहित्य की निर्मिती करनी होगी, अनेक परिसंवाद, चर्चा सत्र एवं संगोष्ठियों का आयोजन करना होगा। शिक्षा में उपनिवेशन एवं विषाक्तता को जड़ से समाप्त करने के लिए एक महाअभियान चलाने की आवश्यकता है।

देश भर से आये शिक्षक प्रतिनिधियों ने जहाँ अपने द्वारा सम्पन्न कार्यक्रमों का लेखा-जोखा लिया वहीं आगे सम्पन्न किये जाने वाले कार्यक्रमों की योजना भी बनाई। 29 एवं 30 जुलाई 2017 को दिल्ली में सम्पन्न होने वाले उच्च शिक्षा सम्मेलन की योजना को अन्तिम रूप दिया गया। शिक्षकों की उत्तरदेयता-उच्च शिक्षा का परिदृश्य विषय पर होने वाली संगोष्ठी में देश भर के 500 से अधिक शिक्षाविदों के भाग लेने की सम्भावना है और मा. मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर एवं मानव संसाधन राज्य मंत्री डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय से इस संगोष्ठी के कार्यक्रमों के लिए आमंत्रित किया गया है।

10 सितम्बर 2017 को बेंगलुरु में शिक्षक सम्मान कार्यक्रम सम्पन्न होगा जिसमें शिक्षा क्षेत्र में असाधारण कार्य करने वाले तीन महानुभावों को अखिल भारतीय शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। यह भी निश्चय किया गया कि महासंघ के कार्य-विस्तार योजना के अन्तर्गत पूर्णकालिकों के नाम सूचिबद्ध करने का आह्वान सभी सम्बद्ध संगठनों से किया गया एवं उनकी एक बैठक अगस्त माह में आगरा में आयोजित करने की योजना बनाई गई। शाश्वत जीवन मूल्य-जनजागरण अभियान को नीचे तक ले जाने के लिए सभी ने अपने संकल्प को दोहराया।

शिक्षकों की समस्याओं पर विचार करते हुए सातवें वेतन आयोग के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त की गई। अनेक राज्य सरकारों द्वारा सातवें वेतन आयोग की क्रियान्विती नहीं की गई है, इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से इन राज्य सरकारों पर दबाव बनाया जाये ताकि सम्पूर्ण देश में सातवें वेतन आयोग की सिफारिशों को समान रूप से लागू किया जाय। यह भी निर्णय लिया गया कि केन्द्र सरकार को इन राज्य सरकारों को वेतनमानों को तुरन्त लागू करने के लिए निर्देशित करने का आग्रह किया जाये।

उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए यू.जी.सी. वेतनमानों को तुरन्त लागू करने के लिए केन्द्र सरकार को आग्रह किया गया। 3 मई 2017 को महासंघ के प्रतिनिधि मंडल ने मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर जी से वार्ता करते हुए यह आग्रह किया। आपने हमें इसे जून तक लागू करने के लिए आश्वस्त किया। प्रतिनिधि मण्डल द्वारा 20 सूत्रीय माँग पत्र पर मंत्री महोदय तथा अधिकारियों के समक्ष महासंघ के पक्ष की जानकारी सदस्यों को प्रदान की गई। अनेक विषयों पर मंत्री महोदय द्वारा सकारात्मक निर्णय करने के लिए आश्वस्त किया, जिसकी जानकारी विस्तार से महासंघ के सदस्यों के समक्ष रखी गई।

राज्य का शैक्षिक वातावरण नष्ट हो गया

देशीय अध्यापक परिषद (केरल)

देशीय अध्यापक परिषद (NTU) द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यकर्ताओं के शिविर में पारित किये गये प्रस्ताव में बताया कि सरकार और शासक दल की नाराजगी के जो पात्र बन जाते हैं उनको सरकार बेहरमी से शिकार करती हैं। ऐसे शिकारों के अंतिम उदाहरण है महिला, जो अपने पुत्र की मृत्यु के अपराधी को गिरफ्तार करने के लिए सरकार के खिलाफ लड़ी थी। एरणाकुलम के शिक्षक सदन में हुई दो दिन के कार्यकर्ताओं के शिविर का उद्घाटन माननीय एम. राधाकृष्णन ने किया। 1957 के वाम सरकार शिक्षा के क्षेत्र में स्वीकृत राजनीतिक दृष्टिकोण की महाविपदा केरल राज्य के लोग आज भी झेल रहे हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में आज दिखाई दे रही देश विरुद्ध कार्य इसका प्रमाण है। देशप्रेमी पीढ़ियों की सृष्टि निर्मित करने के लिए शिक्षक सतर्क होना चाहिए।